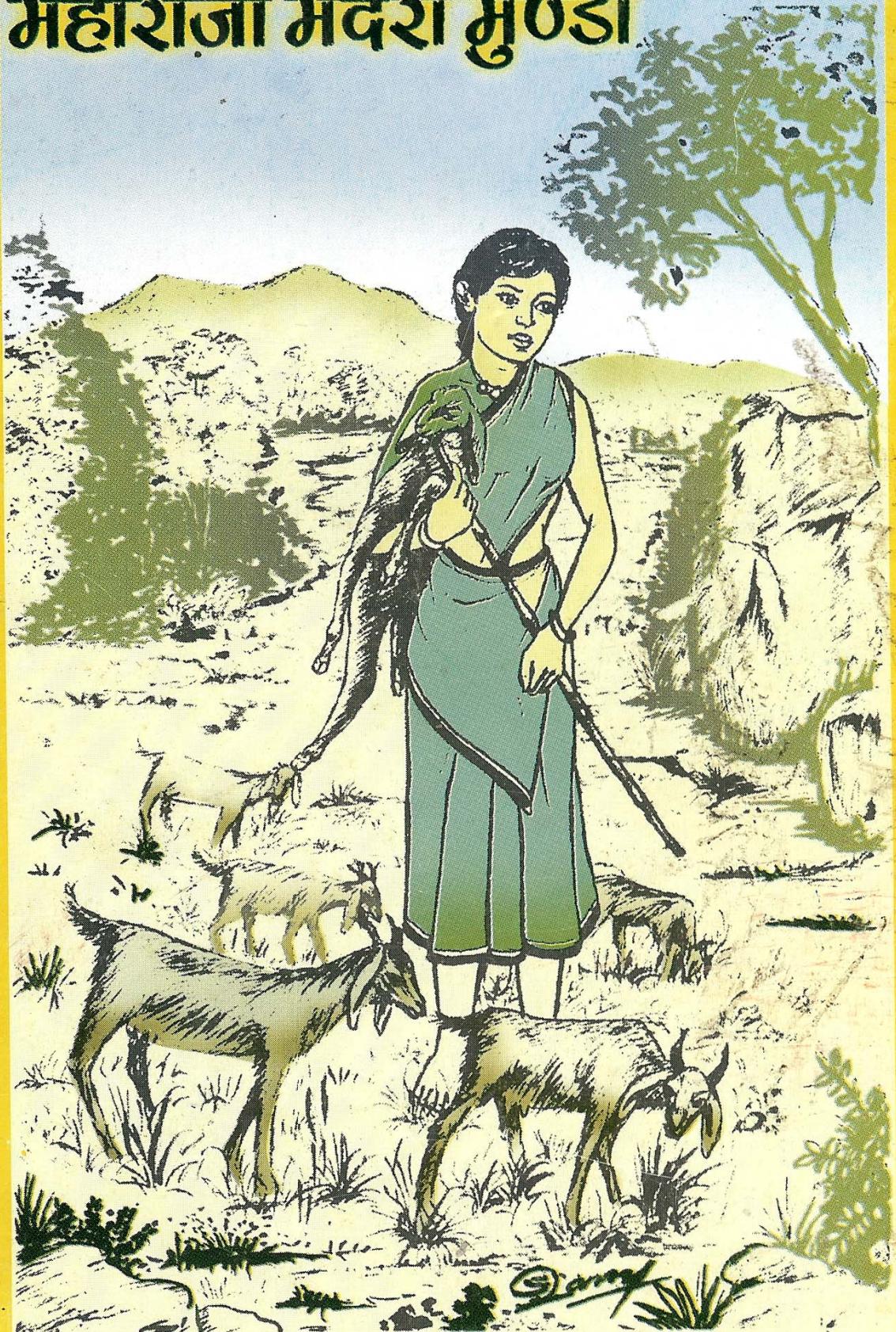


महाराजा मदरा मुहूडा



गिरिधारी राम गाँझू 'गिरिराज'

श्रुतिरंग

नागपुरी तथा हिन्दी में

महाराजा मदरा मुठडा

डॉ० गिरिधारी राम गाँझू 'गिरिराज'



पङ्करा प्रकाशन
नागपुरी प्रचारणी सभा, राँची

2004

© डॉ. गिरिराज राम गौँझु 'गिरिराज'

प्रथम संस्करण : सरहुल 2004

प्रकाशक : पझरा प्रकाशन
नागपुरी प्रचारणी सभा, रांची
वसंत विहार, रोड नं. 4
मकान नं. 406
हरमू कॉलोनी, रांची-12
झारखण्ड, भारत
दूरभाष : 0651-2244145

मुद्रक : प्रिन्ट वेल
एस. एन. गांगुली रोड, राँची
फोन : 2205802, 3103381

आवरण : विश्वनाथ प्रसाद

मूल्य : पचास रुपये

Maharaja Madra Munda
By Dr. Giridhari Ram Gaunjhu 'GiriRaj'

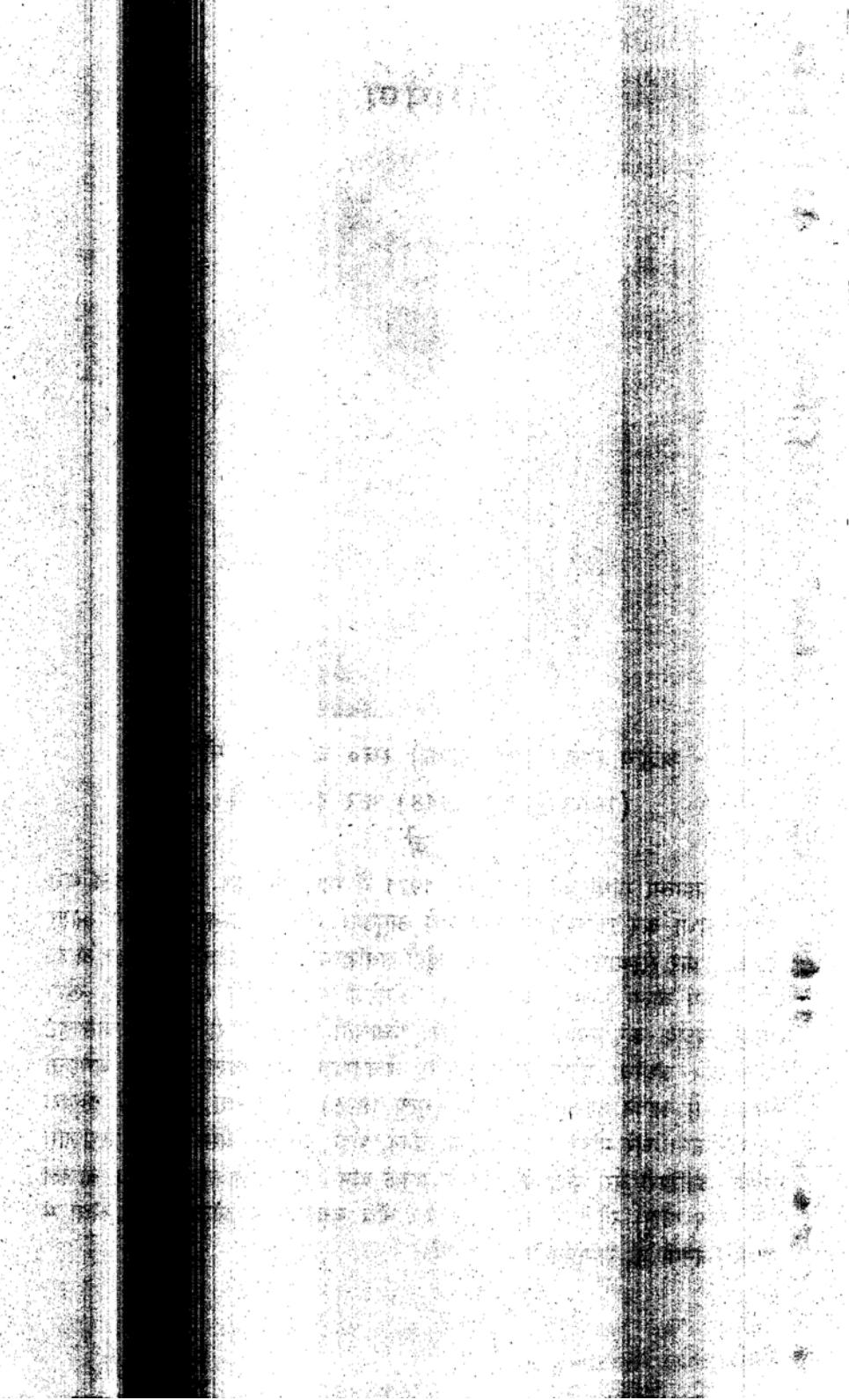
Price Rs. 50.00

समर्पण



श्रद्धेय बाड़ा (पर आजा) स्व० जीबनाथ गाँझू
(1963-सावन 1948) कर इयाइद में।
जे

महात्मा गांधी कर अनुयायी। 1921 में गांधी जी कर खूँटी आवल धरी स्वागत सभा कर व्यवस्थापक मन मधे अगुआ। खूँटी में इस्कूली शिक्षा आउर छान्त्रावास कर संस्थापक मधे में एक। खूँटी सबडिवीजन कर जातीय पंचायत आउर अंतरजातीय बाला पंचायत कर प्रमुख। अंगरेजी सरकार दने से 1937 से खूँटी कछइरी चघेक कर मनाही। नामी बइथ। पंचायती आउर बेमारी कर हर बोलाहट में जाएक। बंधौवा घोड़ा कर सवारी। बेलवादाग कर विशाल अंबा बगइचा लगाएक में आपन आजा पोढ़ा गाँझू (मृत्यु 1896) कर छउवा सहयोगी। अखरा कर सउकिन। घरे मांदर, नगोरा, ढाँक, ढोल, भेइर, ठेचका, बँसरी मनक सराजाम राखेक, आखिरी बेरा पाँडू कर नायक मनके दान। खूँटी इलाका कर नाँव बाजल लोक प्रिय गाँझू। खूँटी में बेलवादाग कर नाँव जगाएक में आउर समाज सेवा में आपन जिनगी के समर्पित कइर दे रहैं।



पुरोवाक्

झारखण्ड पुनर्जागरण अभियान की एक मजबूत कड़ी के रूप में डॉ. गिरिधारी राम गाँझू 'गिरिराज' की नवीनतम श्रुति नाट्य कृति 'महाराजा मदरा मुण्डा' लोक इतिहास की सार्थकता स्थापित करने की एक सफल साहित्यिक चेष्टा है। साहित्य की परिभाषा के साथ लोकहित भी जुड़ा है इसलिए भावी झारखण्डी समाज के पुनर्निर्माण में झारखण्ड के इतिहास पुरुष मदरा मुण्डा का चरित्र संश्लेष एक सम्बल प्रमाणित होगा। इस मदरा मुण्डा चरित्र संश्लेष (Character Complex) में झारखण्डी मूल्यबोध के बे सारे तत्व गुफित हैं जिस आधारशिला पर हम एक आदर्श झारखण्डी समाज के पुनर्निर्माण की संभावना देख सकते हैं :

- समतामूलक समाज व्यवस्था
- सहयोगिता मूलक अर्थव्यवस्था
- सर्वसम्मतिमूलक राजव्यवस्था
- प्रकृतिमूलक धार्मिक आस्थागत अभिव्यक्ति
- समूहमूलक कलाभिव्यक्ति

ऐसी संश्लिष्ट सांस्कृतिक संरचना की दिशा में प्रस्तुत नाट्यकृति में अपेक्षित लेखकीय स्वतंत्रता के प्रयोग द्वारा लेखक ने एक सुखद चमत्कार पैदा किया है जिससे मदरा मुण्डा संबंधी इतिहास को एक नया आयाम मिलता है।

सुधी साहित्य मर्मज्ञों के बीच इस प्रस्तुति का यथोचित सम्मान होगा इसी मंगलकामना के साथ -



दिनांक 01.05.2004

डॉ. रामदयाल मुण्डा

झारखण्ड रत्न तथा महाराजा मदरा मुण्डा सम्मान से सम्मानित,
पूर्व कुलपति - राँची विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड

यह नाटक

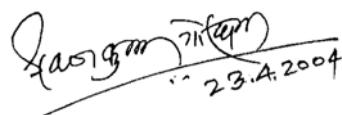
संसार में आज भी अनेक ऐसे प्रदेश हैं जहाँ मनुष्य शताब्दियों से रहते चले आ रहे हैं, फिर भी उस प्रदेश और वहाँ के निवासियों का कोई प्रामाणिक इतिहास नहीं मिल पाता है। केवल लोक गीतों तथा लोक कथाओं में ही ऐसे क्षेत्रों का इतिहास टुकड़े-टुकड़े में सुनने को मिल पाता है। लोक गीतों और लोक कथाओं में वर्णित इतिहास को प्रामाणिकता के आधार पर इतिहासकार एकाएक खारिज कर देते हैं परन्तु तथ्य यह है कि इतिहासकारों को जहाँ अप्रामाणिकता नजर आती है, वहीं प्रामाणिकता के बीज भी छिपे होते हैं। उन्हें पहचानने की आवश्यकता होती है। उन्हें अविश्वसनीय या अप्रामाणिक मानकर अलग कर देना पूर्वाग्रह का परिचायक ही माना जायेगा। जहाँ इतिहास मौन होता है और उसके साक्ष्य लुप्त होते हैं, वहाँ इतिहास का अभाव कुछ अधिक ही खटकता है। ऐसी विकट स्थिति में इतिहास की रचना कठिन अवश्य लगती है, परन्तु यह असम्भव नहीं होती। इस इतिहास की रचना में लोक गीत तथा लोक कथाएँ सबसे अधिक सहायक सिद्ध होते हैं। इसके बाद भूगोल भी अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करने के लिए हमारे सामने बढ़ आता है। यह एक सर्वविदित तथ्य है कि जिस गति से इतिहास में परिवर्तन होते हैं, उसकी तुलना में भूगोल में परिवर्तन की गति अत्यधिक मंद होती है। भूगोल में प्रत्यक्षतः दो प्रकार के परिवर्तन देखने में आते हैं - प्राकृतिक तथा मानवकृत। प्राकृतिक परिवर्तन की गति अत्यंत मंद (कभी-कभी लगभग अदृश्य) होती है, फलतः इतिहास-रचना में भूगोल का साक्ष्य अधिक विश्वसनीय होता है। यदि दर्पण झूठ नहीं बोलता है तो भूगोल भी सत्य को कभी छिपाता नहीं।

झारखंड एक ऐसा प्रदेश है जिसकी प्राचीनता असंदिग्ध है। पर यहाँ के निवासियों तथा इस प्रदेश का आज भी कोई प्रामाणिक इतिहास नहीं मिल पाता है, फलतः आधिकारिक तौर पर कुछ भी कहना संभव नहीं हो पाता। लोक गीतों तथा लोक कथाओं में मदरा मुण्डा का उल्लेख बार-बार मिलता है। इसी पात्र पर डॉ. गिरिधारी राम गौड़ 'गिरिराज' का यह नाटक मदरा मुण्डा आधारित है। यह कृति इतिहास को अनावृत करने की चेष्टा करती है और हमारे समक्ष महाराजा मदरा मुण्डा की एक ऐसी महिमामंडित छवि उभारती है, जिससे यह ज्ञात होता है कि मुण्डा समुदाय का होने के बावजूद मदरा मुण्डा प्रजातांत्रिक शासन-व्यवस्था तथा भावी राजा की योग्यता को अधिमान देते हैं।

यह इतिहास का एक विशेष क्षण तथा निर्णायक मोड़ सिद्ध हुआ। इसी विशेष बिन्दु से झारखण्ड में नागवंशी राज्य का श्रीगणेश माना जा सकता है। यह नाटक इतिहाससम्मत न भी हो तो भी यह तो कहा ही जा सकता है कि डॉ. गिरिराज ने मदरा मुण्डा को जिस रूप में यहाँ प्रस्तुत किया है उससे मदरा मुण्डा की एक निश्चित और उदात्त छवि हमारे सामने आती है। इस छवि को गढ़ने में डॉ. गिरिराज को इतिहास से अत्यल्प और लोक साहित्य एवं भूगोल से पर्याप्त सहायता मिली है। इस प्रकार अंधकार से आवृत्त एक कथानायक को प्रकाश में लाने तथा उसे वांछित महत्ता प्रदान करने की दृष्टि से लिखित डॉ. गिरिराज का यह नाटक उल्लेखनीय बन जाता है। महाराजा मदरा मुण्डा नाटक के विभिन्न घटकों को एकत्र करने और उनके बीच सामंजस्य स्थापित करने का लेखक ने जो प्रयास किया है वह प्रशंसनीय है। यह इस बात का द्योतक भी है कि डॉ. गिरिराज इसके लिए बराबर विह्वल रहते हैं कि इस झारखण्ड अर्थात् हीरा नागपुर की मौलिक तथा वास्तविक आभा अब तो लोगों के सामने प्रकट की ही जानी चाहिए।

यहाँ मैं यह स्पष्ट कर देना उचित मानता हूँ कि यदि किसी इतिहासकार को इस नाटक पर प्रामाणिकता के आधार पर विवाद उत्पन्न करने की उत्कट अभिलाषा सताने लगे तो डॉ. गिरिराज की ओर से उनसे मेरा यह निवेदन अवश्य होगा कि यह एक साहित्यिक कृति है - कोई इतिहास नहीं, अतः इस नाटक का मूल्यांकन नाटक के रूप में ही किया जाना चाहिए। विश्व साहित्य में ऐसी अनेक कृतियाँ हैं जो इतिहास की कसौटी पर खरी नहीं उतरतीं, फिर भी वे साहित्य की अमूल्य धरोहर मानी जाती हैं।

डॉ. गिरिराज ने 'मरड गोमके जयपाल सिंह' लिखकर अपनी प्रतिभा का परिचय पहले ही दे दिया है। विश्वास है, महाराजा मदरा मुण्डा का भी पाठकों तथा दर्शकों के द्वारा उत्साहवर्धक स्वागत किया जायेगा।



23.A.2004

डॉ. श्रवण कुमार गोस्वामी
आश्रय, नयी नगड़ा टोली
चौथी गली (पूरब),
रांची - 834 001

प्रस्तावना

'महाराजा मदरा मुंडा', डॉ० गिरिधारी राम गौँझू 'गिरिराज' की दूसरी श्रुतिनाट्य कृति है। इसके पहले मरड गोमके जयपाल सिंह पर इनकी श्रुति नाटक का मंचन भी हो चुका है जिसे लोगों ने बहुत सराहा। डॉ० गौँझू नागपुरी भाषा-साहित्य के विद्वान् तो हैं ही, डॉ० बी०पी० केशरी (दूसरे नागपुरी विद्वान्) की तरह झारखण्ड के अतीत-इतिहास व पुराइतिहास में ताकने-झांकने वाले जिज्ञासु भी हैं। झारखण्ड के प्रथम मुंडा महाराजा मदरा मुंडा पर यह श्रुति नाटक अतीत को कुरदने और सहेजने का ही प्रयास है। यह कलम की स्थाही से नहीं, बल्कि कलम की सांस से रची गई रचना है।

यह नाट्य-कृति भागजोगनी की तरह झारखण्ड के ऐतिहासिक एवं प्रागैतिहासिक काल-कोठरी में घुस कर, मद्धिम रोशनी में ही सही, उन बिंदुओं को प्रकाशित करती है जिसके आलोक में डॉ० गौँझू ने तर्क संगत अनुमान के द्वारा झारखण्ड की अतीत समरस-साज्जा संस्कृति के इतिहास के करीब पहुंचने का प्रयास किया है। तर्कसंगतता भी इतिहास की एक पहचान बनाती है।

झारखण्ड एक प्राचीनतम भूखण्ड है। यह अंचल प्राचीन अधिवास का क्षेत्र रहा है। पाषाण युग से ही यहां मानव-निवास के साक्ष्य व प्रमाण प्रचुरता से मिले हैं। तथ बात है कि झारखण्ड में मुंडा आदि बड़ी जनजातियों के आगमन के पूर्व यहां एक विकसित सभ्यता थी जो मोहन-जोदडो सभ्यता के समान या समकक्ष थी। असुर यहां पहले से ही जमे हुए थे। असुर आज की भाषा में बहुत बड़े वैज्ञानिक थे। ऋग्वेद में असुरों के द्वारा निर्मित 'पुरों' का वर्णन है। ये पुर सोना, चाँदी एवं लोहा - तीन धातुओं से निर्मित अलग-अलग अस्तित्व वाले थे। पुर-व्यवस्था के जन्मदाता असुरों की संस्कृति को 'मय-संस्कृति' कहा गया है। जलबंध विद्या और फर्श कला में ये माहिर थे। भवन निर्माण, स्थापत्य कला, अस्त्र-शस्त्र व लौह-विद्या में निपुण थे। असुरों के साथ अन्य जनवर्ग का अस्तित्व यहाँ था। शायद उसे ही 'सदान' की संज्ञा दी गई। यह देशज शब्द किसी भाषा के कोश में नहीं मिलता। गौँझू ने सेम तोपनों की पुस्तक 'मुंडा कुर्सीनामा' में दिए गये लोक कथाओं -मिथ्यों के आधार पर इस क्षेत्र में नाग जाति जैसा जनवर्ग के होने की बात कही है और इस क्षेत्र को 'नाग दिशुम' कहा है। सदान को ही सदावासी, आदिअधिवासी आदि कहा गया है।

भारतीय सभ्यता या मानव इतिहास में दो जनवर्ग खड़े दिखते हैं जिनमें संघर्ष होता है। आपसी संपर्क भी बनता है। एक-दूसरे का सहयोग करते हैं और

रक्त-संबंध भी स्थित होता है। वैदिक काल में ये देव व असुर के नाम से अभिहित किए गए हैं। उत्तरोत्तर काल में ये आर्य-अनार्य के रूप में प्रतिनिधित्व करते हैं। देवासुर संग्राम संघर्ष की कथा है तो समुद्र मंथन दोनों के सहयोग का उदाहरण है। ऋग्वेद में आर्यों-अनार्यों के बीच संघर्ष की चर्चा है और असुरों की सामरिक सत्ता का सुनिश्चित संकेत मिलता है। साथ ही यह उल्लेख भी मिलता है कि मानसिक संधि के तहत आर्यों-अनार्यों के बीच रक्त (वैवाहिक) संबंध भी स्थापित हुए जिनकी संतति को 'ब्रात्य' संज्ञा से अभिहित किया गया। ग्रंथों और इतिहास के पन्ने ऐसे उदाहरणों से अटे-पटे हैं। इनके सबल प्रमाण वैदिक एवं पौराणिक दो पात्र हैं - राजा बलि और मगथ राज जरासंध। चकवर्ती रामाट बनने के स्वप्नदर्शी एवं महत्वाकांक्षी हर समर्थ आर्य (क्षत्रिय) राजा अनार्य योद्धाओं के सहयोग एवं अनुग्रह पाने के लिए उनके साथ संबंध भी बनाये।

झारखंड में भी दो जनवर्ग का अस्तित्व स्पष्टतः दीखता है- सदानों का और जनजातियों या आदिवासियों का। संघर्ष की लम्बी यात्रा करके और भौगोलिक आधातों को झेल-झेल कर थक चुके मुंडाओं का बहुत बड़ा दल रिसा मुंडा के नेतृत्व में 'सोना तहर नाग देस' में नागपूजा के दिन प्रवेश करता है तो नागराज ने स्पष्ट पूछा कि 'हामरे संग लड़ाई करेकि कि सहिया बइन के रहेक आ हा?' नागराज के बढ़े हाथ से हाथ मिलाने में उन्हें भी अच्छा लगा और रिसा मुंडा ने कहा कि 'हामरोहों लड़ाई करेक ले तो नि आए ही। हामरे तो कहली नि सिरमासिड कर हुकूम से 'सोना लेकन देस में' शाति से हिएँ रहेक ले आ ही। आउर अब तो सहिया बनाएक ले तैयार होए गेलैं अपने मन।' यही संघर्ष की शांति में परिणति, 'सहिया' एवं 'मदइत' के आधार पर 'एक-दूसरे से पूरा-पूरी हेल-मेल होए' रहने की प्रतिज्ञा और संकल्प झारखंड के सांस्कृतिक इतिहास को एक नया मोड़ देता है। सदान आदिवासी के बीच समरसता, सहयोग एवं साहचर्य की स्थापना होती है। सदियों की सहयात्रा में आपसी अन्तःप्रक्रिया एवं सहयोग से जो साझा संस्कृति विकसित हुई उसके उद्भव-विकास के विभिन्न चरणों का इतिहास जिसमें श्रावक, श्रमण एवं सनातनी प्रभाव भी शामिल है, धूंध और अंधेरे में डूबा है। फिर भी इतिहास साक्षी है कि सदान एवं आदिवासी के बीच कभी कोई संघर्ष क्या, कोई मनोमालिन्य तक उत्पन्न नहीं हुआ। सदानों की तरह मुंडा, उराँव आदि ने भी जंगलों को साफ कर खेत-जोत बनाते गए जो आज क्रमशः 'कोड़कर', 'खूँटकटी', 'भुईहरी' आदि के नाम से जाने जाते हैं।

अपने कार्य से मुक्त होने एवं नये राजा के चुनाव की इच्छा मदरा मुंडा प्रकट करते हैं तो नाग सरदार ने मदरा मुंडा के पुत्र मुकुटराय का नाम प्रस्तावित किया, पड़हा राजा ने फणिमुकुटराय का, जो मदरा मुंडा के पोषित पुत्र हैं जिसे

उसके माता-पिता जन्मते ही सुतियाम्बे में पोखर के पास छोड़ गए थे। राजा मदरा मुंडा ने योग्यता, कुशलता, क्षमता आदि गुणों के आधार पर, ममतावश भी अपने पुत्र का पक्ष न लेकर, फणिमुकुट राय को राजा घोषित कर दिया। झारखंड के इतिहास में गणतंत्र का यह अनुपम उदाहरण पेश करता है तथा आदर्श लोकाचरण को रेखांकित करता है।

झारखंड के हजारों वर्ष के कोहराच्छन्न इतिहास में जनजातीय अध्याय के ढेर सारे सफे तो सुलभ हैं किन्तु अन्य मूलवासियों के प्राचीन अधिवास के बारे में बहुत कम सामग्री उपलब्ध है। डॉ बी०पी० केशरी ने झारखंड के सबसे बड़े जनवर्ग सदान के विषय में कुछ तथ्य सामने लाने का प्रयास किया है।

झारखंड पृथक राज्य बनने के बाद सदानों की उपेक्षा और जनजातीयों के हितों की जेहादी जुनून तक तरफदारी करके जो बोनसाई इतिहास उजागर किया जा रहा है, उससे आदिवासी-सदान के बीच की शताब्दियों की समरसता भंग हुई है, खाई चौड़ी होती जा रही है। उस खाई को पाटने में गौँझू का यह नाटक एक संकेत है और होशियार के लिए इशारा काफी होता है।

इस श्रुति नाटक के छह दृश्यों (नज़इर) में 'मरड़ बुरू' और 'सोबरनखा (स्वर्णरिखा नदी)' के संवाद के माध्यम से यथर्थ एवं कल्पना का सहारा ले बड़ी कुशलता से उस कालखंड को जीवंत बनाते हुए एक 'उदार बसुधा' का सृजन किया गया है। ये क्रमशः मुंडा और सदानों के सत्याभास देने वाले प्रतीक चरित्र हैं जिनकी बेआवाज अनुभूतियों से कलात्मक अभिव्यक्ति एवं विनय के साथ झारखंड का इतिहास बुनने का प्रयास है। सदान-आदिवासी के आपसी भेदभाव को दूर कर पुरानी शाश्वत समरसता को बहाल करने की आकॉक्षा इस रचना का इजहार है।

नाटक आंचलिक बोली नागपुरी में है। साथ ही इसका हिन्दी स्वरूप भी प्रस्तुत किया गया है जिसके कारण इसमें पठनीयता है और रस भी। पात्रों के जुबान बन कर संवादों में ढलती हुई भाषा तहदार है। कुल मिलाकर यह निपट सादगी में सलीकेदार प्रस्तुति का खूबसूरत उदाहरण है।

आशा है डॉ गौँझू की यह कृति- संस्कृतिनामा नाटक - पाठकों के बीच आदर अर्जित कर सकेगा।

पूर्व विश्वविद्यालय प्राध्यापक
राँची विश्वविद्यालय
विमल निकेतन
मोरहाबादी, राँची, झारखंड

डॉ बिमला चरण शर्मा
०५.०२.२००४

मदरा मुण्डा : श्रुतिदंग के आइने में

लोक-परंपरा में झारखंड के इतिहास पुरुष, मदरा मुंडा की छवि एक समर्थ, न्यायप्रिय और उदात्त राजा (प्रधान मानकी) के रूप में दो हजार वर्षों से अंकित है। प्रचलित कथा के अनुसार इन्होंने झारखंड के प्रथम नागवंशी राजा, फणिमुकुट राय को 83 ई० में परहा-पंचों की सर्वानुमति से अपना उत्तराधिकारी बनाया था, हालांकि उनका अपना पुत्र, मुकुट मुंडा उम्र में उनके पोष्य पुत्र फणिमुकुट राय से कुछ बड़ा ही था। यह कथा बहुश्रुत है।

इधर कुछ वर्षों से झारखंड के पुरातत्व और इतिहास पर नये सिरे से अनुसंधान होने लगे हैं। नयी-नयी जानकारियाँ, नये-नये तथ्य, टुकड़ों में उजागर हो रहे हैं। इनमें कुछ तथ्य बड़े चौंकाने वाले और स्थापित परंपराओं से भिन्न दिखाई देते हैं।

'मध्यदेश' के भारशिव नागों के इतिहास (डॉ० धीरेन्द्र वर्मा) के आलोक में मुझे उस कथा की एक संगति कुशाण साम्राज्य के इतिवृत्त में मिली थी। प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर मेरा अनुमान है कि झारखंड के मुंडा-मानकी उत्तर भारत के कुशाण सम्राटों की प्रभुसत्ता (Suzerainty) स्वीकार करते थे। कुशाण मुद्राएँ झारखंड में प्रचलित थी। राँची से मयुरभंज तक कुशाण मुद्राओं की उपलब्धि इसका एक बड़ा प्रमाण माना जा सकता है। जब 'मध्यदेश' (नर्मदा-ताप्ती घाटी) के नागों ने कुशाणों को अफगानिस्तान तक खदेड़ दिया, तब स्वाभाविक है कि झारखंड में भी नागों की प्रभुसत्ता स्थापित हो गयी। यह सब भांतिपूर्ण मैत्री संबंध से घटित हुआ। नाग राजाओं ने मुंडा परंपराओं में कोई हस्तक्षेप नहीं किया। मुंडाओं की स्वायत्तता (Autonomy) पूर्ववत् बनी रही। अनुपलब्ध 'मदरा-पांजी' इस संधि का प्रमाण बताया जाता है। संभवतः इसीलिए मदरा मुंडा द्वारा फणिमुकुट राय को गोद लेने की कथा (जनश्रुति) बिना किसी प्रतिरोध के स्वीकृत हो गयी। (वि० दे०, छोटानागपुर का इतिहास : कुछ सूत्र, कुछ संदर्भ पृ० 14)

अब यह ऐतिहासिक तथ्य नये साक्ष्यों के आलोक में और भी विस्तार पाता जा रहा है; और कुछ ऐसे साक्ष्य भी सामने आ रहे हैं कि मगद साम्राज्य के शिशुनागों ने मुंडाओं को 'मगद' याने जंगल काट कर जमीन बनाने की अनुमति दे कर प्रश्रय दिया था। (संस्कृत कोश के अनुसार व्युत्पत्ति रहित शब्द मगद

या मगध का मुंडारी में अर्थ ही है जंगल काट कर जमीन बनाना)। इस अर्थ में कहा जा सकता है कि 'मगध' के निर्माण में मुंडाओं का मौलिक योगदान रहा है।

डॉ० गिरिधारी राम गौङ्गू ने नागों और मुंडाओं की मैत्री (सहिया संबंध, छोटे-बड़े भाई की गृहीत परंपरा) के और भी नये आयामों की तलाश की है। उनकी मान्यता के अनुसार नागों ने नागदिसुम (नागदेश, झारखण्ड) में मुंडाओं को प्रश्रय दिया था। लोक कथाओं, परंपराओं में इसकी पुष्टि के प्रभूत प्रमाण उपलब्ध बताये गये हैं। इस दृष्टि से डॉ० गौङ्गू का प्रस्तुत 'श्रुतिरंग (मदरा मुंडा)' प्रखर आलोक की तरह अनेक विचारणीय प्रसंगों से मतान्तरों के धुंध का निवारण करता है।

डॉ० गौङ्गू ने प्रस्तुत 'श्रुतिरंग' (एक नयी नाट्य विद्या) में इस तथ्यपूर्ण इतिहास-दृष्टि की प्रतिष्ठा के लिए एक लम्बी भूमिका भी लिखी है। इस श्रमसाध्य वैदृष्ट्य के लिए भी उन्हें याद किया जाना चाहिए।

'श्रुतिरंग' की यह नयी विधा तो उनके प्रथम हिन्दी और नागपुरी 'श्रुतिरंग' (मरड गोमके जयपाल सिंह) के पुनर्वार सफल मंचन से प्रवर्तित हो चुकी है। मुझे लगता है कि प्रस्तुत रचना समृद्ध हिन्दी-नागपुरी वाडमय में भी अपना विशेष स्थान बनाएगी।

मैं समझता हूँ झारखण्ड के इतिहास और जन-परंपराओं पर विशेष ध्यान देने वालों के लिए यह नागपुरी श्रुतिरंग (मदरा मुंडा) अनेक दृष्टियों से नयी संभावनाओं का द्वार खोलने वाला सिद्ध होगा।

प्रस्तुत 'श्रुतिरंग' की भाषा—शैली प्रभावी होने के कारण हमारा ध्यान आकृष्ट करती है। लेकिन कुछ नागपुरी शब्दों के वर्ण-विन्यास (हिज्जे) के मामले में यहाँ कई सवाल अनुत्तरित रह जाते हैं। आशा है कि कालक्रम से इन सवालों के भी संगत उत्तर निकल जाएँगे।

शुभकामनाओं के साथ,

पिठोरिया, राँची-834006

विसेश्वर प्रसाद केशरी

12.02.04

झारखण्ड कर विलक्षण महापुरुष ‘महाराजा मदरा मुँडा’

झारखण्ड कर इतिहास कर परकाला में हुलकेक तिहा हेके ई नाटक ‘महाराजा मदरा मुण्डा’। मदरा मुंडा कर ऐतिहासिकता तेहें कोनो सबुत कर जरूरइत नखें। ऊ झारखण्डी समाज में किंवदन्ती, लोक कथा, लोक गाथा में व्यापल आहे। इतिहास कर मोटा-मोटी अर्थ होएल, इति (एहे) हा (होए हे) स (से)। लिखल इतिहास कर अभाव में दन्त कथा, लोक परम्परा, लोकगीत, लोक कथा से इतिहास के खोइज निकसाएक पडेल।

डॉ. गिरिधारी राम गांझू ‘गिरिराज’ महाराजा मदरा मुण्डा कर बहना में एहे काम के करेक तिहा कहार हैं।

मुण्डा जाइत कर सताइस सौ बछर कर इतिहास के सोमइट के राखल जाए हे ई श्रुति नाटक में। मुण्डा लोकतंत्र, सामूहिक निर्णय, सामाजिक समरसता संगे नाग दिसुम कर सहिया आउर मदइत कर तालमेल से गोटेक ‘नागवंशी मुण्डा राइज व्यवस्था’ कर उदय भेलक। लोक आस्था कर प्रतीक “मदरा-पाँजी” महाराजा मदरा मुण्डा कर उत्तराधिकारी महाराजा मन तेहें गोटेक आचार-संहिता कर काम करलक आउर इतिहास गवाह आहे कि महाराजा फणि मुकुट राय मुण्डा कर उत्तराधिकारी महाराजा मन महाराजा मदरा मुण्डा कर बताल डहर (मदरा-पाँजी) में चलते रहलैं।

मध्ययुग में महाराजा दुर्जनशाल (45वॉ मुण्डा महाराजा) 1615 ई. सन में जहाँगीर कर सेनापइत इब्राहिम खाँ से हाइर के ग्वालियर किला में कैदी भेलैं। पाछे हीरा कर पहचान कइर के ‘शाह’ कर उपाधि पाए के खुखरा घुरलैं। आउर आपन दरबार के आगरा दरबार तइर सजाएक सिंगराएक तिहा करलैं। एहे ठीन से राय राजा शाही महाराजा बइन गेलैं आउर कट्टर ब्राह्मणवाद, मुण्डा समाज के “राजा होडो को” आउर “प्रजा होडो को” में हिगराएक लागलैं।

एहे बेरा झारखण्ड में आर्य जाइत कर ब्राह्मण, राजपूत आउर बनियाँ मन आएक लागलैं। बाद में अंगरेजी राइज रहल-सहल कमी के पूरा कहार देलक जब मालगुजारी प्रथा, जमींदारी प्रथा चलाए के मुण्डा महाराजा कर अधिकार के एक तरह से खतमे कइर देलक आउर मुण्डा मनक जगह-जमीन कर लूट शुरू भेलक। आउर तब से विद्रोह कर जे ओर भेलक 1832 से 1900 (बिरसा मुण्डा) तक चलते रहलक।

झारखण्ड में इतिहास के लिखेक कर कोनो चलन नी रहेक तेहें ऐतिहासिक विषय में कोनो नाटक, लेख, आउर आख्यान लिखइआ मन के अजगुते अड्गुड बुझाएल मुदा “गिरिराज” कर ई श्रुति नाटक आगे लिखइया मन तेहें गोटेक ‘टोरोच’ कर काम करी, इसन मोके बुझाएल। ई नाटक में भाव के देखाएक तिहा छोटे-छोटे संवाद से होए हे, आउर आखिर तक पाठक-दर्शक के बाइंध के राखेक सामरथ ई नाटक में दिसेल।

झारखण्ड कर विलक्षण महापुरुष “महाराजा मदरा मुण्डा” झारखण्ड कर लोक मानस में किंवर्दंती कर रूप में विराजमान आहें। लोक धारणा इसनो आहे कि ई देश मद्रदेश आउर इकर राजा मद्राज कहात रहें। महाराजा मदरा मुण्डाए महाभारत में बताल मद्राज शल्य रहें। इनकर बहिन माद्री कर बिहा महाराज पाण्डु से होए रहे आउर माद्री के मुण्डा तरीका से “सुखमुड़” (कन्या मूल्य) देइ के महाराज पाण्डु कर संगे बिहा करूवाएक ले भीष्म पितामह मद्रदेश (सुतियाम्बे गढ) आए रहें।

अइसन बहुत सन किंवर्दंती आहे कि महाराजा मदरा मुण्डा गोटेक महान तंत्रसाधक, माँ काली आउर सूर्य सिडबोंगा कर महान उपासक, शिव-शक्ति कर पूजक, प्रजापालक, न्यायप्रिय आउर कला-संस्कृति कर पोषक रहें।

फणि मुकुट राय कर जनमकथा मोके बुझाएल, बहुत पाढे कर लिखल हेके। का ले कि मुण्डा रीति रेवाज के फणि मुकुट राय कर उत्तराधिकारियो मन एखनो तक मानते आवत हें। फणि मुकुट राय आपन नाती माने मुकुट राय कर बेटा कर नाँव से मदरा धइर रहें, जे पाढे मदन राय कर नाँव लिखल जाए हे। पुरखा कर नाँव घुरेल आउर ऊ एखन तक “राजवंश” में कायम आहे। हामरे कर वर्तमान महाराजाधिराज चिंतामणि शरण नाथ शाहदेव कर आबा साहेब स्व. युवराज गोपाल नाथ शाहदेव रहें आइझ उनकर पुत्र कर नाँवों गोपाल शरण नाथ शाहदेव हेके।

मोर नजइर में झारखण्ड कर समरसता झारखण्ड कर पारम्परिक इतिहास के उजागर करेक उकर माझे लुकल सांस्कृतिक मूल्य, मानवतावादी सोच, सामूहिक निर्णय कर सम्मान के उजागर करेक कर तिहा ई नाटक से होए हे। भावी झारखण्ड कर संचालन आउर विकास तेहें सोझ डहर के खोजेक में इकर से भारी मदइत भेटाइ। एहे मोर शुभ कामना आहे।

करमटोली, राँची
करम एकादशी
6.9.2003

लाल रणविजय नाथ शाहदेव
अध्यक्ष
नागपुरी प्रचारिणी सभा, राँची
झारखण्ड

कालजयी नायक मदरा मुँडा

सतत साहित्यिक प्रवहमान सरिता कर नाम हेके गिरिधारी राम गौङ्झू 'गिरिराज'। ई गिरिराज कर श्रृंग से साहित्य कर भिन्न-भिन्न विधा कर सिरजन, आलोड़न आउर प्रवाहन जारी आहे। फादर पीटर शांति नवरंगी, मरड गोमके जयपाल सिंह कर बाद फिन नागपुरी श्रुति नाटक "महाराजा मदरा मुण्डा" आइझ मोर हाथे आहे। आर्य वाढ़मय में जे स्थान महाराज इक्ष्वाकु या महाराज शांतनु कर आहे, ओहे स्थान नागपुरी संस्कृति में इतिहास पुरुष मदरा मुंडा कर आहे, मुदा कोई साहित्यकर्मी कर ध्यान ई कालजयी नायक बटे शायद एखन तक नी जाय रहे। मोर अनुज 'गिरिराज' एक श्रुतिनाटक कर माध्यम से झारखण्ड कर जनक के उजागर करलै ई एक बगरा काम हेके।

मदरा मुंडा आउर फणि मुकुट राय एक सिक्का कर दु पहलु एक तत्व कर दु रूप! एक दूसर कर पूरक। सप्राट चन्द्रगुप्त के चाणक्य ढाइल रहैं तो फणि मुकुट राय कर संरचना कइर रहैं मदरा मुंडा।

नाटक "महाराजा मदरा मुंडा" निश्यचे नागपुरी साहित्य कर कोश के संबर्धन करी मोर ई अटल विश्वास आहे। मोर शुभ कामना।

पत्रकार/अधिवक्ता, खूँटी
दूरभाष - 220618

शिव अवतार चौधरी 'शिवाजी'
31.8.2003

नाटक से पहले

इतिहास, लोक साहित्य तथा पुराण (धर्मशास्त्र) साहित्य के उपादान रहे हैं, तो साहित्य, इतिहास का दर्शन। साहित्य, इतिहास को जीवंत बनाता है और इतिहास अतीत जीवन का यथार्थ बताता है। भारतीय इतिहास एवं संस्कृति के महान नाटककार जयशंकर प्रसाद ने इतिहास एवं साहित्य को स्पष्ट करते हुए कहा है-

“... साहित्यकार को आदर्शवादी होना ही चाहिए और सिद्धांत से ही आदर्शवादी धार्मिक प्रवचनकर्ता बन जाता है। वह समाज को कैसा होना चाहिए, यही आदेश करता है। और, यथार्थवादी सिद्धांत से ही इतिहासकार से अधिक कुछ नहीं ठहरता, क्योंकि यथार्थवादी इतिहास की सम्पत्ति है। यह चित्रित करता है कि समाज कैसा है या था, किन्तु साहित्यकार न तो इतिहासकर्ता है और न धर्मशास्त्र प्रणेता। इन दोनों के कर्तव्य स्वतंत्र हैं। साहित्य इन दोनों की कमी को पूरा करने का काम करता है। साहित्य समय की वास्तविक स्थिति क्या है, इसको दिखाते हुए भी उसमें आदर्शवाद का सामंजस्य स्थिर करता है। दुःख दग्ध जगत् और आनन्दपूर्ण स्वर्ग का एकीकारण साहित्य है, इसीलिए असत्य अघटित घटना पर कल्पना को वाणी महत्त्वपूर्ण स्थान देती है, जो निजी सौंदर्य के कारण सत्य पद पर प्रतिष्ठित होती है। उसमें विश्वमंगल की भावना ओतप्रोत रहती है।” ⁽¹⁾

झारखण्ड का इतिहास झारखण्ड के बीहड़ अरण्यों सा बहुत कुछ अनजाना, अनदेखा, अनुमानित, अपूर्ण व अनछुआ है।

“छोटानागपुर पठार में अब तक पूरी तरह से खोज नहीं की गई है। छोटानागपुर के लोगों की प्राचीनता की समस्या का संतोषजनक समाधान प्राप्त करने के लिए विज्ञान की कई शाखाओं विशेष रूप से जैसे - भूगर्भशास्त्र, खनिजशास्त्र और पुरातात्त्विक अनुसंधानों का सौहार्दपूर्ण सहयोग आवश्यक है।” ⁽²⁾

झारखण्ड के प्राचीन निवासियों के इतिहास पर यूरोपीय व देशी विद्वान इतिहासकारों ने बहुत कुछ अपने उद्देश्य की पूर्ति के अनुरूप जैसा देखा-पाया व सुना-समझा वैसा प्रभूत लिखा है। इतिहास प्रायः लिखा नहीं जाता लिखाया जाता रहा है। इसी से इतिहास में लिखाने व लिखने वाले की दृष्टि एवं सृष्टि ही प्रधानता पा जाती है। डॉ. श्रवण कुमार गोस्वामी ने ठीक ही लिखा है - “इतिहास के सत्य या तथ्य भले न बदलते हों मगर उनकी व्याख्या तो बदल ही सकती है। अगर मार्क्सवादी दृष्टि से इतिहास लिखा जा सकता है, ब्रिटिश दृष्टि से इतिहास रचा जा सकता है कांग्रेसी दृष्टि से इतिहास लिखने की कोशिश की जा सकती है, मुस्लिम दृष्टि से इतिहास की रचना की जा सकती है, तो आदिवासी दृष्टि से इतिहास क्यों नहीं लिखा जा सकता।” ⁽³⁾

इसे एक कदम और आगे बढ़ाते कहें तो सदानों का इतिहास क्यों उपेक्षित

रहे? ज्ञारखण्ड मात्र आदिवासियों का भर नहीं है। यहाँ सदान भी सदियों से या सदा से अथवा अनादिकाल से रहते आ रहे हैं। बड़ाईक ईश्वरी प्रसाद सिंह ने नवम्बर 1937 के “ज्ञारखण्ड” पत्रिका के “इन गरीबों के लिए कौन!” आलेख में लिखा है - “छोटानागपुर में जितने लोग निवास करते हैं, सभी आदिवासी (उराँव, मुण्डा, हो, खड़िया आदि) नहीं हैं। यहाँ उन लोगों की संख्या भी काफी है जो अपने को सदान कहते हैं।इन सदानों की हालत जर्मीदारों को छोड़कर किसी प्रकार भी आदिवासियों से बेहतर नहीं है। वे कहाँ-कहाँ इतने गरीब हैं कि देख कर मनुष्यता रो उठती है।बहुत से लोगों को, जो यहाँ से छोटानागपुर से बाहर रहते हैं, तथा कुछ ऐसे लोग भी, जो यहाँ रहते हैं, एक धारणा हो गई है कि छोटानागपुर में केवल आदिवासी ही रहते हैं। यह उपप्रान्त केवल आदिवासियों का ही है। लोग यही सोचा करते हैं कि आदिवासी बहुत गरीब हैं, बहुत मूर्ख हैं और उनके ऊपर बहुत अत्याचार होता है। इन बातों को ले कर कुछ ऐसी हवा बही कि सभी की सहानुभूति केवल आदिवासियों पर हुई।आपने आदिवासियों को देखा, अपनी सहानुभूति दिखलाई, मदद पहुँचाई और एक प्रकार से इन्हों की समस्याओं को लेकर उलझे रहे। अब यदि अपनी दृष्टि उन सदानों की ओर फेरें, तो आप को आश्चर्य, ग्लानि एवं महान दुःख होगा। इन सदानों का कोई माँ-बाप नहीं, कोई आधार नहीं, कोई मददगार नहीं। तन में वस्त्र नहीं। भोजन का प्रबन्ध नहीं। खेती-बारी नहीं। शिक्षा वे बेचारे क्या जाने? वे आदिवासी नहीं, यही तो एक पाप है, जघन्य पाप। फिर किसी की सहानुभूति मिले तो क्यों कर?”⁽⁴⁾

उपर्युक्त कथन 1937 का है परन्तु आज भी यह प्रसंग बासी नहीं हो सका है। यूरोपीय शासकों, मिशनरियों एवं इनके देशी भक्तों ने भी ज्ञारखण्ड को उपर्युक्त दृष्टि से ही सायास देखा, लिखा एवं विधि-विधान बनाया, क्योंकि उन्हें एक उपनिवेश में शासन को दृढ़ बनाए रखना था। ऐसा करना उनकी लाचारी थी। आज अंगरेज शासक नहीं हैं लेकिन उनकी उपनिवेशवादी व्यवस्था व विधि-विधान यथावत उन्हीं की भाषा व अंगरेजियत प्रबल रूप से हावी है। इसे तोड़ बिना वास्तविक इतिहास न लिखा जा सकेगा न भावी इतिहास का निर्माण होगा। शासक कोई भी हो प्रायः वह सदैव जनता को बाँटो, लूटो और शासन करो की कूटनीति को बनाए रखना चाहती है। शासक एवं शासित की भाषा इसी से इस स्वतंत्र देश में अंगरेजी व देशी भाषाएँ क्रमशः बनी हुई हैं।

क्या ज्ञारखण्ड आदिवासियों के इतिहास निर्माण की स्थली रही है? निःसंदेह उपलब्ध इतिहास इसके साक्षी हैं और साक्षी हैं इनके लोक साहित्य। जो जाने-अनजाने इनके लोक गीतों, गाथाओं, कथाओं, कहावतों आदि में इतिहास की कड़ियाँ जुड़ गई हैं जैसे जंगल के रुगड़ा-खुखड़ी की भाँति बिना कृषि के इनके भोजन के अंग बन गए हैं। इनके लोक साहित्य में इतिहासकार क्या कहते हैं, इनके अतीत के बारे में वह नहीं है। ये स्वयं अपने बारे क्या कहते हैं, अपने पुरखों की परम्परा

से वह सन्निहित है।

साहित्य तो साहित्य होता है इतिहास नहीं। भले ही वह लोक साहित्य हो या शिष्ट साहित्य। साहित्य किसी प्रसंग को इतिहास की तरह सीधे नहीं रखता वह उसकी कलात्मक अभिव्यक्ति देता है। जिससे साधारण सी घटना भी अलौकिक आनन्द प्रदान कर सके। साहित्य, इतिहास को दृष्टि प्रदान करता है तो अभिनव इतिहास की सृष्टि भी।

झारखण्ड क्या मानव शून्य भूखण्ड था? और यदि मानव का अधिवास यहाँ इतिहास के किसी काल खण्ड में हुआ तो वे कौन थे? क्या वर्तमान आदिवासी कहे जाने वाले लोग थे, जो अपने लोक गीतों, गाथाओं, कथाओं आदि में अपने को विभिन्न स्थलों का परिभ्रमण करते झारखण्ड आ बसने का उल्लेख करते हैं! जिसे रिजले एवं कर्नल डाल्टन ने पहली बार आदिवासी नाम दिया! इन आदिवासी समुदायों की भाषा-संस्कृति भी प्रायः एक दूसरे से पृथक है। कहीं-कहीं इतना विपरीत है कि मुण्डा-उराँव आदि की भाँति एक दूसरे की भाषा तक समझ नहीं सकते। तब भी इनके सहवास का इतिहास आदिमकाल तक चला गया है। कालान्तर में इनकी संस्कृति में सन्निकटता आई पर भाषा नितांत भिन्न बनी रही।

भूगोल वेत्ता डॉ. विमला चरण शर्मा एवं डॉ. राम कुमार तिवारी ने भी लिखा है - “.....कोलारियन जनजातियों के यहाँ आने के पूर्व कोई सभ्य प्रजाति यहाँ वास करती थी जिसने काफी अच्छे-अच्छे बर्तन आदि बनाये थे और उनके अंश खुदाई से प्राप्त हुए हैं। संभव है ये असुर लोग ही हैं। मुण्डाओं को यहाँ बसने के लिए इन असुरों से संघर्ष करना पड़ा होगा।”⁽⁵⁾ आगे वे पुनः लिखते हैं - “वे लोग (असुर) लोहा गलाकर काम करना जानते थे तथा अन्य धातुओं जैसे - ताँबा, पीतल का भी प्रयोग करते थे। उनकी कला विकसित थी तथा एक निश्चित अर्थव्यवस्था थी। वे किसी स्थायी गाँव में रहते थे जो किसी नदी के किनारे बसा हुआ होता था।”⁽⁶⁾

भू-वैज्ञानिकों ने झारखण्ड क्षेत्र को विश्व का सबसे प्राचीन भूखण्डों में से एक बतलाया है जिसकी आयु लगभग तीन अरब वर्ष बतलायी जाती है। निश्चित रूप से भूमि थी तो क्रमशः जलीय जीवों, वनस्पतियों वन्य जंतुओं के उपरान्त आदि मानव का उद्भव भी किसी काल में हुआ। बी. एन. लूनिया ने लिखा है - “भूगर्भशास्त्रियों का मत है कि जब उत्तरी भारत के प्रदेशों का अस्तित्व नहीं था और वहाँ समुद्र लहराता था, उस समय डेकान प्लेटो विद्यमान था। अतएव यहाँ मानव जीवन और सभ्यता का आविर्भाव उत्तरी भारत की अपेक्षा पहले हुआ था। यहाँ पाषाण काल के हथियार, औजार, समाधि स्थल और अस्थियाँ प्राप्त हुई हैं। ये यहाँ मनुष्यों के अस्तित्व और जीवन को प्रमाणित करते हैं। यहाँ मानव जीवन पूर्व पाषाण काल से उत्तर पाषाण काल तक और उत्तर पाषाण काल से प्रागैतिहासिक काल तक आता है यहाँ के पुरातत्व संबंधी अवशेष इस तथ्य की

ओर संकेत करते हैं कि कालान्तर में मनुष्य के दो समुदाय प्रकट हुए - एक सुसभ्य और सुसंस्कृत था और दूसरा बहुत ही कम सभ्य और अपरिष्कृत था। (7) आगे चल कर इन्हीं दो वर्गों में सदानों एवं आदिवासियों को पूर्ववर्ती विद्वानों ने तो नहीं देखा?

झारखण्ड उपर्युक्त डेकान प्लेटो का ही उत्तरी-पूर्वी भूखण्ड है। अतः उपर्युक्त संदर्भ में इसे देखा जा सकता है। यह डेकान प्लेटो प्राचीन लेमोरिया महाद्वीप से जुड़ा हुआ था। 'प्राचीन भारतीय संस्कृति' में लिखा है - “....इस पृथ्वी पर मानव उसकी सृष्टि, सभ्यता और संस्कृति का प्रारंभ इस लेमोरिया महाद्वीप में हुआ था। लगभग अस्सी हजार या एक लाख वर्ष पूर्व समुद्र में भयंकर प्रलयंकारी तूफानी हलचलों के कारण समस्त लेमोरिया जलमग्न हो गया और वहाँ विस्तृत प्रशान्त महासागर हिलोर लेने लगा। इस प्रलयंकारी तूफान के समय लेमोरिया के निवासी अपनी सुरक्षा हेतु भाग कर दक्षिण भारत में आकर बस गये। इस प्रकार लेमोरिया महाद्वीप द्रविड़ों का आदि निवास स्थान था। प्राणी शास्त्र के तत्त्ववेत्ताओं और अनेक पाश्चात्य विद्वानों ने इस सिद्धांत का समर्थन किया है। इनमें कीन, कातेलियट, ओल्डम, होल्डरनेस आदि मुख्य हैं। (8) इसमें वर्णित द्रविड़ों में से झारखण्ड के उर्वां भी आ सकते हैं।

पुरातत्व के अनेक अवशेष झारखण्ड में प्राप्त हुए हैं और हो रहे हैं - वे कुछ और कहते हैं। 'लिस्ट ऑफ मोनुमेण्ट्स इन दि छोटानागपुर डिवीजन' में नागपुरी क्षेत्र के ऐसे अवशेषों का संक्षिप्त इतिवृत्त है। (9) इसमें वर्णित पुरातत्व किनके हैं? निश्चित रूप से जो इनके निर्माता हैं ये उन्हीं के होंगे। और ये संकेत वर्तमान आदिवासियों के पूर्व के लोगों की ओर संकेत करते हैं।

मानगोविन्द बनर्जी ने भी लिखा है - “छोटानागपुर के प्रागैतिहासिक अध्ययन की प्रमुख सामग्रियाँ कभी-कभी पायी जाने वाली पूर्व प्रस्तर कालीन तथा नयी प्रस्तर कालीन औजारों की प्राप्ति पर आधारित है, जिसे ताँचे के फेंक कर मारे जाने वाले अस्रों की उपलब्धता, आभूषणों, बर्तन, भाण्डों और अन्य शिल्पकलाओं तथा भवनों के अवशेषों और बड़े-बड़े तालाबों जो प्रागैतिहासिक परम्परा के अनुसार असुरों के बत्तए जाते हैं के द्वारा प्रमाणित हैं।” (10)

झारखण्ड में असुर सभ्यता-संस्कृति के कई निशान विद्यमान हैं। लेखक के गाँव बेलवादाग का एक उदाहरण राँची गजेटियर से पर्याप्त होगा - **"Belwadag - A village of old antiquities about 4 miles to the South-West of Khunti, uplands strewn over with brickbats are believed to represent the garh i.e., fort of an Asura King. Trial excavations were carried on here in 1915 leading to the discovery of foundations of brick walls of a building, bricks measuring 17"x10"x8". Copper ornaments and three gold coins were also**

found here earlier one of the gold coins being of Huvishka type. Stone implements and beads were also reported to have been discovered here before. Another Asura monument here is a tank called Asura Pokhra, which is now silted up."⁽¹¹⁾

1966 में मुझे संत जेवियर्स कॉलेज, राँची के इतिहास विभाग के छात्रों एवं प्रो. वॉनट्राय के साथ साईकिल से खूँटी के तजना नदी के किनारे (खूँटी-तमाड़ पथ में) के रानी दह जाने का अवसर मिला था। जहाँ से हमें ताँम्बे की दो कुल्हाड़ी उपर्युक्त ईटों के आकार की ईटों की दीवारों की नींव, पुरानी मिट्टी के बर्तन, खपड़े के टुकड़े, चमकीले पत्थर, पत्थर के औजार, खोपड़ी आदि प्राप्त हुए थे, जो इतिहास विभाग में सुरक्षित रखे गए। ऐसे ही स्थल की चर्चा 13 सितम्बर 2003 के प्रभात खबर में - खूँटी व मुरहू में पहली शताब्दी की नगर सभ्यता के अवशेष मिले - देखा जा सकता है। इसके अतिरिक्त मुझे खूँटी से सटे हुटुबदाग गाँव से भी पत्थर की एक कुल्हाड़ी 1978 में मिली थी जिसे मैंने अपने तत्कालीन प्राचार्य डॉ. निर्मल मिंज, गोस्सनर कॉलेज, राँची को जाँच कराने के लिए दिया था। ऐसे अनेक पुरावशेष झारखण्ड में बिखरे पड़े हैं जिसका अन्वेषण-अनुसंधान व जाँच करना शेष है। गिरिडीह का असुर बांध, लापुंग और लालगंज के बीच असुर डीपा (स्थल) नामक गाँव इसी क्रम में देखा जा सकता है। ऐसे पुरातात्त्विक एवं ऐतिहासिक स्थलों के अध्ययन से झारखण्ड का वास्तविक इतिहास सामने आ सकता है और इनसे असुरों की प्राचीनता प्रमाणित होती है।

वर्तमान आदिवासियों में मुण्डा जाति का आगमन इस भूखण्ड पर सर्वप्रथम हुआ बताया जाता है। लेकिन शरत चन्द्र राय ने भी लिखा है - “आदिवासी जातियों के चुटिया नागपुर में आगमन के पूर्व यहाँ असुर जाति के लोग रहा करते थे जो अब भी यहाँ के अनेक स्थलों में मिलते हैं। ये लोहा गला कर औजार बनाने का काम करते थे। इसी प्रकार दूसरे लोग भी थे, जो कपड़ा बुनने, बासन-बर्तन बनाने, टोकरियाँ बनाने, खेती के औजार बनाने इत्यादि का उद्योग करते थे।....”⁽¹²⁾

ये असुरों के सहवासी कौन हैं? वस्तुतः ये सदान, नाग-असुर जैसी अनार्य जातियाँ थीं। छोटानागपुर का संक्षिप्त इतिहास में लिखा है - “...मुण्डा - उर्डों के आगमन के पूर्व छोटानागपुर में असुर नामक एक अनार्य जाति थी, जिसकी अपनी सभ्यता थी और अपना धर्म था। जब छोटानागपुर में बाहर से हिन्दू लोग आए तो असुर लोग अपने-अपने पेशों के अनुसार अनेक सदान जातियों में बंट गए। यों सदानों की बहुत सी जातियाँ अनार्य हिन्दू जातियाँ प्रतीत होती हैं। आर्य हिन्दू जातियों का पूर्वक

छोटानागपुर में प्रवेश तीन-चार शताब्दियों से अधिक की न होगी।”⁽¹³⁾ नवरंगी जी ने अनेक प्राचीन गढ़ों का उल्लेख कर सदानों का संबंध उससे स्थापित किया है -

“छोटानागपुर के अरण्यों और पहाड़ियों के सुरक्षित स्थानों में अब प्राचीन बस्तियाँ और गढ़ों के खण्डहर मिलते हैं। सोनपुर परगने में पुरनागढ़ एक स्थान है, जहाँ दित वंश का एक राजा था। कुछ दूर पेटी पहाड़ के नीचे एक दूसरा गढ़ था फिर कुछ दूर पर वीरता पहाड़ के निकट एक तीसरा गढ़ था। इस प्रकार के अन्य स्थान भी देखे जा सकते हैं। ये बस्तियाँ और गढ़ किनके थे?जिनके वंशज छोटानागपुर के देहाती गाँवों में बसने वाले सदान कहलाने वाले लोग हैं।”⁽¹⁴⁾

सदान मूलतः नाग जाति से संबंधित हैं और नाग जाति असुरों से। ये सभी अनार्थ थे। बी.एन. लूनिया ने इस संबंध में लिखा है - “प्राचीन भारत में नाग के उपासक लोग अनार्थ थे और देश के विभिन्न भागों में फैले हुए थे। इनके अपने राज्य थे।”⁽¹⁵⁾ ये नाग राजा शैव धर्म के अनुयायी थे।⁽¹⁶⁾

नाग जाति के अनार्थ होने की पुष्टि दिनकर ने भी की है - “पुराणों में यक्ष, राक्षस, विद्याधर, नाग, किरात आदि लोगों का उल्लेख है, वह स्पष्ट ही आर्यतर जातियों के अस्तित्व की सूचना देता है।”⁽¹⁷⁾ दिनकर ने सिंदूर प्रसंग का उल्लेख कर इसको प्रमाणित किया है सिंदूर की परम्परा नागों से ही आर्यों तथा अन्य जातियों में आयी है।

“सिंदूर का न तो कोई वैदिक नाम है और न सिंदूर दान का कोई मंत्र। सिंदूर मूलतः नाग लोगों की वस्तु है इसका नाम भी नागगर्भ और नागसंभव है।”⁽¹⁸⁾

कतिपय इतिहासकारों ने नागों को असुरों की शाखा कहा है - “डॉ. बनर्जी-शास्त्री के अनुसार नाग असुरों की एक शाखा है जो एच. एच. विल्सन के विचार में भारत के वैदिक विरोधी लोग थे और इसलिए गैर आर्य।नाग जो असुरों में सुसभ्य थे भारत में असुर जातियों के अग्रगामी और रीढ़ थे। जरासंघ मगध के असुर राजा को नाग समूह का माना गया है। (तब झारखण्ड मगध के अन्तर्गत आता था)।”⁽¹⁹⁾ लेकिन मानगोविन्द बनर्जी ने नागवंशी महाराजाओं को मुण्डा बताते हुए लिखा है - वर्तमान छोटानागपुर महाराजा के पूर्वज प्राचीन मुण्डा जाति पर अपने को प्रधान के रूप में स्थापित कर लिए दीख पड़ते हैं, जो इस समय देश में रह रहे थे। यह विचार करीब-करीब ठीक लगता है।⁽²⁰⁾ पुनः वे आगे बताते हैं - छोटानागपुर महाराजा (नागवंशी) मुण्डा खानदान के हैं। कैप्टन जी.सी. डिपरी ने 1868 में शायद पहले व्यक्ति थे जिन्होंने यह निश्चय

कहा कि छोटानागपुर महाराजा का परिवार नागवंशी, मुण्डा है।⁽²¹⁾

'झारखण्ड के सदान' में डॉ. केशरी ने एस.सी. राय का उल्लेख करते हुए मुण्डाओं, असुरों तथा नागों के मध्य संघर्ष कर मगध में पैठने का उल्लेख किया है।

शिशुनाग वंश के कमज़ोर होने पर मुण्डाओं ने असुर एवं शिशुनाग वंश के शासकों से संघर्ष कर मगध क्षेत्र में जिसके अन्तर्गत छोटानागपुर भी था 600 ई.पू. प्रवेश किया।⁽²²⁾ डॉ. केशरी ने आगे लिखा है - "जब इस क्षेत्र में शिशुनाग वंश के राजाओं के अधीन असुरों का प्राधान्य था तब मुण्डाओं का प्रवेश हुआ। असुरों से संघर्ष के समय शिशुनाग वंश के राजाओं ने उन्हें (मुण्डाओं को) संरक्षण दे कर अपने साथ बसाया।संभवतः शिशुनाग वंश के राजाओं की छत्र छाया में मुण्डाओं ने पहली बार मगध क्षेत्र में जंगल काट कर खेती के लिए जमीन तैयार की। इसलिए जंगल काट कर जमीन बनाने की क्रिया को वे (मुण्डा) 'मगद' (मगध) कहने लगे।"⁽²³⁾

मुण्डाओं की लोक कथाओं में नागों द्वारा मुण्डाओं की सुरक्षा के कई उदाहरण मिलते हैं। इनके नाग गोत्र की उत्पत्ति कथा में भी इसकी चर्चा हुई है।⁽²⁴⁾ तभी डॉ. केशरी आगे स्पष्ट करते हैं - "मुण्डाओं के पुरखे नाग जाति के सान्निध्य में ही रहते आये हैं। जाति परम्परा भाषा एवं स्थानों के नामकरण में भी इनके सान्निध्य की छाप अब तक प्रत्यक्ष हैं। इसके अतिरिक्त इन सभी क्षेत्रों में नाग पूजा या मनसा पूजा की सुदीर्घ परम्परा दिखाई देती है।"⁽²⁵⁾

नागवंश के लेखक राय प्रद्युम्न सिंह ने 'नाग परिचय' में नागों को अति प्राचीन देव श्रेणी में परिगणित किया है - "पुराण ग्रंथों के अनुसार नागों की उत्पत्ति सृष्टि के आदिकाल में कशयप द्वारा हुई थी। ये नागण मनुष्य थे, परन्तु अपने उत्कृष्ट गुण, कर्म और स्वभाव के कारण इन लोगों ने देवत्व पद प्राप्त किया था। पुराणों में जहाँ कहीं देवताओं के वर्णन आए हैं, वहाँ नागों के नाम भी उनके साथ ही लिये गए हैं, जैसे - देव, दानव, नाग, यक्ष, गन्धर्व आदि। यही नहीं वरन् पुराणों में स्पष्ट रूप से नागों का देवताओं के रूप में उल्लेख हुआ है। इन नागों के संबंध भी अन्य देव कोटि की भाँति देव, दानव, और मानवों से होते थे। क्योंकि पूर्व समय में इनमें परस्पर विवाहादि संबंधों की प्रथा प्रचलित थी।"⁽²⁶⁾

नाग कन्याएँ अति सुन्दर होती थीं। इनकी सुंदरता से आकर्षित हो कर अनेक आर्यों ने नाग कन्याओं से विवाह किये। इसके उदाहरण भरे पड़े हैं। नागों और आर्यों के रक्त मिश्रण का यह कारण बना। कतिपय इतिहासज्ञ, विद्वान्, तथा डॉ. केशरी भी नागों को आर्यों की शाखा ही एक

मानते हैं। ए.सी. दास कृत ऋग्वैदिक इंडिया के अनुसार नाग जाति मूलतः आर्यों का एक कबीला था।⁽²⁷⁾ लेकिन नागों की प्रकृति व संस्कृति के अवलोकन से ये अनार्य ही प्रतीत होते हैं। इनके इष्ट देव महादेव (शिव) में अनार्यपन विद्यमान है। इनकी वेश-भूषा, रहन-सहन, खान-पान व स्वभाव अनार्यों की है। वे अपने आभूषणों व श्रृंगार में नागों को भी धारण करते हैं। डॉ. राम दयाल मुण्डा के मतानुसार - “वस्तुतः शिव एक आदिवासी देवता है। आदिवासी सभ्यता के ही अवशेष के रूप में सिन्धु घाटी की खुदाई में उपलब्ध शिव जैसी मूर्ति पशुओं से धिरी मिलती है। शिवजी का पशुपति नाम इसी कारण से है। उनकी वेश-भूषा आदिवासियों की तरह है। वे राक्षसों, वानरों, असुरों और दानवों के पूर्वज माने जाते हैं।”⁽²⁸⁾

डॉ. राम खेलावन पाण्डेय ‘इतिहास की एक खोई कड़ी’ में भी लिखते हैं - “नाग, असुर, दानव, राक्षस और दैत्य का तो ऐसा मिश्रण हुआ है कि वे कालान्तर में पर्याय जैसे हो गए।”⁽²⁹⁾ डॉ. पाण्डेय ने आगे लिखा है - “विभिन्न जातियों और कबीलों के साथ नाग रक्त का समिश्रण होता चला गया। असुर, पिशाच, यक्ष और किन्नर के साथ इनका वर्णन देख लोगों ने इन्हें आर्यतर जनजाति के अन्तर्गत परिगणित करने का आग्रह प्रकट किया।”⁽³⁰⁾

पूरा झारखंड नागप्रिय शिव या महादेव स्थली रही है। इसी से पूरे झारखंड में झारखंडी महादेव, बूढ़ा महादेव, बुचा महादेव, केतुंगा महादेव, टांगीनाथ महादेव आदि सर्वत्र मिलते हैं।

नाग जाति दाढ़ी मूछ रखते थे, शरीर को अनेक रंगों से रंगते थे, वे प्रायः नन रहते थे, केशों को सर्पकृति में बांधते थे तथा नावों का प्रयोग नाग फण की शीर्षकृति में करते थे। जल विहार के वे शौकिन थे।⁽³¹⁾ डॉ. पाण्डेय मानते हैं - कश्यप गोत्रीय सदान नागवंशी (नाग जाति के) होते हैं।⁽³²⁾ डॉ. विमला चरण शर्मा ने भी नागों को अनार्य पक्ष में ही देखा है - “नागवंशी स्वयं उच्च कोटि की आर्य संस्कृति के वाहक नहीं थे।”⁽³³⁾

जनमेजय का नाग यज्ञ तथा मैं दिल्ली हूँ, दूरदर्शन धारावाहिक में भी नागों को अनार्यों के रूप में ही चित्रित किया गया है। ‘नागवंश’ के लेखक ने असुर वंश को नागवंश की शाखा के रूप में उल्लेख किया है - “यदि अग्निवंश, ऋषिवंश और असुरवंश भी माने जायें तो वे नागवंश के अन्तर्गत आ जाते हैं। अग्निवंश आदि नागवंश की शाखाएँ हैं।”⁽³⁴⁾ इन्होंने असुर और नागों की एकता की भी चर्चा की है - “राजा बलि भारत से एशिया में गये। उस समय असुरवंश के अतिरिक्त नागवंशियों का भी

बहुत बड़ा जनसमूह उनके साथ गया था।भारत में चार राजवंशों की प्रतिष्ठा हुई थी अर्थात् सूर्यवंश, चन्द्रवंश, नागवंश और असुरवंश। ”⁽³⁵⁾

ऐसे ही प्रसंगों के कारण नागों को आर्यों के रूप में देखा गया होगा। प्रायः देखा गया है, सामान्य जाति से कोई राजा बन जाता है तब वह अपने को बड़ा प्रमाणित करने के लिए राजपूत या क्षत्रिय घोषित कर लेता है और उन्हीं से वैवाहिक संबंध स्थापित करने लगता है ऐसा करना इनका आडम्बर ही माना जाएगा। क्योंकि “सर्प पूजा प्रमुखतः गैर आर्य आदिवासियों की है और इस तरह सर्प पूजक नागवंशी आर्य नहीं हैं।”⁽³⁶⁾ आज भी नागवंशी व नाग जाति के सदान नाग पंचमी तथा मनसा पूजा करते हैं।

वस्तुतः नागपूजा या सर्प पूजा के पीछे ऐतिहासिक कारण रहे हों। संभव है आदि मानव का कोई कबीला घने जंगलों में नागों के छिपे होने, उसके अचानक डसने तथा उससे तत्काल मृत्यु होने से भयभीत रहा हो। उसके बच्चाव का कोई रास्ता उनके पास तब नहीं था। नितांत वे उस भयानक शक्ति के आगे झुक गये और उसकी पूजा कर उससे बचने की धारणा पाल बैठे हों। नागों की पूजा करते देख अन्य कबीले उन्हें नाग पूजक जाति या नाग जाति से संबोधन करने लगे हों या वे अपने को नाग जाति के रूप में व्यक्त करते रहे हों। जिस प्रकार आदिम मानव प्राकृतिक शक्तियों के सुप्रभाव या कुप्रभाव से प्रभावित हो कर उसे पूज्य मान बैठा, उसकी विनाशक शक्ति से मुक्ति के लिए या सहायक शक्तियों को बनाए रखने के लिए। इसी से सूर्य, अग्नि, जल, पवन, वर्षा, पर्वत, नदी, भूमि, वृक्ष, पशु, पक्षी, जीव विशेष आदिदेव मान लिए गये हों। इसी क्रम में नाग भी सम्मिलित हुए होंगे किसी कबीले के लिए अथवा ऐसा भी संभव है जैसा कि लोक कथाओं में वर्णित है किसी नाग सर्प द्वारा किसी व्यक्ति या शिशु की रक्षा सोते में जाने-अनजाने हो गई हो तो उसके लिए या उस परिवार के निमित्त नागों का महत्व विशिष्ट हो गया हो और वह अपने को नाग प्रिय, नाग जाति, नागवंश, नाग गोत्र जैसे विशेषण व संज्ञा मान लिया हो।

बिमलेश्वरी सिंह (डॉ. कुमार सुरेश सिंह की पत्नी) ने नागों को वनवासी के रूप में वर्णन किया है - “असुर, राक्षस और नागों में नाग जंगलों के वासी थे। ये जंगलों में रहने वाली शांतिप्रिय जाति के लोग थे।ये नाग जाति के लोगों की कठिन यंत्रणाएँ तब देखी गईं, जब इनके दुश्मन (आर्य) जंगलों को जलाकर जमीन हासिल करने लगे।”⁽³⁷⁾ ये नागवंशी अपने को कश्यप गोत्र का मानते हैं।⁽³⁸⁾

नाग जाति भारत तथा झारखण्ड की एक अति प्राचीन एवं

प्रभुत्व-सम्पन्न प्रतिष्ठित एवं व्यवस्थित जाति रही है। इनका सामूहिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संगठन ही सदान समाज में परिणत हुआ। डॉ. केशरी के शब्दों में कहा जाए तो - आज से कम से कम दो हजार साल पहले तेजस्वी नाग जाति और उनसे संबद्ध लोगों के केन्द्रीय दल (कोर ग्रुप) का व्यक्तित्व सांस्कृतिक वैशिष्ट्य इसी परिवेश में विकसित होकर सदान समाज की आधारशिला बनी होगी।⁽³⁹⁾ इन्होंने अपनी कल्चरल झारखण्ड पुस्तक में लिखा है - "Recent researches tend to prove that historically the Sadans are the local representatives of the extensive group of the different Kabilas (Ethnic group) and communities of the Nag-Jati. Like Kinnar, Gandharwa, Yakchha, Nishad, Kol and Kirat, the Nag Jati was a prominent race of ancient India. Unfortunately their history, a precious chapter of Indian history, is lost in oblivion."⁽⁴⁰⁾

फा. नवरंगी ने सदानों के अन्तर्गत - घासी, लोहार, तुरी (टोकरियाँ बनाने वाले), भोकता, अहीर, बिनकार (कपड़ा बुनने वाले), झोरा, केवटा, तेली, कुम्हार, मल्लार, रौतिया इत्यादि जातियों को परिणित किया है। जो अपने को सदान कहते हैं और अपनी बोली को सदानी नाम देते हैं।⁽⁴¹⁾

आगे फा. नवरंगी ने पुनः स्पष्ट करते हुए लिखा है - छोटानागपुर में पुराने समय से बसते आये हुए लोग अपने को सदान कहते हैं। बाहर से आधुनिक काल में आए हुए लोग नहीं। नागवंशी राजा दुर्जनशाल के उत्तराधिकारियों ने देश के अन्य भागों से विभिन्न लोगों को झारखण्ड में ला कर बसाया। उन्हें जारी दी गई। ये भी सदानों की भाषा संस्कृति को अपना कर सदान कहलाने लगे। पर यथार्थ सदान लोग इनके पहले के लोग हैं। क्योंकि 'सदान' शब्द का उद्गम 'सदा' शब्द से हुआ है और सदा से छोटानागपुर में रहते आए हैं।⁽⁴²⁾ नागपुरी भाषा के गहन शोधकर्ता यूरोपीय विद्वान् रेव. कोनराड बुकाट ने भी सदानों की भाषा नागपुरी को आर्यों के बहुत पहले की भाषा कहा है।

"If the archaic character of Nagpuri is conceded it throw's the advert in to Chotanagpur of Aryan colonists 'Sadan' far back in history.⁽⁴³⁾

नागपुरी साहित्यकार धनी राम बक्शी के विचार भी उपर्युक्त अधिग्राय की पुष्टि करते हैं। - सदानों का कोई लिखित इतिहास न होने के कारण यह कहा नहीं जा सकता कि ये कहाँ से आकर यहाँ (झारखण्ड) में बसे हैं। इसलिए यह अनुमान करना ही पड़ता है कि ये बहुत पुराने समय में जब इतिहास नहीं लिखा जाता था, तब से यहाँ आकर बस गये।⁽⁴⁴⁾

नागपुरी के भीष्म पितामह पं. योगेन्द्र नाथ तिवारी के कथनानुसार सदानों की प्राचीनता असंदिग्ध है। वे बतलाते हैं कि मुण्डा और उराँव के छोटानागपुर में आने से पहले यहाँ (झारखण्ड में) अवश्य कोई ऐसी भाषा थी जो सबल और सजीव थी। वह सर्वत्र प्रचलित भी रही होगी। तभी तो उराँव और मुण्डा लोगों ने नागपुरी को अपनी भाव अभिव्यक्ति का माध्यम बना लिया। वे (मुण्डा-उराँव) नागपुरी भाषा के क्षेत्र में आ गये। उनकी भाषा उन्हीं के बीच रह गई और पहले जो भाषा (नागपुरी) प्रचलित थी और उसे उन्होंने अपनाया। निदान उसका (सदानों का) साप्राज्य हो गया।⁽⁴⁵⁾

तिवारी जी ने पुनः आगे लिखा है - “इनके (मुण्डा-उराँव के) आने के पहले भी कुछ लोग रहे होंगे जिनके शब्दकोष में शंख, कोयल, कांची, सुवर्णरिखा, विष्णुपुर, चैनपुर आदि नाम थे। ये नामकरण उन्हीं ने किये। यदि इन नामकरणों के पहले मुण्डाओं का आगमन हुआ होता या इस भूखण्ड में सर्वप्रथम शक्तिशाली मानव वे ही होते तो उनके भाषा कोष के शब्द से नदियों और गाँवों के नामकरण किये जाते। मुण्डारी नामकरण राँची जिले के कुछ पहाड़ों का हुआ है (गाँवों का भी) जो खँटी इलाके में पड़ते हैं। अतएव यह निष्कर्ष निकालना पड़ता है कि नागपुरी बोलने वाले मुण्डाओं के आगमन के पूर्व इस भू-भाग में रहते थे।⁽⁴⁶⁾

यही कारण है कि मदरा मुण्डा के पोष्यपुत्र व अपने बेटे का नाम क्रमशः फणि मुकुट राय व मणि मुकुट राय (मटुक राय) मुण्डारी भाषा में न होकर सदानी में हुआ है। अनेक मुण्डा, उराँव, खड़िया आदि की मातृभाषा नागपुरी या सादरी (सदानी) हो गई है। इनके अधिकांश लोक गीत-कथा सादरी या नागपुरी में भरे पड़े हैं। यह प्रक्रिया सौ दो सौ साल की नहीं, लम्बे समय की प्रक्रिया है। लील खोरआ खेखेल के अधिकांश कुडुख समाज के गीत सादरी में हैं। इसका कारण है नागपुरी का राज भाषा होना, साथ ही साथ यह सम्पर्क की भाषा भी मुण्डा, उराँव, खड़िया आदि के लिए थी। राजभाषा की ओर उन्मुख होना पद-प्रतिष्ठा-पैसा पाने के लिए समीचीन प्रतीत होता है। जैसे आज भी आभिजात्य, अफसर, सम्पन्न आदिवासी भी अंगरेजी राजभाषा होने के कारण इस ओर अधिक संख्या में प्रवृत्त हो रहे हैं। बड़े-बड़े आदिवासी राजनेताओं के बच्चे भी मातृभाषा से मुक्त हो गये हैं और वे आज अंगरेजी व्यवहार-विचार में अंगरेजों की बराबरी करने लगे हैं।

आदिवासी जीवन में न केवल नागपुरी का भी प्रभाव हावी है बल्कि उनके जीवन में सदानों के अस्तित्व, उनसे तुलना, उससे काम लेने का आग्रह आदि प्रसंग इनके पारम्परिक गीतों में खूब हुआ है। खड़िया समाज

के वैवाहिक प्रसंग के गीत देखे जा सकते हैं जिसमें कन्या को वर के यहाँ सदानों की तरह ही विवाह संस्कार के लिए पहुँचाया जाता है अर्थात् बारात वर पक्ष के लोग नहीं कन्या पक्ष के लोग आते हैं तब बारात स्वागत के समय दोनों पक्षों में गीत-युद्ध चलता है। इसमें वर व कन्या पक्ष के लोग गीत गाते हैं -

ठकाय आलोऽले ठकाय आलोऽ ले
घाँसी मलार ओऽते ठकाय आलोऽ ले॥ (वर पक्ष)
तेरगोठोऽले, तेरगोठोऽले
घाँसी मलार ओऽते तेरगोठोऽले॥ (कन्या पक्ष) ⁽⁴⁷⁾

अर्थ - ठग कर लाये हैं, ठग कर लाये हैं घाँसी मलार जैसे घर में दे दिये हैं।

उपर्युक्त गीत में खड़िया समाज की तुलना घाँसी-मलार जैसी सदान जातियों से की गई है। इससे ज्ञात होता है कि इन जातियों से अपने को श्रेष्ठ मानते हैं।

एक दूसरे गीत में तेलिन (तेली जाति की महिला) से तिल तेल कोल्हू से पेरने के लिए कहा गया है -

कोल्हू काटू तेलेनिया, कोल्हू काटू।
बेहरा गाछा केर कोल्हू काटू तेलेनिया
घानी कुटू तेलेनिया घानी कुटू
रायमुली घानी केरा तेला कुटू।
तेला पेरू तेलेनिया तेला पेरू तेलेनियाँ
राय मुली घानी केरा तेला पेरू तेलेनियाँ॥ ⁽⁴⁸⁾

दूसरी जातियों में भी ऐसे गीत मिलते हैं।

इससे विदित होता है कि आदिवासियों के मध्य सदान प्रमुखता से उपस्थित थे। इनसे न केवल तुलना अपितु सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति भी सदानों से होती थी। जयपाल सिंह मरड़ गोमके ने 21 जनवरी 1939 के भाषण में कहा था - वे (आदिवासी) केवल खेती करना जानते हैं। खेती को छोड़ किसी भी दूसरे धंधे या कारबार में हाथ नहीं डालते। उनमें कोई दर्जी नहीं, लोहार नहीं, जोलहा नहीं, बढ़ई नहीं, न कोई सोनार है। वे खुद एक बैलगाड़ी नहीं बना सकते न समय पड़ने पर उसकी मरम्मत ही कर सकते हैं। उन्हें यह मालूम नहीं कि बैलगाड़ी से क्या मुनाफा होता है। उनके बैल मौजूद हैं पर उनसे तिजारती काम नहीं लिया जाता.... ⁽⁴⁹⁾ इससे यह स्पष्ट होता है सदान समुदाय समाज की सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते थे चाहे वे आदिवासी हो या सदान। ⁽⁵⁰⁾

झारखण्ड में सदान जातियों के राजाओं के गढ़ मिलते हैं जैसे -

हापामुनि मंदिर (धाघरा) से आगे लगभग पाँच किलोमीटर की दूरी पर तेलिया गढ़ का अवशेष सिर धुन रहा है। जहाँ की मिट्टी से पास-पड़ोस के लोग वर्षों से सोना धो रहे हैं। इस गढ़ के अवशेष में मिट्टी के गढ़ खपड़ों और मिट्टी के बर्तनों के टुकड़े मिलते हैं। एम.ए. नागपुरी के छात्रों के एक दल को क्षेत्रीय कार्य के लिए हमें ले जाने का अवसर मिला था। उस समय स्थानीय उराँव आदिवासियों ने इसे तेलियागढ़ बतलाया। यहाँ अनेक प्राचीन अवशेष प्राप्त हुए।

1838 में रचित नागवंशावली में वेणी राम महथा ने भी झारखण्ड के सदान (तेली) राजाओं का भी उल्लेख किया है -

उदयपुर सोणपुर नागपुर माहयते आय सब

तेते केते वरणि बखानिऐ

अमित उराँव मुण्डा गाँव गाँव ठाँव ठाँव

परहा प्रति रोहिदास सहिते आयो जानिऐ

परगना कोरांबो में तेलिआ नृपति

मारि रकसेल राजा रहे तेत पहिचानिऐ

वेणी भणे गणै कौन कोलह नवते आय घने।

मदरा महीप भवन भीर भरे मानिऐ॥58॥

सबहि जौर करि पंच करि पुछेठ मदरा वैन

नागवंश निजवंश सुत अहै युगल मम औन॥59॥

दुओं बराबरि पुत्र है यह सुतिआंबे माहि

केहिको राजा करहि सो पुछहि तुम सब पाहि॥60॥⁽⁵¹⁾

उपर्युक्त वर्णित काव्य से ज्ञात होता है कि कोराम्बे गढ़ में तेली राजा था और उराँव-मुण्डा गाँव-गाँव से मदरा मुण्डा के निर्मत्रण पर नये राजा के चुनाव में आये थे। रोहतास गढ़ से उराँव पड़हा राजा भी आए थे। सर्वाधिक लोकप्रिय कवि घासी राम ने भी “नागवंशावली झूमर” गीत संख्या 20 में मदरा मुण्डा द्वारा नये राजा के चुनाव प्रसंग में प्रजातांत्रिक चयन की पद्धति का चित्रण किया है -

अमित उराँव-मुण्डा आलै तेबार गे सजनी

ए साजैन सुतिआम्बेगढ़ बेसुमार गे सजनी

करे सनमान बहु मदरा भुआल गे साजैन

ए साजैन यथा योग्य कुल बेहवार गे साजैन।

जब दरहा डाँड़ परे बैठैं सब झार गे साजैन

ए साजैन पंच सब करहु बिचार गे साजैन

मम सुत नाग सुत युगल कुमार गे साजैन

ए साजैन भने घासी आनंद अपार गे साजैन॥60॥⁽⁵²⁾

फणि मुकुट राय ने महाराजा बनने पर अपने पालक पिता मदरा मुण्डा के नाम पर “मदरा पांजी” (शासन तंत्र) बनवाया था जो आज तक प्रचलित है। धासी राम ने गीत संख्या 27 में इसकी चर्चा की है -

छीत भूत भुजा धजा लिखावलै मुण्डा राजा
हाल औ हुकुम दास काम सुरू धाम गोई
ख्यात है मदरा पांजी नाम।⁽⁵³⁾

महाराजा फणि मुकुट राय ने सब काम धाम, पूजा-पाठ, राज-काज आदि का नियम बनवाया जो मदरा पांजी के नाम से प्रसिद्ध है। महाराजा ने मुण्डा राज व्यवस्था को बनाए रखा और आगे भी बनाए रखने की घोषणा कर रखी थी।

उपर्युक्त विवेचन विश्लेषण एवं उध्दरणों से सदानों व नागजाति की प्राचीनता स्वयं सिद्ध हो जाती है। इसी से मूल सदानों की संस्कृति में अनार्यपन व आदिमपन के लक्षण आज भी विद्यमान हैं। पर्वतों, नदियों, वृक्षों के खुले परिवेश में महादेव माँड़ा, देवी गुड़ी, मुर्गे-बकरे आदि की बलि, हँडिया का तपान, कन्या मूल्य, कन्या पक्ष का वर के घर बारात आना, करम पर्व, सहिया, मदइत, पैँड्चा, धाँगर का पारिवारिक रिश्ता रखना, अतिथि का थाल में पाँव धोकर स्वागत करना, शाल पेड़ों का विवाह मँडप, अग्नि पर चलना (मंडा पर्व में), नागपूजा, मनसा पूजा, नृत्य, वाद्य एवं संगीत का स्वरूप आज भी यथावत सदानों में बना हुआ है।

सम्प्रति सदानों को दो वर्ग में बाँट कर देखा जा रहा है - आदिवासी और सदान। (कभी-कभी इसमें एक तीसरा वर्ग बाहरी का भी जोड़ दिया जाता है।) सदानों को चार वर्ग में बाँट कर देखना समीचीन होगा। पहला वर्ग है - ठेठ सदानों का जो सदा से झारखण्ड में रहते आ रहे हैं। इनके कहीं से आ बसने का इतिहास नहीं मिलता। जिसकी संस्कृति में आदिमपन बना हुआ है। ये सदा से रहते आने के कारण सदान हैं। इसे सदावासी भी कहा जाने लगा है। मूलतः इस वर्ग के ये सदान तो अधोषित आदिवासी ही हैं। इन्हें तो अनादिवासी कहना समीचीन होगा क्योंकि ये सदान अनादि काल से झारखण्ड में रहते आ रहे हैं। इनके गोत्र नाग बाघ, पँडकी, कश्यप आदि हैं और कश्यप गोत्रीय भी नाग जाति से संबंध रखते हैं। इन्हीं सदानों की कुछ जातियों को अनुसूचित जनजाति में (आदिवासी में) रखा गया है शेष को छोड़ दिया गया है। यही वर्ग आदिवासी की लड़ाई लड़ रहा है। ये शासकों का समाज को बाँटों, लूटो और शासन करो की चाल का परिणाम है।

दूसरा वर्ग वह है जो यहाँ के तत्कालीन शासकों द्वारा बाहर के लोगों को जागीर देकर बसाया गया है। ये सदानों की भाषा-संस्कृति अंगीकार

कर चुके हैं। मात्र अपने घर-परिवार में ये अपनी भाषा-संस्कृति का प्रयोग जीवित रखते हुए हैं। बाहर से ये पूर्णतः सदानों से घुल-मिल गए हैं। विशेषकर बंगाली-उड़िया आदि में यह प्रवृत्ति दिखाई पड़ती है। इन्होंने नागपुरी भाषा-साहित्य-संस्कृति के विकास के लिए अपनी मातृभाषा से अधिक बढ़-चढ़ कर काम किया है।

तीसरा वर्ग स्वतः व्यवसाय व रोजगार के निमित्त यहाँ आ बसा है। ये यहाँ की भाषा नागपुरी आदि को आत्मसात कर लिए हैं परन्तु संस्कृति अपने मूल क्षेत्र की बनाए हुए हैं। इनकी संस्कृति में तिलक दहेज की प्रथा बनी हुई है। पूजा-पाठ व पर्व-त्योहार में ये अपने मूल क्षेत्र की ही संस्कृति अपनाये हुए हैं। जैसे - मघाइया, कन्नौजिया आदि।

चौथे वर्ग में वे लोग आते हैं जो आजादी के पूर्व या पश्चात नौकरी, प्रशासन, व्यवसाय व जीविका के लिए आ बसे हैं। इनकी न सदानों की भाषा है न संस्कृति। ये सदानों से घुल-मिल नहीं सके हैं। इस तरह अनुमानित प्रथम वर्ग शत प्रतिशत, द्वितीय वर्ग 75 प्रतिशत, तृतीय वर्ग 50 प्रतिशत और चतुर्थ वर्ग शून्य प्रतिशत सदान ठहरते हैं।⁽⁵⁴⁾

डॉ. कुमार सिंह (भा.प्र.से.) ने सदानों के इस विभाजन को सही माना और इन्होंने इसका विस्तार करने का सुझाव दिया है।

सदानों का इतिहास या इसके बारे प्रायः लिखा ही नहीं गया है। इसकी घोर उपेक्षा हुई है और अभी भी हो रही है। ज्ञारखण्ड की दो आँखों में एक आदिवासी और दूसरा सदान हैं। इतिहासकार, विदेशी-देशी लेखक, प्रशासक आदि ने प्रायः इन दो आँखों में एक में काजल और दूसरे में कालिख ही लगाने का काम अब तक किया है। सदानों पर मात्र बड़ाईक ईश्वरी प्रसाद सिंह (संपादक ज्ञारखण्ड 1937) धनी राम बकशी (संपादक बड़ाईक) फा. पीटर शांति नवरंगी - (संपादक सत्संग) पं. योगेन्द्र नाथ तिवारी (संपादक नागपुरी) डॉ. वी.पी. केशरी (संपादक जय ज्ञारखण्ड), डॉ. अनुज (संपादक छोटानागपुर संदेश), गिरिराज (संपादक पद्मरा) आदि में छिपुट लेख मिलते हैं। डॉ. केशरी की एक मात्र पुस्तक इस विषय पर 'ज्ञारखण्ड के सदान' है। इस पर गहन अनुसंधान की आवश्यकता है। ठेठ सदान राजनीतिक अधिकारों व सरकारी सुविधाओं से वंचित है। इनका सारा लाभ अन्य ले जाते हैं। इसी से इन सदानों की स्थिति यथावत बनी हुई है। आदिवासी आरक्षण की सुविधा प्राप्त कर प्रायः थोड़े बहुत सभी पदों पर आ गये हैं परन्तु अनादिवासी सदान तो पूर्णतः पिछड़े, दबे, छूटे एवं वंचित रह गए हैं।

मदरा मुण्डा तथा मुण्डा इतिहास की चर्चा मूल नाटक में प्रस्तुत है। इसके लिए डॉ. सेम तोपनो का कुर्सीनामा, मान गोविंद बनर्जी का एन-

हिस्टोरिकल आउट लाइन आफ प्रि ब्रिटिश छोटानागपुर, ब्रैडली बर्ट का छोटानागपुर ए लिटिल नोन प्रेविन्स ऑफ द इम्पायर, एस.सी. राय का मुण्डाज एण्ड देयर कंट्री, मनोहर हंस (मरडहादा) का मुण्डा लीजेण्ड (पाण्डुलिपि) आदि से भरपूर सामग्री ली गई है। मुण्डा इतिहास बार-बार लिखा जाता रहा है इसी से इनके प्रसंग नाम विस्मृत नहीं हुए हैं। नाग जाति का (झारखण्ड क्षेत्र में) इतिहास लिखा न होने के कारण इसके नाम विस्मृत हो गए हैं। इसी से नाटक में “नाग राज” का प्रयोग हुआ है जैसे जयशंकर प्रसाद ने ध्रुवस्वामिनी नाटक में शक जाति के राजा के लिए शकराज का प्रयोग किया है। ऐसी विस्मृति आदिवासियों में भी मुझे देखने को (जुलाई 2003) बंगला देश में मिली। वहाँ के आदिवासी झारखण्ड से 1855 के आसपास गये थे। लेकिन कोई अपने प्रथम आने वाले पुरखों का तथा कहाँ से आए थे उस स्थान का नाम बता नहीं सके। मात्र लिखित न होने के कारण वे डेढ़ सौ वर्षों में सब भूल गए। मुण्डा स्वयं को होड़ो-होड़ोको कहते हैं। होड़ो को हिन्दी में मुण्डा और नागपुरी में मुँड़ा कहा जाता है क्योंकि ये शब्द क्रमशः ‘मुण्ड व मुँड’ (सिर प्रधान अंग) से बना है। जो ग्राम प्रधान का द्योतक है मुण्डा व मुँडा। अतः इस नाटक में इसी क्रम से प्रयोग किया गया है। डॉ. राम खेलावन पाण्डेय का अनुमान है कि “वेदों में जिन्हें ‘माण्डूक्य’ कहा गया है कहीं वे ही तो ‘मुरुण्ड’ या ‘मुण्डा’ नहीं हैं?”⁽⁵⁵⁾ नाग दिशुम की चर्चा नाटक में हुई है। इसी से नागराज का प्रसंग आया है और इस लम्बी भूमिका की आवश्यकता हुई।

फणिमुकुट राय के जन्म-कथा की कई कथाएँ मिलती हैं। इनमें से कुछ निम्नांकित हैं -

- (1) छोटानागपुर के प्रथम राजा फणिमुकुट राय के बारे में कहा जाता है कि इनके पिता नाग थे तथा माता ब्राह्मणी - नागवंश पृ. 63
- (2) मदरा मुण्डा की बेटी और मिश्र देश से आये पादरी के बेटे के सेवक देवता आदमी (नाग) के प्रेम संबंध से उत्पन्न फणिमुकुट राय हुए थे। - मुण्डा लोक कथाएँ - पृ. 236-237
- (3) मदरा मुण्डा की बहन और बुधुवा नामक उर्ऱैव युवक के प्रेम संबंध से फणिमुकुट राय का जन्म हुआ था। - कुडुख कथा खीरी - पृ. 51-52
- (4) मदरा मुण्डा की बेटी पुड़ूंगी और नाग देवता के प्रेम संबंध से उत्पन्न फणिमुकुट राय हुआ। - मनोहर हंस (मरडहादा) की पाण्डुलिपि से।
- (5) मदरा मुण्डा की बहन और नाग जाति के युवक के प्रेम संबंध से फणिमुकुट राय का जन्म हुआ था। - डॉ. रामदयाल मुण्डा।
इन्हीं कथाओं में से एक कथा का प्लॉट इस नाटक में लिया गया है।

मदरा मुण्डा श्रुति नाटक लिखने के पीछे साहित्य, संस्कृति एवं इतिहास का समन्वय प्रस्तुत करना है। यह कृति साहित्य है इतिहास नहीं। फिर भी इतिहास दर्शन से मुक्त नहीं कहा जा सकता। यदि इस पुस्तक से इतिहास, झारखण्डी समरसता व आदिवासी-सदान की साझा संस्कृति जो धुंधली हो रही है उसे शक्ति व दृष्टि मिल सकी तो मेरी सृष्टि सार्थक हो सकेगी।

आभार -

श्रद्धेय डॉ. रामदयाल मुण्डा, डॉ. बी.सी. शर्मा, डॉ. श्रवणकुमार गोस्वामी, डॉ. बी.पी. केशरी, लाल रणविजय नाथ शाहदेव, शिव अवतार चौधरी आदि विद्वत् जनों ने इस कृति के लिए जो पुरोवाक, भूमिका, प्रस्तावना, प्राक्कथन, मन्तव्य आदि दिये हैं और इसका महत्व बढ़ाया है उनके प्रति मैं ऋणी हूँ, जिन्होंने सदैव मेरा उत्साह बढ़ाया है। भाई अशोक पांगल ने झारखण्ड का अमृतपुत्र : मरड गोमके जयपाल सिंह श्रुति नाटक का मंचन कर मुझे इस नाट्य कृति के लिए प्रेरित किया। इनके प्रति भी मैं आभार व्यक्त करता हूँ। इनके अतिरिक्त इस कृति के सृजन में जितने भी सुधीजनों के विचार मौखिक या पुस्तकीय रूप में प्राप्त हुए हैं उनके प्रति भी मैं आभारी हूँ जिनके बिना यह कृति पूर्ण नहीं हो पाती। प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष समस्त सहयोग-असहयोग के लिए भी आभार प्रकट करता हूँ। सुन्दर छपाई के लिए भुमेश कुमार ने अथक परिश्रम किया है अतः उसे मैं कैसे न स्मरण करूँ।

इत्यलम्

02-10-2003

गिरिधारी राम गौड़ 'गिरिराज'
रीडर, जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

स्रोत -

1. डॉ. दिवाकर - दृष्टि - अप्रैल-दिसम्बर 1989 - जय शंकर प्रसाद विशेषांक पृ. 133-134
2. मान गोविंद बनर्जी - छोटानागपुर की ऐतिहासिक रूप रेखा - राँची - 2000 पृ. 63 (अनुवादक - प्रो. रामवृक्ष सिंह)
3. श्रवण कुमार गोस्वामी - हस्तक्षेप - पृ. 94-95
4. ईश्वरी प्रसाद सिंह - झारखण्ड - नवम्बर 1937, गुमला - पृ. 8-9
5. डॉ. राम कुमार तिवारी - झारखण्ड का भूगोल - नई दिल्ली - 2001- पृ. 139
6. डॉ. राम कुमार तिवारी - झारखण्ड का भूगोल - नई दिल्ली - 2001 - पृ. 161
7. बी.एन. लूनिया - प्राचीन भारतीय संस्कृति - आगरा - 1977-पृ. 635
8. बी.एन. लूनिया - प्राचीन भारतीय संस्कृति - आगरा - 1977-पृ. 639
9. परिषद पत्रिका - जुलाई 1973 - पटना - डॉ. बी.पी. केशरी का लेख - पृ. 85
10. एस.सी. रौय - जे.बी.ओ.आर.एस.आई. - पृ. 587 बिहार डिस्ट्रीक्ट गजेटियर्स - राँची - एन. कुमार - पटना - 1970
11. एस.सी. रौय - जे.बी.ओ.आर.एस.आई. - पृ. 587 बिहार डिस्ट्रीक्ट गजेटियर्स - राँची - एन. कुमार - पटना - 1970
12. पीटर शांति नवरंगी - नागपुरिया सदानी बोली का व्याकरण - राँची - 1965 - पृ. - 7
13. पीटर शांति नवरंगी - छोटानागपुर का संक्षिप्त इतिहास - राँची 1948 पृ. - 21
14. डॉ. गिरिधारी राम गाँझू 'गिरिराज' - पीटर शांति नवरंगी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व - राँची - 1990 - पृ. 3
15. बी.एन. लूनिया - प्राचीन भारतीय संस्कृति - आगरा - 1977- पृ. 500
16. बी.एन. लूनिया - प्राचीन भारतीय संस्कृति - आगरा - 1977- पृ. 502
17. रामधारी सिंह दिनकर - संस्कृति के चार अध्याय - इलाहाबाद - 1997 - पृ. 31
18. रामधारी सिंह दिनकर - संस्कृति के चार अध्याय - इलाहाबाद - 1997 - पृ. - 75
19. मान गोविंद बनर्जी - छोटानागपुर की ऐतिहासिक रूप रेखा - राँची - 2000 पृ. 6
20. मान गोविंद बनर्जी - छोटानागपुर की ऐतिहासिक रूप रेखा - राँची - 2000 पृ. 10
21. मान गोविंद बनर्जी - छोटानागपुर की ऐतिहासिक रूप रेखा - राँची - 2000 - पृ. 51
22. डॉ. बी. पी. केशरी - झारखण्ड के सदान - राँची - 1992 - पृ. 30
23. डॉ. बी. पी. केशरी - झारखण्ड के सदान - राँची - 1992 - पृ. 30
24. जगदीश त्रिगुणायत - मुण्डा लोक कथाएँ - राँची - 1968 - पृ. 71-72 नाग गोत्र - 2 (लोक कथा)
25. डॉ. बी. पी. केशरी - झारखण्ड के सदान - राँची - 1992 - पृ. 34
26. राय प्रद्युम्न सिंह - नाग वंश - द्वितीय भाग - खैरागढ़ (म.प्र.) 1951 - पृ. - 5
27. राय प्रद्युम्न सिंह - नाग वंश - द्वितीय भाग - खैरागढ़ (म.प्र.) 1951 - पृ. 32
28. डॉ. राम दयाल मुण्डा - आदिवासी अस्तित्व और झारखण्ड अस्मिता के सवाल - नई दिल्ली 2002 - पृ. 17

29. योगेन्द्र नाथ तिवारी - नागपुरी भाषा का संक्षिप्त परिचय - राँची - 1970 पृ. - 13
30. डॉ. राम कुमार तिवारी - झारखण्ड का भूगोल - नई दिल्ली - 2001- पृ. 11
31. डॉ. राम कुमार तिवारी - झारखण्ड का भूगोल - नई दिल्ली - 2001- पृ. 7 एवं 11
32. डॉ. राम कुमार तिवारी - झारखण्ड का भूगोल - नई दिल्ली - 2001- पृ. 17
33. डॉ. विमला चरण शर्मा - छोटानागपुर का भूगोल - नई दिल्ली - 1997 - पृ. 133
34. राय प्रद्युम्न सिंह - नाग वंश - द्वितीय भाग - खैरागढ़ (म.प्र.) 1951 - पृ. 11
35. राय प्रद्युम्न सिंह - नाग वंश - द्वितीय भाग - खैरागढ़ (म.प्र.) 1951 - पृ. 64
36. मान गोविंद बनर्जी - छोटानागपुर की ऐतिहासिक रूप रेखा - राँची - 2000 - पृ. 52
37. विमलेश्वरी सिंह - नागवंश : मिथक, इतिहासऔर लोक साहित्य - नई दिल्ली - 2003 - पृ. 26
38. विमलेश्वरी सिंह - नागवंश : मिथक, इतिहासऔर लोक साहित्य - नई दिल्ली - 2003 पृ. 25
39. डॉ. बी. पी. केशरी - झारखण्ड के सदान - राँची - 1992 - पृ. 71-72
40. बी.पी. केशरी - कल्चरल झारखण्ड - राँची - 2003 पृ. 49
41. पीटर शांति नवरंगी - नागपुरिया सदानी बोली का व्याकरण - राँची - 1965 - पृ. 7
42. डॉ. गिरिधारी राम गाँझू 'गिरिराज' - पीटर शांति नवरंगी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व - राँची - 1990 - पृ. 7-8
43. रेव. कोनराड बुकाउट - ग्रामर ऑफ दि नागपुरिया सदानी लैंग्वेज - राँची - 1906 - (पाण्डुलिपि) पृ. 4
44. आदिवासी - स्वतंत्रता दिवस अंक 1977 - नागपुर और नागपुरी लेख - धनी राम बकशी - पृ. 48-52
45. योगेन्द्र नाथ तिवारी - नागपुरी भाषा का संक्षिप्त परिचय - राँची - 1970 - पृ. 21
46. योगेन्द्र नाथ तिवारी - नागपुरी भाषा का संक्षिप्त परिचय - राँची - 1970 - पृ. 26
47. फा. जोवाकिम डुंगडुंग - खड़िया जीवन और परम्पराएँ - राँची 1999 - पृ. 150-51
48. फा. जोवाकित डुंगडुंग - खड़िया जीवन और परम्पराएँ - राँची 1999 - पृ. 156
49. जुलियस तिग्गा - आदिवासी महासभा विशेषांक - मार्च 1939 - पृ. 53
50. डॉ. गिरिधारी राम गाँझू 'गिरिराज' - झारखण्ड का अमृतपुत्र : मरड गोमके जयपाल सिंह - राँची - 2001 पृ. 58
51. वेणी राम महथा - नागवंशावली - बम्बई - 1876 पृ. 72
52. घासी राम - नागवंशावली झूमर - (हस्तलिखित) गीत सं. 20
53. घासी राम - नागवंशावली झूमर - (हस्तलिखित) गीत संख्या - 27
54. राँची एक्सप्रेस - 28-29-30 अगस्त 2001 - झारखण्ड के सदान कौन? - गिरिराज - एवं प्रभात खबर - राँची - 20.10.2003
55. योगेन्द्र नाथ तिवारी - नागपुरी भाषा का संक्षिप्त परिचय - राँची - 1970 - पृ. 8



श्रुति नाटक

नागपुरी खण्ड

महाराजा मदरा मुण्डा

पृष्ठभूमि – झारखण्ड कर ऐतिहासिक नाटक। धरती कर पहिल भूमि झारखण्ड। आदि मानव कर जनमेक आउर उकर विकास कर कहनी। सभ्यता आउर संस्कृति बनेक कर घटना। जुदा-जुदा कबीला बनेक, उमनक रहेक ठाँव, उमनक एक ठाँव छोइड़ के दोसर-दोसर ठाँव में जाए बसेक तले उमनक फिन से झारखण्ड में आए बसेक इतिहास। मुँह जबानी इतिहास। पुरना गड़ाल, उटकाल, भेटाल चीज मनक देखल से पता लागल इतिहास। नवाँ शोध से बनार लागल इतिहास। लोक गीत, लोक कथा मनक अलौकिकता के लौकिक रूपे बताल। कल्पना कर टेका लेल महाराजा मदरा मुँडा नागपुरी श्रुति रंग (सुनेक-देखेक) नाटक लोक-नाट्य शैली में प्रस्तुत।

- | | |
|-------|---|
| काल | - झारखण्ड कर आदि मानव काल से फणि मुकुट राय कर महाराजा बनेक तक। |
| पात्र | - नटकरवा - मरडबुरू,
नटकरनी - सोबरनखा,
रिसा मुँडा,
पहान,
दिगवार,
नागदूत,
नागराज,
नाग सरदार,
चिता,
पाण्डुनाग,
युद्धिष्ठिर दास,
मदरा मुँडा,
चिंतामणि (मदरा महारानी),
फणि मुकुट राय,
मानकी,
मुखिया
भीड़ तथा नृत्य दल। |
- नाटक में लेल दुइ मुण्डारी लोकगीत जगदीश त्रिगुणायत कर
'बाँसरी बज रही' पुस्तक से सभार।

महाराजा मदरा मुँडा

नज़ीर एक - अंधार से इंजत

- (आए के) आँह! ई अपार भीड़ का ले? जरूर नटकरवा कोनो नवाँ नाटक खेलत होइ। कोन नाटक के खेली? झारखण्ड राइज कर उगेक दिन में।
- (खोजते आए के) तोँहैं हिजा आहिस नटकरनी। आउर मोँहैं तोके ना जाइन कने-कने दाइन बुलत हों।
- से का ले भला?
- ले, जइसे तोके कोनो बनारे नखे! तोहें तो कइह रहिस, झारखण्ड बनेक दिन हामरे मन 'महाराजा मदरा मुँडा' नाटक खेलब।
- अरे हैं! मोँहैं तो झारखण्ड कर नवाँ बेइर उगी से खुसी में उके तो बिसराइए गेलों। आइझे कर दिन ले नि तेयारी रहे। पहें ई बिसरेक में मोर का दोस?
- दोस तोर नखे! दोस तो आइझ कर व्यवस्था कर हेके।
- आउर निहीं तो का? देखत नखिस! नवाँ झारखण्ड राइज उगत हे आइझ कर आधा-आधी राइत के! जतना अवइया-जवइया आहैं, सउब कर उपरे कडा नज़ीर राखल जात हे। उमनके रोकल-टोकल जात हे।
- से हे ले तो गोटे राइज में साडा माइर दे हे। चाइरो चगुरदी डहर चउराहा मन में सिपाही-पलटन मनक फउद तैनात आहैं।
- फिन ई भीड़ हिजा का लखे आए गेलक?
- ई भीड़ का नियर आलक? जानिस? जे राजभवन ठिन जतरा लगाएक आए रहें उमनके पलटन-सिपाही मन कुदाए देलैं।
- आउर उमन सउब हिजा आए बइठलैं!
- खाली एहे बात भइर ले निहीं। ई भारी भीड़ अदमी मनके बनार रहे आइझ कर नाटक खेला कर। पहें झारखण्ड राइज बनेक बादे।
- तभें इमन के झारखण्ड कर पहिल महाराजा मदरा मुँडा नाटक कर खेला टाइन लाइन हे, बेरा ले आगुवे।

- नटकरवा - इसन महारजा ना कहियो हो हे ना कहियो होवी। ई झारखण्ड में कतना राजा-महाराजा आलै आउर गेलै। पहें महाराजा मदरा मुँडा कर नाँव तो सउब ले उपरे बाजल आहे आउर बाजत रही।
- नटकरनी - पहें अदमी मन तो मदरा मुँडा कर नाटक देइख के आँइख के सुख देक ले आ हैं, एतना-एतना अदमी मन। तो लेवै देखात ही आइझ कर झारखण्ड राइज कर शपथ ग्रहण दिना
- नटकरवा - महाराजा मदरा मुँडा नाटक कर खेला, (अचके नटकरनी मुँह लरकाए लेल) अरे! अचके तोके का होए गेलक? मुँह के का ले मनहुँवाए देले?
- नटकरनी - (उदास होए के) सोचत हों, महाराजा मदरा मुँडा कर इतिहास तो अहत पुराना आहे। इके बताइ के?
- नटकरवा - बताइ के! बताइ भूगोल-इतिहास आउर लोक जिनगी कर साक्षात् देखइया मरडबुरु आउर सोबरनखा।
- नटकरनी - पहें मरडबुरु-सोबरनखा कर बात के, के पतियाइ भला? कह तो!
- नटकरवा - के पतियाइ! जे आपन लोक कथा के, लोक गाथा के, लोकगीत के, लोक साहित के, लोक जिनगी के, लोक संस्कृति के जानेल, मानेल आउर पतियाएल से!
- नटकरनी - आउर जे लोक साहित के, नि जानेल, पतियाएल, से का लखे भला, पतियाइ?
- नटकरवा - जे नि पतियाइ तो देशी-विदेशी विद्वान, इतिहासकार, मानवविज्ञानी, शोधकर्ता मनक किताब पढ़ लेइ कि इमन का बता हैं झारखण्ड कर इतिहास।
- नटकरनी - मोगल और अंगरेज मन तो आपन हिसाब से इतिहास लिख हैं आउर लिखुवाबो घाझर हैं।
- नटकरवा - से तो नगदे कहत हिस नटकरनी। पहें हिजा कर पुरना उटकाल, पवाल साबूत मन आउर इतिहासकार मनक बताल बात मन में कहों तालमेल आहे?
- नटकरनी - से तो नखे!
- नटकरवा - तहयो इतिहासकार मनक लिखल बात कर तजबीज करले सुपट बात तो पता लागिए जाएल। सच कहबे नटी तो झारखण्ड कर इतिहास ईमानदारी से, एक ओर ले, सरियाए के, एखनो तक, ना

लिखल जा हे, ना तो पुरातत्व कर पूरा-पूरी खोज करल जा हे।

नटकरनी - तड़यो कोन-कोन किताब के पढ़ले-गुनले मदरा मुँड़ा कर आउर झारखण्ड कर पुरना इतिहास लवकेक लागी। इके तो बताएक जुन होइ।

नटकरवा - सेखें जुन बताए देत हों - राय प्रद्युमन सिंह कर - नागवंश भाग एक-दुई, वेणी राम महथा कर नागवंशावली, घासी राम कर नागवंशावली झूमर, वरुणमणि कर नागवंशावली, सेम तोपनो कर कुर्सीनामा : मुण्डाओं का नृजाति इतिहास, डॉ० विसेश्वर प्रसाद केशरी कर छोटानागपुर का इतिहास : कुछ सूत्र, कुछ संदर्भ, गिरिराज कर पीटर शांति नवरंगी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व आउर मरड गोमके (नाटक), पीटर शांति नवरंगी कर नागपुरिया सदानी बोली का व्याकरण और छोटानागपुर का संक्षिप्त इतिहास, योगेन्द्र नाथ तिवारी कर नागपुरी भाषा का संक्षिप्त परिचय, जयशंकर प्रसाद कर जनमेजय का नाग यज्ञ, शरत चन्द्र राय कर मुण्डाज एण्ड देयर कंट्री, आउर उराँव ऑफ छोटानागपुर, मान गोविन्द बनर्जी कर ऐन हिस्टोरिकल आउटलाइन ऑफ प्रिंटिश छोटानागपुर, ब्रैडलीवर्ट कर छोटानागपुर ए लिटल नोन प्रोविन्स ऑफ द इम्पायर, एच.एस. सक्सेना कर सेफगार्ड्स फोर सेडयुल कास्ट एण्ड ट्राइब्स, जगदीश त्रिगुणायत कर मुण्डा लोक कथा आउर बाँसरी बज रही, सोसोबोंगा, बंगाल स्क्रेटेरियट प्रेस कर लिस्ट ऑफ मोनुमेन्ट्स इन दि छोटानागपुर डिवीजन, मनोहर हंस (मरड़हादा) कर मुण्डा लीजेण्ड्स (मुण्डाओं का मौखिक इतिहास) आउर-आउर मनक किताब मन देखल जाए सकेल।

नज़इर दुइ - अंधार से इंजत

मरडबुरु - मोऐँ झारखण्ड कर सउबले पुरना पहार मरडबुरु। मोके बड़ पहाड़ियो कहैन। लगभग तीन अरब बछर ले देखत हों झारखण्ड कर भूगोल के बनते बिगड़ते

सोबरनखा - आउर मोऐँ सोबरनखा। देखत हों झारखण्ड कर इतिहास आउर आदि मनवा, आदिम जाति, सदान-आदिवासी लोक जीवन के बनते, मेटते, जोराते

मरडबुरु - धरती कर पहिल भूँझ हेके झारखण्ड। गोंडवाना पठार कर उत्तर

पूरब करे कर हिस्सा। धरती में लावा युग कर बीतल बादे हिजा धरती में खाइन-खदान बनेक लागलक। सखुआ आउर रकम-रकम कर गछ-बिरिछि, लंग-झंग, घास-बुदा उगलक। उकर में बरन-बरन कर जीव-जन्तु मन कर सिरजन होलक।

- सोबरनखा** - आउर तबे आलक आदि मनवा। पखल परिया आलक। ताँबा परिया आलक आउर आलक लोहा युग। आदिम भासा-संस्कृति आउर सभ्यता कर विकास होएक लागलक।
- मरडबुरु** - आउर ऊ कहालक नाग-असुर तझर अनार्य जाति कर संस्कृति। एहे ऊ मनवा मन हेकैं जे मन झारखण्ड में मनवा जाइत ले नाग-असुर संस्कृति सभ्यता कर नेव देलैं। आउर ई भूँइखंड कहाएक लागलक नाग देश। अनार्य मनक नाग देश एखन कर झारखण्ड।
- सोबरनखा** - एहे भूँइ ले आदि मनवा कर एकेक थाक (दल) जुदाए-जुदाए कबीला मन समय-समय में आगे-पाछे हिजा ले भागते गेलैं। आउर घुमन्तु कबीला बइन के आपन-आपन भाषा-संस्कृति कर विकास करते गेलैं। जेमन हिजा रझह गेलैं सेमन सदान कहालैं। एहे मन नाग, सराक आउर असुर जाति होलैं।
- मरडबुरु** - एहे सउब मन मध्ये होडो (मुँडा) मन समय सिरे झारखण्ड ले बाहरे आजमगढ़, कालिंजरगढ़, गढ़चितर, गढ़नगरवार, गढ़डहरवार, पालीगढ़, गढ़पीपर, मुँडारपहार, बीजनागढ़, हरदीनगर, लकनूरगढ़, नन्दनगढ़, राजगढ़, रुईदासगढ़ मन के आबाद करलैं।
- सोबरनखा** - ई गढ़ मन में आगे मुँडाए मन राइज करलैं। आजमगढ़ में साम मुँडा, कालिंजरगढ़ में बिरसा मुँडा (भगवान बिरसा निही), गढ़चितर में चम्पा मुँडा, गढ़नगरवार में करमा मुँडा, गढ़डहरवार में डुका मुँडा, पालीगढ़ में गारगा मुँडा, गढ़पीपर में सोमरा मुँडा, मुँडारपहार में लेंदा मुँडा, बीजनागढ़ में पोटा मुँडा, हरदीनगर में नगु मुँडा, लकनूरगढ़ में उदय मुँडा, नन्दनगढ़ में गंगु मुँडा, राजगढ़ में मंगता मुँडा, रुईदासगढ़ में रझया मुँडा मन गढ़ बसालैं। इनकर बादे समय-समय में खड़िया, उराँव मन एहे मनक गढ़ मन से राइज करते, छोड़ते आगे बढ़ते गेलैं।
- मरडबुरु** - रुईदासगढ़ मुँडा मनक आखरी घुमंतु गढ़ रहे। रुईदासगढ़ में

बीतल दुइ साल ले अकाल पड़लक। से सालक सरहुल में पहान
अगमजानी (भविष्यवाणी) तहर बतालक।

नज़दर तीन - अंधार से इंजत
(सरना ठांव)

(जदुर नाच-गान चलतहे, मुँड़ा मन सरहुल मनात हैं, सरना में सरहुल
पूजा होत है।)

- अठा मटा बिरको तला रे - ई घन बन में -
अलो होम निरजा बागिडा - तोएँ मोके छोड़द के मइत भाग!
रामे को मारेचा रे - ई काटा भरल डाँड़ में -
अलो होम निरजा रड़ाइजा - तोएँ मोके छोड़द के मइत भाग!
काची होम लेले दीडा - का तोएँ मोके नि देख रहिस?
सेंगल लेकाइं जुलेतानरे - जखन मोएँ आँगोर नियर लवकत रहों!
काची होम चिना लेदीडा - का तोएँ मोके नि चिन्ह रहिस?
दः लेकाइं लिगी तान रे - जखन मोएँ पानी नियर उमड़त रहों!
कागे चोवाइं लेलेलेदेमा - हैं, मोएँ नि देख रहों
दिसुमादो दूदुगार जान - काले कि दुनियाँ में अँधड़ कर धूर भरल रहे।
कागे चोवाइं चिना लेदेमा - हैं मोएँ तोके नि चिन्ह रहों
गामाय दो कोवाँसी जान - का ले कि दुनियाँ में कुहस भरल रहे।

(पहान आखरी में राखल पानी के देखेल, कतना पानी आहे, आउर
अगमजानी तहर कहेल)

- पहान - भाई आउर बहिन मन। मोके अपाय दुख संगे कहेक होत हे कि
एहो बछर अकाल बतात हे, ई राखल पानी। का जाइन का ले
सिरमासिड (सिंगबोंगा) हामरे मन से नाखुस आहैं।
रिसामुँडा - पहान भाई! हामरे के सिरमासिड से खास बिनती आउर पूजा
करेक चाही।
पहान - हामरे आपन सरदार रिसा मुँडा कर हुकूम से सिरमासिड ले एगो
चरका मुर्गा आउर तपान कर संगे पूजा करेक होइ। आउर सिडबोंगा
कर नाँवे एगो रंगुआ मुर्गा छोड़ेक होइ।
रिसा मुँडा - भाई मन काठी के कुधा करा आउर बहिन मन सरना के सफा कहर
के आउर एक धँव गोबर सँय लीपा। (काठी कुधा करेक
लागेन। कुधा काठी में रंगुआ मुर्गा के चघाएँ। चरका
मुर्गा आउर तपान सँग पूजा करेन।)

नज़इर चाइर - अंधार तले इंजत

- मरडबुरु** - सात दिन, सात राहत, काठी हिंदकते रहलक। पूजा होते रहलक। नाच, बाजा आउर गीत उधमध चलते रहलक। आखरी दिन रंगुआ मुर्गा छोड़लैं सिड्डबोंगा कर नावे। ऊ पूरूब-दखिन दने भागेक लागलक, ऊ खन उडे खन कूदे।
- सोबरनखा** - सभे होडो (मुँडा) मन रंगुआ मुर्गा कर पाउछ धइर के चलेक लागलैं। सात दिन सात राहत रंगुआ मुर्गा कर पाछे-पाछे एक थाक आगे बुढ़मू घाट पार कइर के ओमेडांड (उमेडंडा) आए पोहंचलैं।
- मरडबुरु** - ओमेडांड (उमेडंडा) जइसन नवाँ ठाँव के देइख के रिसा सरदार आपन दिगवार के पता करेक ले कहलक ई सखुआ कर बन में पहाड़ी कर भीतरे का आहे? बगरा से बगरा सात महिना तक में पूरा बनार लगाए के आएक कर हुकूम देलक।
- सोबरनखा** - आउर दिगवार कुछ अदमी, छउवा आउर दुधाइर गाय-छगरी मन के लेइके निसकइक गेलक।

नज़इर पांच - अंधार तले इंजत

(बन एकाइर)

- रिसा मुँडा** - आइझ ले तो दिगवार मन के घुइर आएक रहे। सात महिना पूरा होए गेलक। उमन घुरलैं का ले निहीं? हामरे कर बाकी नव थाक (दल) अदमियो मन आए गेलैं।
- पहान** - (आए के) घुइर आलैं सरदार! दिगवार मनक थाक आइए चललैं।
- दिगवार** - (आए के) जोहार सरदार गोमके! हामरे नगद घुइर आली।
- रिसा मुँडा** - कह दिगवार भाई! का पता कइर आली ई सात महिना में?
- दिगवार** - सरदार! हिजा नाग, सराक आउर असुर जाइत मन भरल आहैं। बन भीतरे बीच-बीच में इमनक गाँव बसल आहे। ठाँवे-ठाँवे जबर-जबर भट्टा आहे। भट्टा ले जे निसकेल सेके तांबा आउर लोहा कहेन। ऊ तांबा आउर लोहा से किसिम-किसिम कर हथियार, बरतन, गहना आउर काही-जाही समान मन बनाएँ। हिजा कर गाँव अहत सुंदर आहे। आउर जमकल बुझाएल। कांइल इमन हिजा नाग-महादेव कर बडे जबर पूजा आहे। उकरे तेयारी चलत हे।

- रिसा मुँडा** - हाँ! तब तो हामरे मन नाग दिसुम में पोहँइच गेली। काइले राहत मोएँ इसने अदमी मन के नाग फेटा बाँधल, नाग मनक पूजा करते सपना देइख रहों। से सते होए गेलक। हाँ आगे कह! आउर ...
- दिगवार** - हिजा कर सराजाम बेजाँह सुंदर आहे। एकेक टोला में एकेक बरन कर काम होएल। सउब मिल के रहेन। एक दूसर कर काम आएक जिनीस मन के बनाएँन। इमन अगम सम्पन्न आहैं। इमनक बोली भाषा हामरे ले फरक आहे। इमन के सदान कहेन और इमनक बोली के सदानी। इके इमन नागपुरियाव कहेन।
- रिसा मुँडा** - ई सात महिना में तोहरे मन उमनक बोली-भाखा के सिखला कि निहीं?
- दिगवार** - चरवाहा छउवामन संगे रङ्गके हामरे कर छउवाव मन काम चलाएक भङ्गर बोली-भाखा सीख लेलैं कि!
- रिसा मुँडा** - तब तो तोहरे मन बड़ा बेस काम करला। पहें का तोहरे मन ई बनार लगाला कि हामरे मनक हिजा आवल के उमन का तझर लेबै? काले कि हामरे कर सधे दसो थाक कर एकीस हजार होड़ा (मुँडा) मन आए गेलैं।
- दिगवार** - हिजा कर नाग, सराक आउर असुर मनके हामरे मनक आवल कर भनक लाइग जाए हे।
- रिसा मुँडा** - राहत सपना में मोके सिरमासिड कहलैं - “तोहरे मनक तपलीक कर दिन झटे टुण्डू होए जाइ। तोहरे मन मोरे बताल देखाल ठाँव में, आपन पुरना ठाँव में, आए गेला। हिएँ से तो तोहरे मन एक परिया में निसइक रहा। हिजा नाग, सराक आउर असुर मनक बीचे बराबङ्ग ले बइस जावा”। एतना सपना में सुनल बादे से मोएँ सोचेक लाइग हों कि नाग, सराक आउर असुर मन सैं हामरे का लखे भेंट करब?
- पहान** - सरदार एगोट नवाँ अदमी आ हे। आउर कोनो कहेक खोजत हे।
- रिसा मुँडा** - उनके माइन से ले आना। संगे जे हिजा कर बाहरी भाखा जानेल सेखो राखा। ओ, से तो दिगवर जानेबे घरेल। उनकर मोर बात मनके सफा से हामरे मनके उलथा कङ्गर के बताते जाबे। (नागदूत के दिगवार जाए के ले आनेल)

- नागदूत - (आए के) मोँ नागराज कर दूत हेकों। आउर मोँ ई पता करेक आ हों कि तोहरे मन के हेका? कने ले आए हा? आउर हिजा आएक कर मतलब का आहे? (दिग्वार बताएल)
- रिसा मुँडा - हामरे मन होडो (मुँडा) हेकी। आजमगढ से ओर करते हामरे मन 14 गढ मन के छोडते रूईदासगढ आली। तले सिरमासिड कर हुकूम सपना में पाए के हिजा आय जा ही। हामरे मन दस थाक माने 21 हजार होडो (मुँडा) आ ही आउर हिजा बसेक खोजत ही। (दिग्वार बताएल)
- नागदूत - काइल हामरे हिजा नाग पूजा आहे। नाग पूजा दिने जे मन हिजा आए जाएँ उमन के हामरे स्वागत करीला। (दिग्वार बताएल)
- रिसा मुँडा - कइसन स्वागत? (दिग्वार बताएल)
- नागदूत - अवश्य मन कर मन मोताबिक हामरे स्वागत करीला। (दिग्वार बताएल)

नज़दीर छव - अंधार तले इंजत
(महादेव माडा ठिन)

(नाग पूजा होत हे। नाच, गीत, गाजा-बाजा में सउब उधमध आहे)

के तो बनालक धरती रे? के तो टाँगलक अकास?

देवी माँय बनालैं धरती रे। महादेव बाबा टाँगलैं अकास।

कने बहलक निरामला पाइन रे? कने सलगलक आँगोर फूल?

दादुल घाटे बहलक निरामला पाइन रे। महादेव माडाए सलगलक आँगोर फूल।

कने तो उडियालक धुवन धुका रे? के जे फूललैं सउब में जीव?

धुँवासी झुलुवा ठिन उडियालक धुवन धुका रे। महादेव बाबा फूकलैं सउब में जीव।

के जे उतरालैं बिखक दुख रे? के जे पिंधलैं नागक हार?

देवी माँय उतरालैं बिखक दुख रे। महादेव बाबा पिंधलैं नागक हार।

के मन चलबैं आँगोरक फूल में रे? के मन झिमकाबैं सीतल जल?

भगतिया मन चलबैं आँगोरक फूल में रे। सोखताइन मन झिमकाबैं सीतल जल।

का खाबैं भगतिया मन रे? का पीबैं सोखताइन?

दूध-फल खाबैं भगतिया रे। निरजल रहबैं सोखताइन।

के मन झूलबैं चरक डांग रे? का छीटबैं आसिस रूपे?

भगतिया मन झूलबैं चरक डांग रे। गुलझी फूलक हारे देबैं आसिस।

कहाँ बासा बाँधलैं महादेव बाबा रे? कहाँ माडलैं देबी मायँ?

महादेव माडा बासा बाँधलैं महादेव बाबा रे। देबी गुडी माडलैं देवी मायँ।

(आगोहों कर सभे बात के दिग्वार पहिले नियर उल्था कइर के बताले जाएल)

- नागदूत - (आए के) नागराज, गोतिया सरदार मन आए जा हैं।
- नागराज - सरदार! गोतिया सरदार मन के माइन संगे लेइ आन। (जाए के नागदूत ले आनेल.....)
- नागराज - तनि देरी ले नाच, गीत, गाजा-बाजा के रोकल जाओक। (शांत होए जाएँन सभे.....)
- रिसा मुँडा - नाग दिसुम कर नागराज के होड़ो सरदार रिसा (मुँडा) दने से अपने मन के जोहाइर! (जोहाइर करेल)
- नागराज - जोहाइर! स्वागत आहे। होड़ो सरदार रिसा (मुँडा) अपने मन के।
- रिसा मुँडा - का हामरे मन के अपने मन संगे रहेक ले मेसाबैं?
- नागराज - का ले निहीं। आइझ नाग पूजा कर पवित्र दिन में आ हैं तो का ले नि मेसाब! जब बन कर भयानक खतरनाक बाघ-भालू मन जइसन पशु हिजा रइह सकेन तो अपने मन का ले नि रइह सकेन! अपनोहीं मन तो हामरे मन तझर अदमिये हेकैं।
- रिसा मुँडा - अपने कर विचार सुइन के हामरे अइत खुश होली।
- नागराज - हामरे सउब मिल-मेइस के रहब। आउर हाथी, चीता, हुँड़ा, लकड़ा, शेर, बाघ मन से आमना-सामना होले हामरे मन आपने के पोकता से बचाएक पारब।
- रिसा मुँडा - तो हामरे मन ले का हुकूम होत हे? हामरे मन हिजा बइस जाइ?
- नागराज - हामरे, अपने मन के ई नागदेस में इसनेहीं तो बसेक नि देब? इकर ले तो अपने मन के हामरे मन संगे सहिया जोराएक होइ!
- रिसा मुँडा - ई सहिया का होएल नागराज?
- नागराज - हिया कर संगे, सहिया माने होएल। हामरे आपन हिया, अपने मन के देली, आउर अपने मन, आपन हिया हामरे के देलैं। तो बस समझैं सहिया होए गेलैं। बराबइर ले, सउब दिन ले दुइ परानी प्रेम कर डोइर में पीढ़ी-दर-पीढ़ी ले बंधाए गेलैं।
- रिसा मुँडा - अपने कर ई सुंदर भाव के हामरे हिया से मंजूर करतही नागराज। हामरे अपने मन से सहिया जोराएक ले तेयार आही।
- नागराज - नागपूजा दिन नि रहले हामरे नवाँ आवल मन से पूछिला कि उमन का चाहैना? हामरे संगे लड़ाई करेक कि सहिया बइन के रहेक?
- रिसा मुँडा - हिजा बाहरे ले अदमी मन आते रहैन का?
- नागराज - हैं! हिजा बीच-बीच में केउ नि केउ कबीला मन आते रहेन, जाते

रहेन। ढेहर कबीला मन तो घुरबो नि घरलैं। का पता अपनो हों
मन कहियो हिएँ ले जाए होबैं। आउर फिन घुइर फिरके ई सोना
तझर नागदेस में लड़ाई करे ले आए जाए होबैं!

- रिसा मुँडा - हामरोहों लड़ाई करेक ले तो नि आए ही नागराज। हामरे तो
कहली नि सिरमासिंड कर हुकूम से सोना लेकन देस में शांति से
हिएँ रहेक ले आ ही। आउर अब तो हामरे के सहिया बनाएक
ले तेयार होए गेलैं अपने मन।
- नागराज - अजगुत बेस बात कहलैं होडो (मुँडा) सरदार रिसा। (अपने अदमी
मन से) सउब केड सुना। हामरे होडो मन के करम डाइर दे के
गुलइची फूल कर माला पिंधाए के सहिया बनाएक कर घोषणा
करत ही। आपन-आपन पसींद लाइक जोड़ीदार चुहन के सहिया
बनाए लेवा। (सभे करमडाइर संगे गुलइची फूलक माला
पिंधाए के सहिया बनाएक खोजेन। जोड़ी खोजेक लागेन।
जेके भेटाए जाएल उमन सहिया बनाते-बनते जाएँन)
- नागराज - होडो सरदार, आइझ ले हामर सहिया होलैं। हामरे के इमनके
मदइत करेक चाही आइझ ले।
- रिसा मुँडा - हामरोहों मन अपने मनक सहिया बइन के एक दूसर कर सुख-दुख
में भागी बनेक खोजत ही।
- नागराज - (आपन अदमी मन से) तोहरे मन तीन धँव सहिया होडो सरदार
कर जय कहा। (दिग्वार सउब के जय-जयकार करूवाएल)
- रिसा मुँडा - (आपन अदमी मन से) तोहरोहो मन तीन धँव सहिया नागराज
कर जय कहा! (दिग्वार सउब के जय-जयकार करूवाएल)
- रिसा मुँडा - नागराज! आइझ हामरे बहुते खुस होली। सिरमासिंड कर सपना
में कहल मोताविक सउब बात अपने आपन सच होए गेतक।
- नागराज - (आपन अदमी मन से) तोहरे सउब आपन-आपन सहिया मन
के एकेक डुभा तपान हाँड़ी कर परसादी पियावा आउर प्रतिज्ञा
करा कि सहिया! जब तक संसार रही, सहिया कर नाता चलते
रही। ई नागपूजा कर खुशी में सउब केड सहिया मन संगे आनन्द
मनावा, नाचा, गावा, बजावा। (सउब नाग, सराक, असुर,
मुँडा मन मिल के आपन-आपन विधि से आनन्द मनाएँन
आउर गीत गाएँन)।

सोची-सोची सुखत रहे खून - कतना दिन रही हिया सून।
 जिया में लागत रहे धून - राइट दिना रहे एके धून।
 सहिया-सहिया कहते आइज्ञ - बड़ी रे संजोगे गेली बाइज्ञ।
 सहिया के हिया में देली साइज - बड़ी रे उमंगे पाली पेरेम राइज।
 सहिया जोराए जिनगीक संगी पाली - मेटी नहीं सहिया, से किरिया खाली।
 तले हिया ले हिया मिलाली - दुखक दिन के एहे ठिना सिराली।
 देझ के करमक डाइर - सहिया के करली जोहाइर।
 लेझ के करमक डाइर - सहिया के लेली अँकवाइर।
 गुलइची फूलक माला देली तो पिंधाए - एक दोना हाँड़ी देली तो पियाए।
 रिझे रंगे गेली दुझ्यो सहिया उमताए - एके कोहिया में गेली तो दुझ्यो समाए।
 छुटी निहीं सहियाक नाता दुनिया रहत भइर - सहिया कर धरी हेंठे पोकता जइर।
 उपरे फेकी झबरल लदरल डाइर - सहियाक हियाक पिरीत देखी विधि जाइ हाइर।

नज़िर सात - अंधर तले इंजत

(नागराज आउर रिसा मुँड़ा पीँड़ा में बात करत हैं)

- रिसा मुँड़ा** - आब तो हामरे मन एक दूसर से पूरा-पूरी हेलमेल होए गेली सहिया ! हामरे होड़ो मन तो सोना लेकन देस (सुनहले देस) कर खोजार में हिजा आए रही। आउर पोहँइच गेली नाग दिसुम में।
नागराज - ई सोना कर देश भइर ना लागे सहिया ! ई तो हीरा कर देस हेके। इके हामरे मन हीरानागपुर कहिला सहिया ! हामरे नाग मनक एहे हीरानागपुर जनमभूँइ, करमभूँइ, धरमभूँइ आउर मुक्तिभूँइ हेके सहिया !
- रिसा मुँड़ा** - हामरे होड़ो मनले अब का हुकूम आहे तब सहिया ?
- नागराज** - का हुकूम रही सहिया ! ई जंगल-झाड़, गढ़ा-ढोढ़ा के हामरे मन जइसन कोड़कर दोइन-डाँड़, गाँव-घर बसाही आउर उकर एकेक ठो नाँव दे ही, सइसने अपनोहों मन आपन गाँव-घर, दोइन-डाँड़, अखरा-जतरा बनाएँ बन काइट के। गाढ़ा-ढोढ़ा आउर अपने मनक बसाल-बनाल ठाँव मनक आपन नाँव देवैं ताकि बनार तो लागे कि कोन ठाँव-गाँव के, के बनाहे? बुझलैं सहिया ! हामरे मन हिया संगे सदा-सदा ले संबंध जे जोइर ले ही सहिया !
- रिसा मुँड़ा** - एहे तो हामरे खोजत रही सहिया। मोर मनेक इच्छा के अपने कइह देलैं।
- नागराज** - अपने कर मनक इच्छा के कइसे नि कहतों सहिया ! हामरे कर

- हिया-मन, सुख-दुख तो आब एके नि होए गेलक सहिया।
- रिसा मुँडा** - हामरोहों अपने मन तझर खेत-खरियन, गाँव-घर बनाएक ले अपने मनक मदइत चाहत ही सहिया।
- नागराज** - का ले निहीं। हामरे कर संस्कृतिए तो, “सहिया बइन करेक मदइत, एहे हेके हामर रीत” सहिया। हामरे मन संगे, मिल-मेइस के काम करब, संगे काम करेक बादे खाब-पियब, नाचब-गाब-बजाब। अखरा में उधमध आनन्द होइ, मांदर बाजी, बँसरी बाजी, केंदरा, टोहिला बाजी आउर बाजी नगेरा, ढाँक, ढोलकी, ठेचका मन।
- रिसा मुँडा** - मोके तो सहिया अपने कर गोइठ ले अमृत-संगीत झरत तझर बुझात हे। हामरे के सउब मंजूर आहे। हामरोहों बचन देतही, जेठन अपने कर पसेना गिरी हुँआ हामरे लहू बहाए देब।
- नागराज** - आउर हामरोहों आपन सहिया कर लहू जहाँ गिरी हुआँ जीव लगाए देब।
- नजझर आठ - अंधार तले इंजत**
- मरडबुरु** - ई लखे नाग, असुर आउर मुँडा मनक समरसता कर जिनगीक डहर चले लागलक। इमनक जमकते-जमकते खडिया, उराँव आउर-आउर कबीला मन आते रहलैं। बसते रहलैं। नवाँ साद्धा संस्कृति मजगूत होते गेलक।
- सोबरनखा** - समतामूलक सहिया समाज पक्का होते गेलक! मदइत चलते शोषणमुक्त समाज मजगूत बनते जाएक लागलक। संगे आनन्द मनाएक, जनि-मरद कर बराबरी आउर बेगर बडवारी कर धरम-करम रसाते जाएक लागलक। सउबक सहमति से राइज चले लागलक।
- मरडबुरु** - महादेव माँडा, देवी गुडी, सरना, देसाउली गाँवे-गाँवे स्थापित होते गेलक।
- मरडबुरु** - हर समाज, गाँव-घर, खेत-खरियन, अगले-बगल जमकेक लागलक।
- सोबरनखा** - आपन-आपन पेसा आउर खेती-बारी के आपन पसेना से पटाएक में दिन काइट देक लागलैं। राहत कर गीत-गोविन्द से, रीझे-रंगे से, बनक बाघ-भालू मन के उमने कुदाएक लागलैं। अखरा कर धूर में सभे आनन्द में नहाएक लागलैं। इमनक बोलके गीत होए गेलक, चलके नाच होए गेलक। छाती आउर खरपट मांदर होए गेलक।

मरड़बुरु - इ आनन्द-उमंग कर इतिहास में एगो भयानक बखेड़ा खड़ा होए गेलक।

सोबरनखा - असुर-सराक मनक लोहा-ताँबा गलाल से फेकाल गेरा मनक पहार कुध होएक लागलक। बरिसकला दिने ई गेरा पहार मन घहझर के मुँड़ा मनक बनाल दोइन-डाँड़ में उतरे लागलक। जेकर से दोइन-डाँड़ बरबाद होएक लागलक।

मरड़बुरु - ताँम्बा-लोहा कर खपत अदमी बाढ़क से बगरा होएक लागलक। ताम्बा-लोहा कर औजार बरतन मनक बनेक से गेरा पहार कर भरमार सउब दने छितराएक लागलक। फसिलो इकर से बरबाद होएक लागलक।

सोबरनखा - सराक-असुर मनके ताँबा-लोहा मन कम बनाएक कहलैं मुँड़ा मन। मगर आपन पेसा के उमन कम करेक ले तेयारे नि होलैं।

मरड़बुरु - सउब केड आपन-आपन धंधा के, खेती-बारी के, बढ़ाएक में लागल रहैं। तो सराक-असुर मन का ले घटाएक ले तेयार होबैं। एहे बात ले के मुँड़ा-असुर मन में लड़ाई ठइन गेलक। दूसरो मन मुँड़ामन के साथ देलैं।

सोबरनखा - असुर-सराक मन कमजोर होए गेलैं। इमनक हथियार, विरोधी मन से कम होए गेलक। आपनेहे मनक बनाल हथियार मन आपने विनास कर कारन होए गेलक। अनठेकान मारल गेलैं। सराक-असुर मन के आपन ठाँब छोइड़ के जने-तने भागेक पड़लक।

मरड़बुरु - मुँड़ा मन तो सोसो बोंगा कर अभियाने में पूरकस लाइग गेलैं कि असुर-सराक मनके खतमे कइर देल जाए। पहें नाग मन आपन सहिया मुँड़ा मन के ई अभियान के रोइक देक ले समझाए-बुझाए के शांत करलैं।

सोबरनखा - होड़ो मनक बहादुरी के देहख के मुँड़ा राजा कर ओहदा देलैं नाग मन। सभे गाँव कर मुखिया मुँड़ा प्रधान कर ओहदा पालैं।

मरड़बुरु - तथे से ई होड़ो समुदाय के मुँड़ा कहेक चलन ओर होलक। आउर होड़ो मनक नाँव में मुँड़ा लागेक लागलक। मुँड़ा माइन में देल ओहदा होए गेलक। तले आपन पुरखाव मन कर किस्सा-कहनियों में होड़ो मनक नाँव में मुँड़ा जोइड़ के इयाइद करेक लागलैं।

- सोबरनखा** - असुर मन के एकदमे खत्म कहर देले नागदेस कर का नोकसान होइ सेके समझालैं नाग मने। लोहा-ताँबा नि बनाले हामरे कर काम कर चीज कइसे मिली सेके बुझलैं। बाँचल असुर मनके जोरगर असुर कर ओहदा देलैं। मगर उमन भीतरे ले डराल रहलैं।
- मरडबुरु** - आपन डर के मेटाएक ले, ई असुरों मन मुँड़ा मनक बोली-भाषा आउर रीत के अपनाएक लागलैं।
- सोबरनखा** - असुर-नाग आउर मुँड़ा मनक भाषा-संस्कृति केर मांझे एगो मजगूत कड़ी कर रूपे बाँचल असुर मन इह गेलैं। इमन दुइयो के अपनालैं।
- मरडबुरु** - ई लखे आगे चहल के रिसा मुँड़ा कर वंस में सुतिया मुँड़ा जइसन नाँव बाजल इतिहास पुरुष राजा चुनाल गेलक, उकर राहज होलक।
- सोबरनखा** - मुँड़ा मन सुतिया मुँड़ा के सुतिया पहान कर ओहदा देके उके प्रधान राजा बनाए रहैं।
- मरडबुरु** - सुतिया मुँड़ा आपन पुरखा मनक इतिहास के आउर पसरालक। ई सात गो गढ़ बनालक। लोहरागढ़, हजारीगढ़, पालुमगढ़, मनुगढ़, सिंधागढ़, केसलगढ़ आउर सुरगुसगढ़।
- सोबरनखा** - सुतिया मुँड़ा 21 पड़हा परगना के स्थापित करलक। ऊ 21 पड़हा परगना कर नाँव होलक उमेड़ंडा, डोँइसा, खुखरा, सिनगुजा, जशपुर, गांगपुर, पोरहाट, गिरगा, बिसुआ, लचड़ा, बीरु, सोनपुर, बेलखाटु, बेलसिंग, तमाड़, सोहरडीह, खारसंग, उदयपुर, बोनाई, कोरिया आउर चंगभंगकरा। जेकर में 151 गाँव बसलक।
- मरडबुरु** - सुतिया मुँड़ा राजा सातो गढ़ आउर एकिसो परगना मनक सरदार चुनलक। ई मन मधे होलैं - मनाए मुँड़ा, मना मुँड़ा, लाखो राय मुँड़ा, जितराय मुँड़ा, माटु मुँड़ा, माटमुँडा, खुदी राम मुँड़ा, बड़राम मुँड़ा, बड़राय मुँड़ा, आजकू मुँड़ा, लिहा मुँड़ा, भोजराज मुँड़ा, बिजला मुँड़ा, कुआँर सिंघ मुँड़ा मन।
- सोबरनखा** - सुतिया मुँड़ा सात गढ़ कर राजा रहे से ले ऊ सात ताग कर जनेउ पिंधत रहे।

- मरडबुरू** - सुतिया मुँडा आपन बेटा कर बिहा ले कनिया नि पालक का ले कि सभे मुँडा तो एके भइयाद, एके खूँट कर रहैं। एहे बात आउरो मुँडा मन ले उठलक।
- सोबरनखा** - से ले सुतिया मुँडा आपन एकिसो मानकी मन के बोलालक। ऊ मानकी मन मधे रहैं - सुतिया मानकी, दुखना मानकी, डुका मानकी, कुरा मानकी, केलोओ मानकी, गंगु मानकी, लखो मानकी, हेम्बो मानकी, जितराय मानकी, विरसा मानकी, करमा मानकी, चम्पा मानकी, गोमिया मानकी, सोमरा मानकी, लेंदा मानकी, उदय मानकी, मंगता मानकी, रैया मानकी, सामु मानकी, पोढा मानकी, आउर सनिका मानकी।
- मरडबुरू** - इमन मधे बेलो मुँडा के लोहरागढ़ में, सालू मुँडा के हजारीगढ़ में, दुखु मुँडा के पालुमगढ़ में, मानकी बनाल गेलक। एहे लखे आउरो गढ़ कर मानकी सउबक मत-विचार (प्रजातंत्रिक ढंग से) से चुनल गेलैं।
- सोबरनखा** - आपन बेटा ले कनिया नि भेटाएक तेहें सुतिया मुँडा राजा एगो नवा विधान बनालक। आपन मुँडा समाज के किली-गोत्र में बाँझट के।
- मरडबुरू** - किली-गोत्र के बाँटेक ले सुतिया मुँडा राजा आपन गढ़ कर सात डेहरी भीतरे कोठा में बरन-बरन कर जीव, रकम-रकम कर बुदा मन के राइख देलक।
- सोबरनखा** - सुतिया सरदार आपन सउब मानकी के एकेक गो जीव चाहे बुदा के चुइन-बिछ के लानेक ले कहलक।
- मरडबुरू** - जे मानकी जेके चुनलक-लानलक उके ओहे किली-गोत्र तय कइर देल गेलक सदा-सदा ले। एहे किली-गोत्र ऊ मानकी मनक चिनहा होए गेलक। सउब जमा 22 किली गोत्र दल होलक। से दिन एकिसो मानकी संगे एगो मंगरा मुँडाव के किली-गोत्र देल गेलक।
- सोबरनखा** - ई बाइसो मानकी मनक किली-गोत्र होलक बरला, तोपनो (देमता), होरो, केरकेट्टा (समद), कउवा, ढेचुवा, बाबा (धान), डुंगडुंग, जोजो, कण्डुलना, तिडु, संगा, लुगुन, बुड, हेडेंए, नाग, कण्डीर, टुटी, सुरीन, हेमरोम, डांगवार आउर मुण्डू।

- मरडबुरु** - सुतिया मुँडा राजा आपन नाँव से राजधानी बनालक सुतियाम्बे गढ़ में। मुँडा मन के एहे सुतियाम्बे गढ़ में किली गोत्र देल जाए रहे। एहे मन कोम्पाट मुँडा कहालै इखें कोकोंपाट मुँडाव कहेन।
- सोबरनखा** - हिएँ पहिले से चहल आवल राजा कर चुनाव कर रीत मोताबिक सउबक मत से राजा कर चुनाव होलक। जेकर में नाग, असुर, सराक, मुँडा, खड़िया, उराँव आउर-आउर मन सभे भाग ले रहैं। नाग राज कर बादे सुतिया मुँडा राजा चुनाए रहे।
- मरडबुरु** - सुतिया मुँडा कर राजा बनल से नाग देश कर नाँव, हीरानागपुर तझर सुतिया नागपुर आउर सुतियानागखण्ड नाँवो देल गेलक।
- सोबरनखा** - ई सुतिया मुँडाव कर राइज सुतियानागपुर में अनइत आनन्द चहन रहे। नाग, असुर, सराक, मुँडा, खड़िया, उराँव, मन में बड़ा मेल प्रेम रहे। कोनो लड़ाई, झगड़ा, मनमोटाव नि होलक इकरो राइज में।
- मरडबुरु** - राजा सुतिया मुँडा कर बादे फिन सउबक मत से पुरना रीत तझर अबकिर पहिल धँच महाराजा कर चुनाव करल गेलक। इकरो में सउबे भाग ले रहैं, जतना सुतियानागखण्ड में रहत रहैं।
- सोबरनखा** - ई पहिल महाराज कर चुनाव में सुतिया मुँडा कर बेटा मदरा मुँडाए सउबक एकमत से चुइन लेल गेलक। का ले कि महाराजा बनेक ले जतना बदल रहे सेके मदरा मुँडाए पूरा-पूरी पूरा करलक। बाकी जे मन रहैं से मन नि पूरा करे पारलैं।
- मरडबुरु** - महाराजा मदरा मुँडा बहुते लोकप्रिय होलक। शासन करेक में आपन बाप सुतियाव मुँडाव से ऊ आगे निकइल गेलक।
- सोबरनखा** - महाराजा मदरा मुँडा नाग जाइत कर युधिष्ठिर दास (गोसाँई) के सउबक मत से दीवान बनाए रहे।
- मरडबुरु** - महाराजा मदरा मुँडाव आपन रीत के पूरा-पूरी पालन करलक। महाराजा तो शासन करे ले भइर। बाकी जिनगी तो आउर अदमिए मन तझर रहे, माटी कर कोठा आउर खपरा कर घर सबक एक नियर रहे। महाराजा कर कोनो बड़वारी इनकरो में पहिले कर राजा मन तझर नि रहे।

- सोबरनखा** - महाराजा मदरा मुँडा कर फूल नियर सुंदर धमधमात, आंगोर तहर लवकत, एगो बहिन रहे। नाँव रहे चिता। चिता भहर दिन बन पहार में छगरी चराते सउब करे मन मोहत रहतक।
- मरडबुरु** - कहेक ले भहर राजकुँवहर रहे चिता। छगरी-पठरु मन संगे गोटे बन ऊ डेगते-फांदते रहतक। उकर कोरा में हर घरी एगो सुंदर ले चितकबरा पठरु, बालक छउवा तहर दबरल रहतक।
- सोबरनखा** - ऊ गोल मटोल सुंदर एकन चितकबरा पठरु उपरे एगो चीता बाघ कर नजइर गड़ल रहे। अचके पठरु, चीता के देइख के डरे जोर से में... कहर के चिता कर कोरा ले डेग मारते मेमेस्स करते भागलक।
- मरडबुरु** - दबरल चीता एके झपटा में चितकबरा पठरु कर कामे तमाम करे ले दाँव-घत लगाते रहे कि एकठो चियारी में बिंधाए गेलक।
- सोबरनखा** - घवइल चीता चितकबरा पठरु के दोबचेक तो नि पारलक। का ले तो पठरु हुमहच के डेइग देलक आउर भेड़िया धसान भागलक। तो उलइट के ऊ मुँडा सुंदरी कुड़ी दने झपटकेहें खोजत रहे कि एगो नाग छोंडा लफइक के चीता कर पीठ में लटहक देलक।
- मरडबुरु** - चीता आउर नाग छोंडा तनि देरी आपन जोर के देखाए ताखलैं पटका-पटकी में नाग छोंडा आपन डंडा ले दउली निसकालक आउर चीता कर कामे तमाम कहर देलक।
- सोबरनखा** - चिता सुंदरी काठ तहर ऊ तेजगर जोरगर के हयकट में पइड़ के देखते रझह गेलक। तखने पठरु के धहर के नाग छोंडा चिता कर कोरा में दे देलक।
- मरडबुरु** - नाग छोड़ा कर हाथ पठरु देक घरी अचके पठरु कर छटपटाएक तेहें डुभा होरपल तहर दुझ्यो पहार से बजराए गेलक। चिता कर आँइख तो सिरसिराए के लुमबाए गेलक। उकर काया गतर झनझनाए उठलक। दुझ्यो एक टक एक दूसर कर नजइर कर डहर ले हिया में समाए गेलैं।
- सोबरनखा** - मुँडा कुड़ी, चिता सुंदरी, निरमल, चंचल, उकर गीत नियर बोली, नाच तहर चाइल, हाथ छोड़ाए के नाग छोंडा कर गोड़ में प्यार कर बेड़ी पिंधाए के जाएक लागलक तो ऊ टोकलक।

नज़दीर नव - अंधार तले इंजत
(बन एकाइर में दुइयो बतियात हैं)

- चिता - मोर दुलरू पठरू आउर मोर तनि बुहुंग जान के बचइया सेयान
के मोएँ कोन नाँव से इयाइद करमूँ?
- पाण्डुनाग - पाण्डुनाग कहेन मोके। आउर ई सोना बरन चमकत धमधमात
लदराल झोंपा सखुआ फूल तझर सपरल कुड़ी के, का कइह के
कहियो हँकामूँ?
- चिता - मोके तो चिता जुन कहेन!
- पाण्डुनाग - जबर भयानक नाम!
- चिता - केकर? कहइया कर कि सुनइया कर?
- पाण्डुनाग - दुइयो कर जुन! (दुइयो हाँसन)
- चिता - मोर ई दुलरा पठरू के बचाए के कतना अजगुत काम करले सेके
तोएँ का जानबे! ई चितकबरा पठरूए में तो मोर जान रहेल! इकर
बिगुर मोएँ नि जुन रइह सकोंन।
- पाण्डुनाग - एतना पेयार करिस इके तोएँ! मोके तो ई पठरू से हिसिंगा
लागतहे!
- चिता - से भला का ले?
- पाण्डुनाग - का ले? से तो मोहों जुन नि जानत हों। मोके तो लागत हे जइसन
तोएँ पठरू बिन नि रइह सकिस से लखे आब तो मोहों ई पठरू
कर मउवारिन बिगुर नि रहेक पारमूँ।
- चिता - मोर ई तनि बड़ जान तो आब तोर जुन होए गेलक! ई जीब तो
चीता कर मुँहे समाले रहे। अगर आपन जान के छोइड़ के तोएँ
मोके नि बचाए रहते! सेले आइझ ले ई जान मोर ना लागे! तोर
जुन होए गेलक! जात हों! अंधार होएक आगे घर नि पोहँचमूँ
हले दादा-भउजी खोजेक निकसबैं।
- पाण्डुनाग - फिन ई सोना बरन सुख देवइया सखुआ फूल तझर कुड़ी के कहाँ
देखमूँ।
- चिता - एहे बन में जुन! आउर कहाँ सखुआ फूल तोके जे भेटाइ? बन
हामरे कर मिलेक ठाँव होइ। मोर छगारी-पठरू हामरे कर मिलेक
कर गोवाह-साखी होबैं।
- पाण्डुनाग - एगो बात कहों! मानबे तो कहमूँ।

- चिता - तोर बात के आब मोएँ उठाएक पारमूँ? ई तोऐँ कइसे सोइच लेले?
कइह के तो देख!
- पाण्डुनाग - मुँडा कुडी मन, मनमोहेक तझर सुरस गीत गाएँन। का तोऐँ मोर
ले एगो गीत गाबे?
- चिता - तोर ले भझर निहीं, हामरे दुइयो ले गाए सकोन। अगर तोऐँ आपन
बँसरी में संग देबे।
- पाण्डुनाग - बाह रे मोर भाइग। तोर से मोऐँ गीतो सुइन लेमूँ।
- चिता - का ले निहीं! सेन गे सुसुन, काजि गे दुरड, दूरी गे दुमड! इसने
हामर हियाँ थोड़हे कहेन।
- पाण्डुनाग - नागदेश कर एहे तो छाप हेके - चलके नाच हेके, बोलके गीत
आउर छाती आउर खरपटे माँदर हेके। (ठहझर के) तो सुनातहिस
नि! मोर कान छटपटातहे तोर गीत सुने ले।
- चिता - मन होए तो नाचेक-गाएक में....
- पाण्डुनाग - (बीचे में) इकर ले बगरा नगद छन आउर का होए सकेल मोर ले!
- चिता - (मुँडारी गीत गाएल आउर पाण्डु डंडा ले बँसरी निसकाए
के बजाएल)
- अलड दिसुमरेलं जोनोम जना - हामरे दुइयो आपन देशो जनम पाली
पुतम लेका होलं जुडी जना - हामरे दुइयो पैँडकी लखे जोड़ी पाली
- अलड गमयरेलं माता जना - हामरे दुइयो आपन देशो बाढ़ली
- पारय लेका होलं माता जना - आउर हामरे दुइयो पेरवाँ नियर संगी होली
- पुतम लेका होलं जुडी जना - हामरे दुइयो जे पैँडकी लखे जोड़ी होली
- मोदेर गतिड रेलं सुसुन करम - तो हामरे एके संगे नाचब-गावब।
- पारय लेका होलं जोता जना - हामरे दुइयो जे पेरवाँ नियर संगी होली
- अलड जी सोबेन मोदे जना - तो हामरे दुइयो कर हिया एके होय गेलक
- मोदे रे गतिड रेलं सुसुन करम - हामरे दुइयो एके संगे नाचब गावब
- कारे गतिड रेलं बापा गेया - आउर कहियो अलग नि होवब
- अझड जी सोबेन मोदे जना - हामरे दुइयो कर मन एक होय गेलक
- जिदन सुनुमलं आपा सुला - आउर जिनगी भझर एक दूसर के पालब-पोसब।
- पाण्डुनाग - ओह रे दहया हाय! मोऐँ तो तोर गीते कर सुर आउर भाव में बेंडाए
गेतों।
- चिता - सते! (ठहझर के) मोहों तोर बँसरी कर तान में गाते चहल गेलों।
- पाण्डुनाग - सचे इसन लागलक तोर मधुर गीत सुनते रहों, सुनते रहों, सुनते
रहों....

- चिता - आउर घर नि जाँव !
- पाण्डुनाग - हामरे के बिलगेक होइ?
- चिता - तोके छोइड़ के आब तो जाएके मन.... (ठहइरके) एके दिने तोएँ मोर हिया के हेइर लेले। मोर दुनिया के बदइल देले। (ठहइरके)
- मुदा जाएक तो पड़ी जुन!
- पाण्डुनाग - चल तोके तोर सीमान तक पोहँचाए देंव।
- चिता - चल, तनि देरी आउर तोर संग तो रही। (चलते चलेन)
- पाण्डुनाग - हामरे कर ई मिलन इसन भयानक-सुन्दर होइ सेके तो मोएँ सपनाँव में नि सोइच रहों।
- चिता - तनि देरी आगे का होए जात रहे आउर....
- पाण्डुनाग - उके इयाइद न करुवाव चिता! ऊ जबर डरडारान सपना रहे।
- चिता - ओहे डरडारान सपना तो हामरे के मिलालक पाण्डु! ओ दे ले मोर सीमानो आए गेलक। आब तो तोएँ सपना में आबे आउर....
- पाण्डुनाग - आउर दिने हामरे जंगल में मिलब।
- चिता - बेस तब। (दुइयो आपन-आपन डहर जाएँन)
- नजहर दस - अंधार तले इंजत
- मरडबुरु - पहिले दिन ले चिता आउर पाण्डु पिरीत पहार चइध गेलैं।
- सोबरनखा - आउर पहार कर पझरा तइर बोहाय के गोटा बन पिरीत किंदरेक लागलक।
- मरडबुरु - आउर फिन बन, नदी, पहार, टोगरी, खोह, पझरा मन चिता आउर पाण्डु कर पिरीतक कथा जोड़ते गेलक। दुइ पिया पिरीत में इसन डुबनी डुबलैं कि इमन के बुझालक कि ई बन में सउब दिन सरहुल लखे सखुआ फूल फुलले रही।
- सोबरनखा - आखिर ई बन पिरीतक सखुआ फूल फर धरिये लेलक। पाँइख लागल सखुआ फर आब उड़े ले तइयार होए गेलक। बन कर सीतल छाँइह में जनमल चिता आउर पाण्डु कर परपन पिरीत एगो सवाल बइन के आए धमकलक।
- नजहर गारह - अंधार तले इंजत
(देवीगुड़ी एकाइर दुइयो बतियात हैं)
- चिता - मुँडा समाज कर रीत-बिध अइत निठुर आहे पाण्डु। हामरे कर पिरीत निबनता रहे। इकर हामरे के होसे नि रहलक। हामरे आपन

- पिरीत में एतना बेसुध होए गेली। हामरे के समाज नि जुन मंजूर करी।
- पाण्डुनाग** - आउर मोएँ तोके जुन नि छोइड़ सकोंन।
- चिता** - हामरेक पिरीत कर सजा हेके देसे से निसकाए बहराए देक। हामरे बिठलाहा कहर देल जून जाब! पड़हा, मानकी राजा केउ कोनो नि सुनबैं! महाराजाव तो उनकरे जुन सुनबैं।
- पाण्डुनाग** - हामरे जाब तो कने जाब? समाज हामरे के मंजूर करी निही! आउर ई बन हामरे के जिएक नि देह। मोके तो फिकिर जान मारत हे। ई हामरे कर पिरीत कर फूल तझर निशानी के कइसे बचाब? कहों नाग आउर मुँडा मनक समरसता महासंग्राम में ना पलइट जाइ!
- चिता** - इकर ले आगोहों मुँडा आउर संताल मनक बीचे माधो कोड़ा के लेह के भयानक लड़ाई होए रहे। आउर संताल मनके भागेक पड़लक। कहों एहे नियर आउर घइट गेलक हले! इकर पाप, के बोही?
- पाण्डुनाग** - तब एके डहर आहे - अंधरइया पोखइर से पार होए जाएक।
- चिता** - आउर हामर ई पिरीत के! सिरमासिंड कर भरोसा? ...इके ... निहीं... मोएँ नि छोड़ेक पारमैं!
- पाण्डुनाग** - तब मुँडा-नाग मनक भयानक लड़ाई आउर बिदरी विनाश करे ले तेयार होए जा! तोऐँ इकरो ले तेयार नि होबे! इके सिरमासिंड कर भरोसाव छोड़ेक ले तेयार नखिस! तो कइसे बनी? ई महाविनाश के तो रोकेक होइ नि! महादेव कर जइसन इच्छा आब!
- चिता** - मोर कलेजा फाटत हे पाण्डु! इके छोड़ेक सोइच के!
- पाण्डुनाग** - मोर तो कलेजा निकइल जात हे! बड़ पाप बोहेक सिता तो छोटे पाप बोहेक नि�.....
- चिता** - हे सिरमासिंड तोहें डहर बताव! जइसन तोऐँ हामरे के पिरीत में मिलाले, सइसने, कइसनो बचावे सिरमासिंड! हामर पिरीत कर फूल के।
- पाण्डुनाग** - हे महादेव! तोर इच्छा के हामरे मानली कि नि मानली सेके तो मोहों नि जानों। तोर देल हिया, पिरीत कर कोन धुका में उड़ियालक सेखों मोऐं बुझेक नि पारलों। आब तोरे आसरा! हामर पिरीत कर चिनहा कर रक्षा तोरे हाथे सोंइप जात ही।

- चिता** - हामरे निरबुधिया आही सिरमासिंडा। तोहें हामर पिरीत केर चिनहा के जोगाबे-बचाबे।
नज़इर बारह - अंधार तले इंजत
- मरङ्गबुरु** - सुतियाम्बे कर देवी गुडी में छउवा के जनम दे के चिता आउर पाण्डु नाग अंधरिया पोखइर चइल आलैं। नवाँ जनमल छउवा के पोखइर एकाइर में कमल पतझ मनक डिसना-डबना में सुताए देलैं। सिरमासिंड आउर महादेव, देवी गुडी आउर देसाउली कर नाँव लेइ के उनकरे भरोसा छोइड़ राखलैं। ओहे अंधरिया पोखइर में समाए गेलैं, दुइयो चिता आउर पाण्डु नाग। दुइ पेयार करहया जोडी लोक हित ले आपन के तेयाइग देलैं।
- सोबरनखा** - अंधरिया पोखइर कर कमल फूल मन ई दुइयोक पिरीत कर गोवाही बनलैं। मुँडा-नाग समाज के महाविनाश से बचाएक ले आपन जिनगी के दुइयो तइज देलैं। भारी मारा-काटा होते-होते रइह गेलक।
- मरङ्गबुरु** - केखों बनार नि लागलक दुइ प्रेमी एहे अंधरिया पोखइर कर डहर ले एक पिरीत लोक में पोहँइच गेलैं। एहे धरती में छाँइ रूप में आए घुरेक ले।
- सोबरनखा** - हिने अंधरिया पोखइर एकाइर, नवाँ जनमल छउवा, आपन गोडो हाथ हिलाए-डोलाए नि पाइर रहे कि गोटे जबर विशाल नाग साँप आपन फेन जोरले छउवा कर मुँडी दने रउद तेहें छाँइह करत रहे! कि सुनसान ठाँव होएक गुने उकर पहरा करत रहे! कि ना जाइन उके चाबेक ले उकर हिलेक-डोलेक कर आसरा देखत रहे!
- मरङ्गबुरु** - हुने सुतियाम्बे गढ आउर बन-पतरा दने महाराजा मदरा मुँडा चिंतामणि (मदरा महारानी) दीवान युधिष्ठिर दास सभे अलगे-अलगे चिता कर खोजार में भटइक बुलत हैं। बन-पहार, नदी-गाढा, डोभा-पोखरा, लतरा-खोह बेटे।
- नज़इर तरह - अंधार तले इंजत**
(पोखइर एकाइर)

युधिष्ठिर दास - (**पोखइर एकाइर देखते ताकते-तले मुँह हाथ धोवाए के फिन चाझरो करे नज़इर कुदाएक लागलक कि**) अरे बाप रे बाप! महादेव महादेव! एतना जबर नागदेव। फेन जोहर के का

के देखत है? (थिथाय के देइख के) आयँ बाप। हेंठे कमल पतड़ कर कुधा में तोपाल नवा जनमल छउवा। महादेव महादेव! महाराज के बोलाएक चाही! (हँकाएक लखे होएल कि मदरा मुँड़ा महाराज पोहँइच जाएँन कि पाउछ लागले तझर चिंतामणि (मदरा महारानियो) आए जाएँन संजोगे)

मदरा मुँड़ा - का बात आहे दीवान साहेब! अकबकाल तझर दिसत हैं! लेउ महारानियों आए गेलैं।

युधिष्ठिर दास - महाराज! उने देखैं। जिनगी आउर मवइत कर खेला!

चिंतामणि - हुआँ तो बालक छउवा आहे महाराज! इकर आयो-आबा कने गेलैं इके छोइड़ के! दीवान साहेब!

युधिष्ठिर दास - पता नखे महारानी साहेब! मोएँ तो चिता बेटी के दानते खोजते ई पोखरा ठिन पानी पिएक-धोवाएक आलों तो देखत हौं।! ई जे आउगे दिसत हे!

चिंतामणि - बुझाएल, ई बालक छउवा कर आयो-आबा हारक कहों गेल चलते ई नागदेव पहरा करत हैं। हिजा तो नाग मन पूजा करल जाएँन नि दीवान साहेब!

मदरा मुँड़ा - आब हामरे के देइख के नागदेव आपनेहें चइल जावैं। (साँप पानी में ढुइक जाएल)

चिंतामणि - नागदेव पोखर में ढुइक गेलैं। मोएँ उठाँवना। (कुइद जाए के बालक छउवा के उठाए के देखेक लागेन) कतना सुन्दर तेजगर छउवा बुझात हे। केकर होए सकेल? इकर आयो-आबा हार मन इके छोइड़ के गेलैं कहाँ आगिर? इके मोएँ ले जाओं महाराज?

मदरा मुँड़ा - निहीं, ई हामर बेटा मटुक राय से झगरा करी।

चिंतामणि - झगरा-पछरा नि लागबैं महाराज! हामर बेटा मटुक राय कर खेलेक ले संग होए जाइ।

मदरा मुँड़ा - ई केकरो आउर कर संपति हेके महारानी! इके हामरे कइसे ले जाब? इकर निरनय तो महारानी के आपने करेक चाही!

चिंतामणि - एखन तो ई नवाँ जनमल तेजगर छउवा कर तो केड नखैं जुन! ई हामर हिजा रही। अगर जे केकरो होइ तो आए के ले जाइ! नि लेजबैं हले हामर बेटा मटुक राय संगे पोसाइ!

- मदरा मुँडा - महारानी कर फैसला से मोएँ बेजाँह खुश होलों।
- चिंतामणि - तो मोएँ इके एखन लेते जात हों।
- मदरा मुँडा - बेस तब ! अपने कर मन आहे तो मोएँ आउर का कइह सकोन !
जनि जाइत तो माँय कर रूप हेकैं।
- चिंतामणि - अपने बहुत उदार आहैं महाराज ! लागेल कि आपने मोर मन के बिडृत रहैं।
- मदरा मुँडा - अरे ! हामरेक चिता मइजा कर कहों पता लागलक ? दीवान साहेब ? महारानी ? केखो कोनो बनार लागलक ? (कोनो सोचेक तझर) मोएँ कोनो बिसरत हों तझर बुझात हे महारानी ! इयाइदे नि होत हे !
- चिंतामणि - हैं ! (सोइच के) महाराज अपने आइझ बिहाने तो, एहे सपना बताए रहैं। नागदेव....
- मदरा मुँडा - नगदे इयाइद करवालैं महारानी ! एकदम सुपट, ओहे सपना देखल तझर। नाग फेन कर हेंठे बालक छउवा। आउर नागदेव मोके कहलैं - ले जा महाराज ! ई छउवा को। इके पाल-पोस। ई तोर नाँव के जगाइ। बडे जबर बलवान, बुझधगर, लोकप्रिय महाराजा होइ, ई सुतियानागपुर कर !
- चिंतामणि - बालक छउवा भेटाए गेलक। ओह ! इकर आयोहों हार तो भेटाए जातक। हामर चिता नन्दो का जाइन कने चइल जा हैं ?
- मदरा मुँडा - चिताए कर तो चिंता खाए जात हे महारानी !
- युधिष्ठिर दास - महाराज ! मोएँ सुतियाम्बे में दिगवार से हँकवा करूवाए देमूँ, ई नवाँ जनमल छउवा ले.....
- मदरा मुँडा - निहीं दीवान साहेब ! भुलियो के ना करब। इज्जत कर बात हेके।
- युधिष्ठिर दास - निहीं महाराज ! मोएँ बालक छउवा ले हँकवा करूवाएक बात कहलों। चिता बेटी ले निहीं। नि तो हामरे का ले खोजती !
- मदरा मुँडा - आखिर चिता मइजा गेलक कहाँ ? काय दिन ले उके भइर नजइर देइख तक नखों !
- चिंतामणि - हिने कुछ दिन ले चिता नन्द, चिंता में पड़ल दिसत रहैं। जहिया ले चीता बाघ, इनकर आउर पठरू उपरे झपटा माइर रहे से घरी ले डराल-डराल, चुपचाप मटियाल तझर रहेक लाइग हैं। उनकर बोली-हाँसी तो कने लुइक गेलक से दिन ले। लागेल उनके डर

समाए जाए हे। कोनो कहले, पुछले दूरे ले 'हँ' 'हूँ' 'निहीं' कइह के बात के मटियाए देन। बस खाली छगरी कर पाढे आउर पठरू के पोटराले रहबैं, छउवा मन तझर!

मदरा मुँडा - कइसन भउजी हेकैं! भउजी होए के नन्द कर खेयाल नि राखेक पारैं। छोट नन्द बेटी बराबहर होएल। से ले कहत हों, माँय सिखाए बेटी, बाप सिखाए बेटा। बेटी तझर नन्द कर मनक बात के बुझेक नि पारै? कइसन माँय तझर भउजी हेकैं? कहीं उकर सुखमुँड़ तेहें तो चिंता नि करैं।

युधिष्ठिर दास - बात न धुराल जाओक महाराज ! एखन चिता कर सुखमुँड कर निहीं उके खोजेक कर चिंता करेक चाही।

चिंतामणि - डाली दाम खाली हामरे हिजा भझर निहीं ई नागदेशो में डाली दाम लेल जाएल महाराज ! मोरो आयो-बाबा तो अपने मन से सुखमुँड़ ले रहें।

नजझर चौदह - अंधार तले इंजत

मरड़बुरु - आखिर चिता और पाण्डु नाग कर कहों केखो बनार निहिंए लागलक। अंधरिया पोखझर जे कहियो कमल कर फूल से टपाल रहत रहे आब हुँआ खाली दुई गो कमल फूल भझर फूलेल।

सोबरनखा - दुइ पिया, दुइ फूल बइन के अंधरिया पोखझर में समाए गेलैं। चिता आउर पाण्डु नाग कर इयाइद अनजाने रझह गेलक।

मरड़बुरु - मदरा मुँडा, चिता बहिन कर इयाइद में घुइट-घुइट के बेसमय में बूढ़ा होए गेलक। नाग फेन कर हेंठे पवाएक खातिर उकर नाँव फणि मुकुट राय राखल गेलक आउर उकर किली-गोत्र देल गेलक नाग।

सोबरनखा - आउर मदरा मुँडा कर बेटा मटुक राय कर किली-गोतर तो हंस रहबे करे। मटुक राय बड़ आउर फणि मुकुट राय छोटा। एहे पोस बेटा होलक महाराजा मदरा मुँडा कर।

मरड़बुरु - फणि मुकुट राय कर आयो-आबा कहियो नि आलैं। दुइयो बेटा बड़ प्रेम सैं पीठा-पीठी भाई लखे आँटा-गोली खेलतैं। कखनो-कखनो फणि मुकुट राय कर आँटा-गोली मटुक राय कर आँटा-गोली के माझर के फोझर देवे। तइयो दुइयो भाई हाझर-जीत ले, आँटा-गोली फुटेक चलते झगरा-पछरा नि करतैं।

सोबरनखा - मटुक राय आउर फणि मुकुट राय युधिष्ठिर दास से शिक्षा पाएक लागलैं। दुझ्यो सेयान होलैं। तो एक दिन महाराजा मदरा मुँडा आपन पड़हा, परगना, मानकी, परमुख, सरदार, मुखिया सभे के बरहा टाँड़ में बोलालक।

**नज़इर पंदरह - अंधार तले इंजत
(अखरा में सभा बइठल आहे)**

मदरा मुँडा - माझनगर ! नाग सरदार, पड़हा राजा, मानकी, परमुख, सरदार, मुखिया मन आउर बाकी सउब सुतियाम्बे कर सभा में आवल मानिंद मन। जे लखे हामरे सउबक मत से नवाँ महाराजा कर चुनाव करीला, उसनेहें आझ्ञ नवाँ महाराजा चुनल जाओक। आउर मोके महाराजा कर भार से मुक्ति देल जाओक। मोर से जे बइन पड़लक सुतियाम्बे लगिन मोएँ अपने मनक मदइत से पूरा करेक तिहा करलों। अपने मन सैं विनती आहे कि नवा महाराजा के चुनेक में पूरा-पूरी मदइत करैं। दीवान साहेब ! आगे कर बात के राखल जाओक।

युधिष्ठिर दास - माझनगर महाराजा साहेब आउर सभा में आवल सभे मानिंद ओहदेदार मन ! नवाँ महाराजा कर चुनाव तेहें अपने मन जेके चाहत हैं उनकर नाव देवैं। जे एक गो ले बगरा होबैं तो उनकर जे रीत से इनतिहान लेल जाएल उसने लेल जाइ। सउब ले आगे तीरंदाजी कर, घोड़ सवारी कझर के पूरा राझ घुझर आएक कर, भार बोहेक, नहाएक, लुगा पिंधेक, कलवा करेक कर आउर आखरी में आवल पंचायत कर मामला के निसाफ करेक आउर अगर अपने मन चाहैं तो आउर कुछ नवाँ विधियो से ले सकैना।

नाग सरदार - मोएँ मटुक राय कर नाँव राखत हों नवाँ महाराजा ले।

पड़हा मानकी - मोएँ फणि मुकुट राय कर नाँव लेत हों नवाँ महाराजा ले। (तनि देरी मटियाल बादे)

मदरा मुँडा - आउर कोनो नाँव अगर देक चाहत हैं तो दे सकैना।

असुर प्रधान - आउर निहीं। एहे दुझ्यो के परखल जाए।

नज़इर सोलह - अंधार तले इंजत

मरडबुरु - महाराजा कर चुनाव में जनतंत्र मोताबिक फणि मुकुट राय जीत गेलक।

सोबरनखा - मटुक राय कम बहादुर आउर होशियार नि रहे ! तनि-तनि ले राजा चुनेक में पाछे रइह गेलक।

मरडंबुरु - फणि मुकुट राय के लील झंडा कर हेंठे नाग मुकुट पिंधाए के महाराजा बनाल गेलक।

सोबरनखा - आउर मटुक राय के उकर गुन के देखते महाराजा फणि मुकुट राय कर दीवान बनाल गेलक हरियर झंडा कर हेंठे हँस मुकुट पिंधाए के।

नज़इर सतरह - अंधार तले इंजत
(मदरा मुँडा कर कोठा)

चिंतामणि - महाराज अपने ठीके कइह रहैं। ई बालक हामर बेटा से झगड़ा करी। झगड़ा तो उसन नि होलक पहें आइझ फणि मुकुट राय नि रहतक हले हामर बेटा मटुक राय बेगर बिरोध कर महाराजा होए जातक। का ले कि तब इकर केड जोड़ीदार महाराजा ले नि उठतलैं।

मदरा मुँडा - रानी ! ई गुदरल बात हेके। आउर गुदरल बात के सुधराल नि जाए सकेल। हामरे कर दुझ्यो बेटाए हेकैं। बड़ महाराजा नि होलक तो का होलक ! हामरेक छोट बेटा तो महाराजा बनलक। हामरे के खुश होएक चाही कि हामरे जनतंत्र कर रीत के पुरखा मन तझर निभाली।

चिंतामणि - महाराज ! एक दिन हामरे कर दीवान साहेब कहत रहैं सुतल अदमी कर मुँडी दने अगर नाग साँप फेन जोझर के ठाढ़ होए देवे तो ऊ अदमी महाराजा बनबे घरी।

मदरा मुँडा - से तो सच होइए गेलक। आइझ ले ई सगुण कहाउत बहन गेलक महारानी। इके आब एहे रूपे कहबैं।

नज़इर अठारह - अंधार तले इंजत
(सुतियाम्बे गढ़ कर राइज दरबार)

फणि मुकुट राय - माइनगर महाराजा मदरा मुँडा, सउब आवल मानिंद ओहदेदार मन, आउर भाई-बहिन मने ! मोऐँ नाग गोत्र, मदरा मुँडाक बेटा, घोषणा करत हों कि नागराज आउर मुँडा राज व्यवस्था कर पालन होते रही। इकर ले अनुभवी मन से राइज चलाएक ले मोऐँ मदरा पांजी बनुवामूँ। आइझ तिथि से मोर वंश नागवंशी कहाइ। आउर

सउबे नागवंशी आपन आएक पीढ़ियो में मुँड़ा मन के आपन बड़ा दादा कर माइन देते रहवैं। ई सच आहे कि मोर असल आयो-आबा कर बनार निहींए लागलक। पहें मोके बुझाएल कि मोर काया में नाग आउर मुँड़ा जाइत कर लहू बहत हे। मोएं आपन पोसइया आयो महारानी चिंतामणि आउर आबा महाराजा मदरा मुँड़ा कर जिनगी भहर ऋणी रहमूँ आउर इकर आगोहों नागवंशी मन मुँड़ा मनक ई महान उपकार लगिन भविस में ऋणी रहवैं। मोएं अपने मनक आपुसी मदइत के जस कर तस बनाले राखेक चाहोंना। एक धाँव आकास भेदेक तझर महारानी चिंतामणि आउर महाराजा मदरा मुँड़ा कर जयघोष करल जाओक।

दिग्वार - महारानी चिंतामणि कर

भीड़ - जय

दिग्वार - महाराजा मदरा मुँड़ा कर

भीड़ - जय (तीन धाँव जयजयकार होएल - जयजयकार गुंजरेल)

(नाटक ढुडू).....



श्रुति रंग

हिन्दी खण्ड

महाराजा मदरा मुण्डा

विषय प्रवेश :— झारखण्ड का ऐतिहासिक नाटक। धरती का प्रथम भूखण्ड झारखण्ड। आदि मानव के जन्म और उनके विकास की कहानी। सभ्यता और संस्कृति बनने की घटना। अलग—अलग कबीलों का बनना। उनके रहने का स्थान। उनका एक स्थल छोड़ कर दूसरे—दूसरे स्थानों में जा बसना। फिर उनके वापस झारखण्ड आ बसने का इतिहास। मौखिक इतिहास। पुराने गड़े और प्राप्त पुरातत्वों से ज्ञात इतिहास। नये शोध से प्राप्त इतिहास। लोक गीत, लोक कथा, लोक गाथा, कहावतों आदि की अलौकिकता का लौकिक रूप में वर्णन। कल्पना का सहारा लिया — महाराजा मदरा मुण्डा — हिन्दी श्रुति रंग — दृश्य नाटक। लोक नाट्य शैली में प्रस्तुत —

काल — झारखण्ड के आदिमानव काल से फणि मुकुट राय के महाराजा बनने तक का काल।

पात्र — नट — मरडबुरु,
नटी — सुवर्णरेखा,
रिसा मुण्डा,
पहान,
दिगवार,
नागदूत,
नागराज,
नाग सरदार,
चिता,
पाण्डुनाग,
युद्धिष्ठिर दास,
मदरा मुण्डा,
चिंतामणि (मदरा महारानी),
फणि मुकुट राय,
मानकी,
असुर प्रधान,
भीड़ तथा नृत्य दल।

नाटक में प्रयुक्त दो मुण्डारी लोकगीत जगदीश त्रिगुणायत की
'बाँसरी बज रही' पुस्तक से सभार।

महाराजा मदरा मुण्डा

दृश्य एक — अंधकार से प्रकाश

- नटी — (आकर) अरे! ये अपार भीड़ क्यों? जरूर नट कोई नया नाटक खेल रहा होगा। कौन नाटक खेलेगा? झारखण्ड राज्य के उदय दिवस पर।
- नट — (खोजते आकर) तुम यहाँ हो नटी! और मैं तुम्हें न जाने कहाँ—कहाँ नहीं ढूँढ़ता फिर रहा हूँ।
- नटी — वह क्यों?
- नट — लो! जैसे तुम्हें कुछ ज्ञात ही नहीं! तुम्हीं ने तो कहा था! झारखण्ड निर्माण दिवस पर हमलोग “महाराजा मदरा मुण्डा” नाटक खेलेंगे।
- नटी — अरे हाँ! मैं तो झारखण्ड राज्य का नया सूर्योदय होगा, उसी खुशी में उसे तो बिल्कुल ही भूल गयी। आज के ही दिन के लिए न तैयारी थी? मगर इस भूल में मेरा क्या दोष?
- नट — दोष तुम्हारा नहीं! दोष तो आज की व्यवस्था का है।
- नटी — और नहीं तो क्या? देखते नहीं! नये झारखण्ड राज्य का सूर्य उदय ले रहा है — आधी रात को। जितने आने—जाने वाले हैं, सब पर कड़ी नजर रखी जा रही है। उन्हें रोका—टोका और जाँचा जा रहा है!
- नट — इसी से पूरे राज्य में सन्नाटा छाया हुआ है। चारों ओर चौक — चौराहों पर पुलिस की फौज तैनात है।
- नटी — फिर यह भीड़ यहाँ आ कैसे गयी?
- नट — ये भीड़ कैसे आयी? जानती हो! जो राजभवन के पास उत्सव—मेला लगाने पहुँचे थे उन्हें सिपाहियों ने भगा दिया!
- नटी — और वे सभी भाग कर यहाँ आ बैठे!
- नट — केवल यही बात भर नहीं थी। इस भीड़ को ज्ञात थी — आज के नाटक खेला का! लेकिन झारखण्ड राज्य निर्माण के बाद।
- नटी — तभी इनको झारखण्ड के प्रथम महाराजा मदरा मुण्डा के नाटक की प्रस्तुति खींच लाई समय से पहले।
- नट — ऐसा महाराजा न कभी हुआ हैं न कभी होगा, इस झारखण्ड में। कितने राजा — महाराजा आए और चले गए। लेकिन महाराजा मदरा मुण्डा का नाम सबसे ऊपर विद्यमान है और रहेगा।

- नटी - लेकिन लोग तो महाराजा मदरा मुण्डा का नाटक देख कर औँखों को सुख देने आए हैं। इतने सारे लोग। तो लीजिए प्रस्तुत हैं आज के झारखण्ड राज्य के शपथ ग्रहण दिवस पर –
- नट - महाराजा मदरा मुण्डा नाटक का खेला। (अचानक नटी मुँह लटका लेती है) अरे! अचानक तुम्हें हो क्या गया? मुँह लटका क्यों ली?
- नटी - (उदास स्वर में) सोच रही हूँ। महाराजा मदरा मुण्डा का इतिहास तो बहुत पुराना हैं। इसे बतलाएगा कौन?
- नट - बताएगा कौन! बताएँगे भूगोल – इतिहास और लोक जीवन के प्रत्यक्ष द्रष्टा मरडबुरु और स्वर्णरेखा।
- नटी - लेकिन! मरडबुरु और सुवर्णरेखा की बातों को कौन विश्वास करेगा भला ? कहो तो!
- नट - कौन विश्वास करेगा! जो अपने लोक कथा को, लोक गाथा को, लोक गीत को, लोक कहावतों को, लोक जीवन को, लोक संस्कृति को जानता, मानता और विश्वास करता हो।
- नटी - और जो लोक साहित्य को न जानता, मानता हो, वह कैसे भला विश्वास करेगा?
- नट - जो नहीं विश्वास करेगा तो वह देशी-विदेशी विद्वानों, इतिहासकारों, मानव विज्ञानियों, शोधकर्त्ताओं आदि की पुस्तक पढ़ ले कि ये क्या बता गए हैं – झारखण्ड का इतिहास।
- नटी - मुगलों और अंग्रेजों ने तो अपने ढंग से इतिहास लिखा है और लिखवाया भी है।
- नट - वह तो बिल्कुल सत्य कह रही हो नटी। मगर यहाँ के पुरातत्त्व से प्राप्त प्रमाण और इतिहासकारों की बतायी बातों में कहीं तालमेल है?
- नटी - वह तो बिल्कुल नहीं है।
- नट - तब भी इतिहासकारों की लिखी बातों के विश्लेषण से सत्य का पता तो चल ही जाता हैं। सच मानो नटी! तो झारखण्ड का इतिहास ईमानदारी से, क्रम से, सजाकर, अभी तक न लिखा गया है और न तो पुरातत्वों की पूरी खोजबीन की गई है।

- नटी — तब भी किन—किन पुस्तकों के अध्ययन—मनन से मदरा मुण्डा का और झारखण्ड का पुराना इतिहास स्पष्ट होने लगेगा। इसे तो बताना न पड़ेगा।
- नट — उसे अभी बतलाए दे रहा हूँ — राय प्रद्युम्न सिंह की नागवंश (दो खण्ड), वेणी राम महथा की नागवंशावली, महाकवि धासीराम की — नागवंशावली झूमर, वरुण मणि की नागवंशावली, सेम तेपनो की कुर्सीनामा : मुण्डाओं का नृजाति इतिहास, डॉ. केशरी की छोटानागपुर का इतिहास : कुछ सूत्र, कुछ संदर्भ, गिरिराज की पीटर शांति नवरंगी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व एवं मरड गोमके (नाटक), नवरंगी की नागपुरिया सदानी बोली का व्याकरण और छोटानागपुर का संक्षिप्त इतिहास, योगेन्द्र नाथ तिवारी की नागपुरी भाषा का संक्षिप्त परिचय, जयशंकर प्रसाद की जन्मेजय का नाम यज्ञा, शरत चन्द्र राय की मुण्डाज एण्ड देयर कंट्री और उराँव ऑफ छोटानागपुर, मान गोविन्द बनर्जी की ऐन हिस्टोरिकल आउट लाइन ऑफ प्रि. ब्रिटिश छोटानागपुर, ब्रैडलीवर्ट की छोटानागपोर : ए लिटिल नोन प्रोविन्स, एच.एस. सक्सेना की सेफगार्ड्स फोर सेडयुल कास्ट एण्ड ट्राइब्स, जगदीश त्रिगुणायत की मुण्डा लोक कथा और बाँसुरी बज रही, सोसो बोंगा, बंगाल सेक्रेटेरियट की लिस्ट ऑफ मोनुमेण्ट्स इन दि छोटानागपुर डिवीजन, मनोहर हंस (मरडहादा) की मुण्डा लीजेण्ड और लोगों की पुस्तकें देखी जा सकती हैं।

दृश्य दो — अंधकार से प्रकाश

- मरडबुरु — मैं झारखण्ड का सबसे पुराना पहाड़ मरडबुरु। मुझे बड़ पहाड़ी भी कहते हैं। लगभग तीन अरब वर्षों से देख रहा हूँ झारखण्ड के भूगोल को बनते बिगड़ते
- सुवर्णरेखा — और मैं सुवर्णरेखा। देख रही हूँ झारखण्ड के इतिहास और आदिमानव, आदिममानव, सदान, आदिवासी और लोक जीवन को बनते, बिगड़ते, जुड़ते
- मरडबुरु — धरती का प्रथम भूखण्ड झारखण्ड। गोडवाना पठार का उत्तर—पूर्व का प्रभाग। धरती में लावा युग के बाद यहाँ खनिज बनने लगे। साखू और तरह—तरह के पेड़—पौधे पनपे। उसमें नाना प्रकार के जीव—जन्तुओं का सृजन हुआ।

- सुवर्णरेखा** — और तब आया आदि मानव। पाषाण काल आया। ताँम्बा युग आया और आया लौह युग। आदिम भाषा—संस्कृति और सम्यता का विकास होने लगा।
- मरडबुरु** — और वह कहलाया नाग—असुर जैसी अनार्य जातियों की संस्कृति। यही वे मानव हैं जिन्होंने झारखण्ड में नाग—असुर जैसी सम्यता संस्कृति की आधार शिला रखी। और यह भूखण्ड कहलाने लगा नागदेश। अनार्यों का नाग देश अभी का झारखण्ड।
- सुवर्णरेखा** — इसी भूमिखण्ड से आदि मानव का एकेक थाक (दल) विभिन्न कबीलों के रूप में समय—समय पर आगे—पीछे यहाँ से निकलते गए। ये धुमंतु कबीले बन कर अपनी—अपनी भाषा—संस्कृति का विकास करने लगे। जो कबीले यहाँ रह गए वे सदान कहलाने लगे। यही लोग नाग, सराक और असुर जाति के हुए।
- मरडबुरु** — धुमंतु कबीलों में होड़ोको (मुण्डा) लोगों ने समय के साथ आजमगढ़, कालिंजरगढ़, गढ़चितर, गढ़नगरवार, गढ़डहरवार, पालीगढ़, गढ़पीपर, मुंडार पहार, बीजनागढ़, हरदीनगर, लकनूरगढ़, नन्दनगढ़, राजगढ़, रईदासगढ़ आदि को आबाद किया।
- सुवर्णरेखा** — इन गढ़ों में पहले मुण्डाओं ने राज्य किया। आजमगढ़ में साम मुण्डा, कालिंजरगढ़ में बिरसा मुण्डा (भगवान बिरसा नहीं), गढ़चितर में चम्पा मुण्डा, गढ़नगरवार में करमा मुण्डा, गढ़डहरवार में ढुका मुण्डा, पालीगढ़ में गारगा मुण्डा, गढ़पीपर में सोमरा मुण्डा, मुंडारपहार में लेंदा मुण्डा, बीजनागढ़ में पोटा मुण्डा, हरदीनगर में नगु मुण्डा, लकनूरगढ़ में उदय मुण्डा, नन्दनगढ़ में गंगु मुण्डा, राजगढ़ में मंगता मुण्डा, रईदासगढ़ में रझ्या मुण्डा ने गढ़ बसाया। इनके बाद काल क्रम से खड़िया, उराँव भी ऐसे ही गढ़ों में राज करते, छोड़ते आगे बढ़ते गए।
- मरडबुरु** — रईदासगढ़ मुण्डाओं का अंतिम धुमंतु गढ़ रहा। रईदास गढ़ में बीते दो वर्षों से अकाल पड़ा। इस वर्ष सरहुल में पहान पुनः भविष्यवाणी की।

दृश्य — तीन — अंधकार से प्रकाश।

(सरना स्थल)

(जदुर नृत्य—गान चल रहा है, मुण्डा सरहुल मना रहे हैं। सरना में सरहुल पूजा हो रही है। नृत्य संगीत चल रहा है।)

अटा मटा बिरको तला रे -	इस घने जंगल में
अलो होम निरजा बागिडा -	तुम मुझे छोड़ कर मत भागो!
रामे को मारेचा रे -	इस कांटे भरे मैदान में -
अलो होम निरजा रड़ाइजा -	तुम मुझे छोड़ कर मत भागो!
काची होम लेले दीडा -	क्या तुमने मुझे नहीं देखा था?
सेंगेल लेकाइं जुलेतानरे -	जब मैं आग के समान चमक रही थी!
काची होम चिना लेदीडा -	क्या तुमने मुझे नहीं पहचाना था?
दः लेकाइं लिगी तान रे -	जब मैं पानी की तरह उमड़ रही थी!
कागे चोवाइं लेलेदेमा -	हाँ, मैंने नहीं देखा था
दिसुमादो दूदुगार जान -	क्योंकि दुनियाँ में आँधी की धूल भरी थी।
कागे चोवाइं चिना लेदेमा -	हाँ, मैंने तुम्हें नहीं पहचाना था
गामाव दो कोवाँसी जान -	क्योंकि दुनियाँ में कुहासा छाया हुआ था।

(पहान अंत में पात्रों में रखे पानी की मात्रा को देख कर भविष्यवाणी करता है।)

पहान — भाइयो और बहनो मुझे बड़े दुःख के साथ कहना पड़ रहा है कि इस वर्ष भी अकाल का संकेत मिल रहा है इस रखे पानी से। पता नहीं क्यों सिरमासिड (सिडबोंगा) हमलोगों से प्रसन्न नहीं हैं।

रिसा मुण्डा — पहान भाई! हमलोगों को सिरमासिड से विशेष प्रार्थना और पूजा करनी चाहिए।

पहान — हमलोग, अपने सरदार रिसा (मुण्डा) के आदेश पर सिरमासिड के लिए एक श्वेत मुर्गा और तपावन के साथ पूजा करनी होगी। और सिडबोंगा के नाम पर एक रंगुआ मुर्गा छोड़ना पड़ेगा।

रिसा मुण्डा — भाइयो! लकड़ी एकत्र किया जाय और बहनो सरना स्थल को साफ कर एक बार और गोबर से लीपा जाए। (लोग लकड़ी जमा करने लगते हैं। लकड़ी के ढेर पर रंगुआ मुर्गा को चढ़ाया जाता है। श्वेत मुर्गा और हँड़िया तपावन से पूजा करते हैं।)

दृश्य चार – अंधकार से प्रकाश।

- मरडबुरु – – सात दिन सात रात लकड़ी जलती रही। पूजा चलती रही नृत्य, वाद्य और संगीत का आनन्द चलता रहा। अंतिम दिन रंगुआ मुर्गा सिड्बोंगा के नाम पर छोड़ा गया। वह पूरब – दक्षिण की ओर भागने लगा। वह कभी उड़े कभी दौड़े।
- सुवर्णरेखा – – सभी होड़ोको (मुण्डा) रंगुआ मुर्गा के पीछे चलने लगे। सात दिन, सात रात रंगुआ मुर्गा का पीछा करते एक थाक (दल) पहले बुढ़मू घाट पार कर ओमेडंडा (उमेडंडा) आ पहुँचा।
- मरडबुरु – – ओमेडंडा (उमेडंडा) जैसे नये स्थल को देखकर रिसा सरदार ने अपने दिगवार को पता करने के लिए कहा कि इस सखुवा के बन में पहाड़ी के भीतर क्या है? अधिक से अधिक सात महीनों तक पूरा पता लगा कर लौटने का आदेश दिया।
- सुवर्णरेखा – – और दिगवार कुछ आदमी, बच्चे, दुधारू गाय और बकरियाँ ले कर निकल पड़ा।

दृश्य पाँच – अंधकार से प्रकाश।

(जंगल के किनारे)

- रिसा मुण्डा – – आज तक तो दिगवारों को लौट आना था। सात महीने पूरे हो गए। वे लौटे क्यों नहीं! हमारे शेष नौ थाक (दल) भी आ गए।
- पहान – – (आकर) लौट आए सरदार। दिगवारों का दल आ पहुँचा।
- दिगवार – – (आकर) जोहार सरदार गोमके। हमलोग अच्छी तरह लौट आए।
- रिसा मुण्डा – – कहो दिगवार भाई! क्या पता कर लौटे इन सात महीनों में?
- दिगवार – – सरदार! यहाँ नाग, सराक और असुर जाति के लोग भरे हुए हैं। जंगल के भीतर बीच–बीच में इनके गाँव बसे हुए हैं। स्थान–स्थान पर बड़े–बड़े भट्ठों से जो निकलता है उसे ताँबा और लोहा कहते हैं। वे उस ताँम्बे और लोहे से तरह–तरह के हथियार, बरतन, गहने और क्या–क्या चीजें बनाते हैं। यहाँ के गाँव बहुत सुन्दर और व्यवस्थित हैं। कल इनके यहाँ नाग प्रिय महादेव की बहुत बड़ी पूजा है। उरी की तैयारी चल रही है।

- रिसा मुण्डा — हूँ। तब तो हमलोग नाग दिसुम में पहुँच गए। कल ही मैंने ऐसे ही लोगों को सपने में नाग पगड़ी बांधे, नागों की पूजा करते देखा है। वह सच हो गया। हाँ, आगे कहो और
- दिगवार — यहाँ की व्यवस्था बहुत सुंदर है। हरेक टोले में एक-एक प्रकार का काम होता है। सभी मिल कर रहते हैं। एक दूसरे के काम आने वाली वस्तुओं का निर्माण करते हैं। ये बहुत सम्पन्न हैं। इनकी बोली-भाषा हमलोगों से अलग हैं। ये नाय जाति के लोग हैं जो सदान कहलाते हैं और इनकी बोली को सदानी या नागपुरिया भी कहा जाता हैं।
- रिसा मुण्डा — इन सात महीनों में इनकी बोली-भाषा सीख सके या नहीं?
- दिगवार — चरवाहे बच्चों के साथ रहते, हमारे बच्चे भी काम चलाने भर बोली — भाषा सीख गयें हैं।
- रिसा मुण्डा — तब तो तुमलोगों ने बड़ा ही अच्छा काम किया। लेकिन क्या तुमलोगों ने ये पता लगाया कि हमारे यहाँ आने को वे किस रूप में लेंगे? क्योंकि अब हमारे सभी दस थाक के इककीस हजार होड़ोको (मुण्डा) आ गए।
- दिगवार — यहाँ के नागों—असुरों को हमारे यहाँ आने की भनक लग गई हैं।
- रिसा मुण्डा — रात सपने में मुझसे सिरमासिड ने कहा — “तुम्हारे दुःख के दिन जल्द ही टुण्डू (खत्म) हो जाएँगे। तुमलोग मेरे ही बताए रथल पर अपने पुराने स्थान में आ गये हो। यहीं से तुम लोग एक समय निकले थे। यहाँ नाग—असुरों के साथ हमेशा के लिए बस जाओ।” इतना सपने में सुनने के बाद से ही मैं सोचने लगा था कि नागों और असुरों के साथ हमलोग कैसे भेंट करें?
- पहान — सरदार! एक नया आदमी आया है और कुछ कहना चाहता है।
- रिसा मुण्डा — उसे आदर के साथ ले आओ। साथ में यहाँ की भाषा जानता हो उसे भी रखो। अच्छा, वह तो दिगवार जानता ही हैं। (दिगवार से) उनकी और मेरी बातों को अनूदित करते बतलाते जाना। दिगवार भाई! (नागदूत को दिगवार जाकर ले आता है)।

नागदूत — (आकर) मैं नागराज का दूत हूँ और मैं यहाँ पता करने आया हूँ कि आप लोग कौन हैं? कहाँ से आए हैं? और यहाँ आने का कारण क्या हैं। (दिगवार अनुदित कर बताने लगता है)

रिसा मुण्डा — हमलोग होड़ो को (मुण्डा) हैं। आजमगढ़ से आरंभ करते हमलोग 14 गढ़ों को छोड़ते रुईदास गढ़ आए। उसके बाद सिरमासिड के आदेश, सपने में पाकर यहाँ आ गए हैं। हमलोग दस थाक मतलब 21 हजार होड़ो को (मुण्डा) आए हैं। और यहाँ बसना चाहते हैं। (दिगवार बतलाता है)

नागदूत — कल हमारे यहाँ नाग पूजा के दिन यहाँ जो आ जाते हैं हम उनका स्वागत करते हैं। (दिगवार बतलाता है)

रिसा मुण्डा — कैसा स्वागत? (दिगवार बतलाता है)

नागदूत — आने वाले की इच्छा के अनुसार स्वागत करते हैं। (दिगवार बतलाता है)

**दृश्य छः — अंधकार से प्रकाश
(महादेव माड़ा के पास)**

(नाग पूजा हो रही हैं। नृत्य, वाद्य, संगीत से उत्सव चल रहा हैं)

के तो बनालक धरती रे? के तो टाँगलक अकास?

देवी माँय बनालैं धरती रे। महादेव बाबा टाँगलैं अकास।

कने बहलक निरामला पाइन रे? कने सलगलक आँगोर फूल?

दादुल घाटे बहलक निरामला पाइन रे। महादेव माड़ाए सलगलक आँगोर फूल।

कने तो उड़ियालक धुवन धुका रे? के जे फूकलैं सउब में जीव?

धुँवासी झुलुवा ठिन उड़ियालक धुवन धुका रे। महादेव बाबा फूकलैं सउब में जीव।

के जे उतरालैं बिखक दुख रे? के जे पिंधलैं नागक हार?

देवी माँय उतरालैं बिखक दुख रे। महादेव बाबा पिंधलैं नागक हार।

के मन चलबैं आँगोरक फूल में रे? के मन झिमकाबैं सीतल जल?

भगतिया मन चलबैं आँगोरक फूल में रे। सोखताइन मन झिमकाबैं सीतल जल।

का खाबैं भगतिया मन रे? का पीबैं सोखताइन?

दूध-फल खाबैं भगतिया रे। निरजल रहबैं सोखताइन।

के मन झूलबैं चरक डांग रे? का छीटबैं आसिस रूपे?

भगतिया मन झूलबैं चरक डांग रे। गुलइची फूलक हारे देबैं आसिस।

कहाँ बासा बाँधलैं महादेव बाबा रे? कहाँ माड़लैं देबी मायँ?

महादेव माड़ा बासा बाँधलैं महादेव बाबा रे। देबी गुड़ी माड़लैं देवी मायँ।

- (आगे की सभी बातों को दिग्वार अनूदित कर बतलाता जाता हैं)।
- नागदूत — (आकर) नाग राज! अतिथि सरदार और उनके कुछ लोग आ गए हैं।
- नाग राज — अतिथि सरदार और उनके लोगों को आदर सहित लाया जाए। (जाकर नागदूत अतिथि सरदार और उनके लोगों को ले आता है)।
- नाग राज — थोड़ी देर के लिए नृत्य संगीत रोक दिया जाए। (सभी गायन वादन नर्तन थ्रम जाते हैं)।
- रिसा मुण्डा — नाग दिसुम के नागराज को होड़ो सरदार रिसा (मुण्डा) अपने लोगों के साथ जोहार करता है। (जोहार करता है)
- नागराज — जोहार! स्वागत है होड़ो सरदार रिसा, आप सभी का।
- रिसा मुण्डा — क्या हमें आप लोगों के साथ रहने के लिए सम्मिलित करेंगे?
- नागराज — क्यों नहीं! होड़ो सरदार! आज नागपूजा के शुभ दिन में आप लोगों का आगमन हुआ है तो क्यों नहीं सम्मिलित करेंगे। जब जंगल के भयानक खतरनाक बाघ—भालू जैसे पशु यहाँ रह सकते हैं तो आप लोग क्यों नहीं रह सकते! आप लोग भी तो हमारी ही तरह मानव संतान हैं।
- रिसा मुण्डा — आप का विचार सुनकर हम बहुत खुश हुए।
- नागराज — हम सभी मिल—जुल कर रहेंगे। और हाथी, चीता, लकड़बघ्या, शेर—बाघ आदि से आमना—सामना होने पर हमलोग अपने को पूरी शक्ति से बचा सकेंगे।
- रिसा मुण्डा — तो हमलोगों के लिए क्या आदेश हो रहा है? हमलोग यहाँ बस जाएँ?
- नागराज — हमलोग आप लोगों को इस नागदेश में ऐसे ही बसने तो देंगे नहीं! इसके लिए तो आप लोगों को हमलोंगों के साथ सहिया जोड़ना पड़ेगा।
- रिसा मुण्डा — ये सहिया क्या होता है नागराज?
- नागराज — हृदय का साथ — सहिया का मतलब होता हैं। हमने अपना हृदय आप को दिया और आप सबने अपना हृदय हमें दिया। तो बस समझ लें सहिया हो गए, हमेशा के लिए,

सब दिन के लिए, दो प्राणी प्रेम की डोर में पीढ़ी दर पीढ़ी के लिए बंध गए।

रिसा मुण्डा — आप के इन अनमोल वचनों को हम हृदय से स्वीकारते हैं नागराज। हमलोग आप सभी से सहिया बनने के लिए तैयार हैं।

नागराज — नागपूजा दिन न रहने से हमलोग नये आगन्तुकों को पूछते हैं कि वे क्या चाहते हैं? हमारे साथ युद्ध करना या कि सहिया बनकर रहना।

रिसा मुण्डा — यहाँ बाहर से लोग आते रहते हैं क्या?

नागराज — बिल्कुल! यहाँ समय—समय पर कोई ना कोई कबीलों का दल आता—जाता रहता है। अनेक कबीलें तो लौटे भी नहीं। क्या पता आप लोग भी कभी यहाँ से गए हो और फिर घुम—फिर कर इस सुनहले नागदेश में युद्ध करने आ गए हो!

रिसा मुण्डा — हमलोग युद्ध करने तो आए नहीं हैं नागराज। हमने कहा न कि सिरमासिड के आदेश से स्वर्ण देश में (सोना नागपुर में) शांति से रहने आए हैं। और अब तो हमें सहिया बनाने के लिए भी तैयार हो गए आप लोग।

नागराज — आप की बातों से मन प्रसन्न हुआ होड़ो सरदार। (अपने लोगों को संबोधित करते) हमारे सभी लोग सुने। हमलोग होड़ो लोगों को करम डाली दें। गुलैची फूल की माला पहनाएँ। हम एक दूसरे को सहिया बनाने की घोषणा करते हैं। अपनी—अपनी पसंद से जोड़ी चुनकर सहिया बना लें। (सभी अपनी पसंद से जोड़ी ढूँढ़कर सहिया बनाने का उद्यम करते हैं। जिन्हें मिल जाता है वे सहिया बनते जाते हैं, गले मिलते हैं।)

नागराज — होड़ो सरदार आज से हमारे सहिया हुए। हमें इन लोगों की मदद करनी चाहिए आज से।

रिसा मुण्डा — हमलोग भी आप लोगों का सहिया बनकर एक दूसरे के सुख—दुख में समझागी बनना चाहते हैं।

नागराज — (अपने लोगों से) आप लोग ध्यान से सुने। तीन बार सहिया होड़ो सरदार की जय का नारा लगाएँ। (दिग्वार सभी को जय जयकार कराता है)

- रिसा मुण्डा – (अपने लोगों से) तुमलोग भी तीन बार सहिया नागराज की जय बोलो। (दिग्वार जय जयकार कराता है।)
- रिसा मुण्डा – नागराज आज हम बेहद खुश हैं। सिरमासिड के दिए सपने के अनुकूल सभी बातें अपने आप सच हो गईं।
- नागराज – (अपने लोगों से) आप लोग अपने—अपने सहिया को एकेके दोना तपान – हँडिया का प्रसाद दें। और प्रतिज्ञा करें कि सहिया जब तक संसार रहेगा, सहिया का नाता चलता रहेगा। आज नाग पूजा की खुशी में सभी अपने सहिया के साथ आनन्द मनाएँ। नाचे, गाएँ, बजाएँ (सभी नाग, सराक, असुर, मुण्डा आदि मिल कर अपनी—अपनी विधि से आनन्द मनाते और गीत गाते हैं।)

सोची-सोची सुखत रहे खून – कतना दिन रही हिया सून।

जिया में लागत रहे धून – राइत दिना रहे एके धून।

सहिया-सहिया कहते आइझ – बड़ी रे संजोगे गेली बाइझ।

सहिया के हिया में देली साइज – बड़ी रे उम्मो पाली ऐरेम राइज।

सहिया जोराए जिनगीक संगी पाली – मेटी नहीं सहिया, से किरिया खाली।

तले हिया ले हिया मिलाली – दुखक दिन के एहे ठिना सिराली।

देइ के करमक डाइर – सहिया के कररली जोहाइर।

लेइ के करमक डाइर – सहिया के लेली अँकवाइर।

गुलइची फूलक माला देली तो पिंधाए – एक दोना हाँड़ी देली तो पियाए।

रिझे रंगे गेली दुझ्यो सहिया उमताए – एके कोहिया में गेली तो दुझ्यो समाए।

छुटी निहीं सहियाक नाता दुनिया रहत भइर – सहिया कर धरी हेंठे पोकता जइर।

उपरे फेकी झबरल लदरल डाइर – सहियाक हियाक पिरीत देखी विधि जाइ हाइर।

दृश्य सात – अंधकार से प्रकाश।

(नागराज और रिसा मुण्डा चबुतरे पर बातचीत कर रहे हैं)

- रिसा मुण्डा – अब तो हमलोग पूरी तरह घुल-मिल गए सहिया। हम होड़ो लोग सुनहले देश की खोज में यहाँ आए थे और पहुँच गए नाग दिसुम में (नाग देश में)।

- नागराज – यह सोने का देश मात्र नहीं हैं सहिया। यह तो हीरों का देश हैं। इसे हम लोग हीरानागपुर कहते हैं सहिया। हम नाग जाति का यही हीरानागपुर जन्मभूमि, कर्मभूमि, धर्मभूमि और मुक्ति भूमि है सहिया।

रिसा मुण्डा — हमारे लिए क्या योजना है सहिया?

नागराज — क्या योजना रहेगी सहिया! इस जंगल झाड़, गड्ढे—ठील्हे को हमलोगों ने जिस प्रकार कोड़कर दोन—टाँड़, गाँव—घर बसाया और उसका एक एक नाम दिया — वैसे ही आप लोग भी अपना गाँव घर, खेत—खलियान, अखरा—जतरा बनाएँ, जंगल काट कर। और उसको अपना नाम दें। जिससे ज्ञात हो सके, किस गाँव—ठाँव को किसने बनाया— बसाया है। समझे सहिया! हमलोगों ने हृदय के साथ सदा—सदा के लिए संबंध जो जोड़ लिया है सहिया!

रिसा मुण्डा — यही तो हमलोग चाहते थे सहिया! मेरे मन की बातों को आपने कह दिया सहिया!

नागराज — आप के हृदय की बातों को कैसे न कहता सहिया! हमारा हृदय—मन, सुख—दुःख तो अब एक न हो गया सहिया!

रिसा मुण्डा — हमलोग, आप लोगों की तरह खेत—खलिहान, गाँव—घर बनाने के लिए आप लोगों की मदद चाहते हैं सहिया!

नागराज — क्यों नहीं! हमारी संस्कृति ही — “सहिया बइन करेक मदइत एहे हेके हामर रीत” — सहिया। हमलोग एक साथ मिल—जुल कर काम करेंगे जिसे हम मदइत कहते हैं। साथ काम करने के बाद साथ में खाएँगे—पिएँगे, नाचेंगे—गाएँगे—बजाएँगे। अखरा में आनन्द ही आनन्द होगा। मांदर बजेगा, बाँसुरी बाजेगी, केंदरा—टोहिला बजेगा, और नगाड़ा, ढाँक, ढोलक, ठेचका सभी बजेंगे।

रिसा मुण्डा — मुझे तो सहिया, आप की वाणी से अमृत झारता हुआ लग रहा है। हमें सब स्वीकार है। हम भी वचन दे रहे हैं कि जहाँ आपका पसीना गिरेगा वहाँ हमलोग लहू बहा देंगे।

नागराज — और हमलोग भी अपने सहिया का जहाँ लहू गिरेगा वहाँ हम सभी प्राण लगा देंगे।

दृश्य आठ — अंधकार से प्रकाश

मरडबुरु — इस प्रकार नाग, असुर, मुण्डा आदि की समरसता का जीवन पथ चलने लगा। इनके जमते—जमते खड़िया, उराँव और दूसरे दूसरे कबीले आते रहे। बसते रहे। नूतन संस्कृति शक्तिशाली होती गई।

- सुवर्ण रेखा** – समता मूलक सहिया समाज पक्का होता गया। ‘मदइत’ की प्रथा के कारण शोषण मुक्त समाज मजबूत बनता गया। साथ आनन्द मनाने, स्त्री—पुरुष की बराबरी, बिना आड़म्बर के धर्म—कर्म सब रमता गया। सबकी सह भागिता से, सर्वानुमति से, देश चलने लगा।
- मरडबुरु** – महादेव माँड़ा, देवी गुड़ी, सरना, देसाउली, संसनदिरी, मसना आदि स्थापित होते गये।
- सुवर्ण रेखा** – सहिया और मदइत की संस्कृति अविराम चलने लगी।
- मरडबुरु** – हर समाज, गाँव—घर, खेत—खलिहान, अगल—बगल बनने लगे।
- सुवर्ण रेखा** – अपने—अपने पेशे और खेती—बारी को अपने पसीने से सीचने में वे दिन काटने लगे। रात के गीत—संगीत से, आनन्द—उमंग से, एवं बाजे—गाजे से ही, जंगल के बाघ—भालू को वे खदेड़ने लगे। अखरा की घूल से सभी आनन्द में नहाने लगे। इनका बोलना ही गीत हो गया, चलना ही नृत्य हो गया और वक्ष एवं नितम्ब ही मांदर हो गया।
- मरडबुरु** – इस आनन्द उमंग के इतिहास में एक भयानक बखेड़ा खड़ा हो गया।
- सुवर्ण रेखा** – असुर—सराक लोगों द्वारा लोहा—ताँबा गला कर फेंके गए मलवे से पहाड़ के पहाड़ बनने लगे। वर्षा काल में ये मलवों के पहाड़ बह कर मुण्डाओं के बनाए खेतों पर उतरने लगे। इससे बने—बनाए, खेत—टांड बंजर होने लगे।
- मरडबुरु** – ताँबे—लोहे की खपत लोगों की आबादी से बढ़ने लगी। ताम्बे—लोहे के औजार, बर्तन, गहने आदि बनने से मलवे के पहाड़ सर्वत्र छितराने लगे। और लहलहाती फसल देखते ही देखते नष्ट होने लगी।
- सुवर्ण रेखा** – असुरों से लोहा कम गलाने के लिए मुण्डाओं ने निवेदन किया। मगर अपने पेशे को कम करने के लिए वे तैयार न हुए।
- मरडबुरु** – सभी अपने—अपने धंधे को, खेती—बारी को फैलाने में लगे थे। ऐसे में असुर—सराक क्यों कम करने लगे। इसी बात को लेकर मुण्डाओं और असुरों में ठन गई। भयानक युद्ध हुआ। दूसरों ने भी मुण्डाओं का साथ दिया।

सुवर्ण रेखा — असुर—सराक कमजोर पड़ गये। इनके द्वारा निर्मित हथियार विरोधियों से कम पड़ गये। अपने ही बनाए हथियार अपनों के विनाश के कारण बन गए। अनगिनत असुर—सराक मारे गए। असुरों को अपना स्थान छोड़ कर जहाँ—तहाँ जंगलों में भागना पड़ा।

मरडबुरु — मुण्डाओं ने तो असुरों को समाप्त करने के लिए सोसोबोंगा का अभियान ही छेड़ दिया था। लेकिन नागों ने अपने सहिया मुण्डाओं को समझा—बुझा कर इस विनाशक अभियान को शांत कराया।

सुवर्ण रेखा — होड़ो लोगों की बहादुरी देख कर नागों ने उन्हें मुण्डा राजा का ओहदा दिया। सभी गाँव में मुण्डा ग्राम प्रधान के अधिकारी बने। तन का प्रधान अंग मुण्ड होता है वैसे ही ग्राम का प्रधान मुण्डा कहलाया।

मरडबुरु — तभी से इन होड़ो समुदाय को मुण्डा कहा जाने लगा। और इनके नाम में मुण्डा जुड़ने लगा। मुण्डा सम्मान में दिया गया एक पद हो गया। इसके बाद अपने पूर्वजों के नामों और किस्से कहानियों में भी मुण्डा जोड़ कर स्मरण किया जाने लगा।

सुवर्ण रेखा — असुरों और सराकों को बिल्कुल समाप्त कर देने से नाग देश की क्या हानि होगी उसे नागों ने समझाया। लोहा—ताँबा के न बनने से हमारा जीवन चल नहीं सकता। इसे सबने समझा। बचे हुए असुरों को शक्तिशाली असुर का ओहदा दिया गया। मगर वे भीतर से डरे हुए थे।

मरडबुरु — अपने डर को मिटाने के लिए वे मुण्डाओं की बोली—रीति को भी अपनाने लगे।

सुवर्ण रेखा — असुर—सराक, नागों और मुण्डाओं की भाषा—संस्कृति के मध्य एक मजबूत कड़ी के रूप में असुर बचे रहे। ये दोनों को अपना कर चले।

मरडबुरु — इस प्रकार रिसा मुण्डा के वंश में आगे चल कर सुतिया मुण्डा नाग देश में राजा चुना गया। इसका राज हुआ।

- सुवर्ण रेखा** — मुण्डाओं ने सुतिया मुण्डा को पहले सुतिया पहान का ओहदा देकर प्रधान सरदार बनाया था ।
- मरडबुरु** — राजा सुतिया मुण्डा अपने पूर्वजों के इतिहास को और फैलाया । इसने सात गढ़ बसाया । वे थे — लोहरागढ़, हजारीगढ़, पलामूगढ़, मनुगढ़, सिंधागढ़, केसलगढ़ और सुरगुसगढ़ ।
- सुवर्ण रेखा** — राजा सुतिया मुण्डा ने 21 पड़हा परगना स्थापित किया । 21 पड़हा परगना के नाम हुए — उमेडंडा, डॉईसा, खुखरा, सिनगुजा, जशपुर, गांगपुर, पोरहाट, गिरगा, बिसुआ, लचड़ा, बीरु, सोनपुर, बेलखादु, बेल सिंग, तमाड़, सोहरडीह, खारसंग, उदयपुर, बोनाई, कोरिया और चंगभगंकर । इसमें 151 गाँव बसे ।
- मरडबुरु** — राजा सुतिया मुण्डा सातों गढ़ों और इककीसों परगनाओं का सरदार चुना । जिनके नाम हुए — मनाए मुण्डा, मना मुण्डा, लाखो राय मुण्डा, जितराय मुण्डा, माटु मुण्डा, माट मुण्डा, खुदी राम मुण्डा, बड़ राम मुण्डा, बड़ राय मुण्डा, आजकू मुण्डा, लिहा मुण्डा, भोजराज मुण्डा, बिजला मुण्डा, कुआँर सिंघ मुण्डा आदि ।
- सुवर्ण रेखा** — राजा सुतिया मुण्डा सात गढ़ों का सरदार था इस लिए वह सात धागों का जनेउ धारण करता था ।
- मरडबुरु** — राजा सुतिया मुण्डा अपने बेटे के विवाह के लिए कन्या पा न सका । क्योंकि सभी मुण्डा एक कुल, एक खूँट के थे । यही बात और मुण्डाओं के साथ भी रही ।
- सुवर्णरेखा** — इसी से राजा सुतिया मुण्डा अपने इककीसों मानकियों को बुलाया । उन मानकियों में थे — सुतिया मानकी, दुखना मानकी, डुका मानकी, कुरा मानकी, केलोओ मानकी, गंगु मानकी, लखो मानकी, हेम्बो मानकी, जितराय मानकी, बिरसा मानकी, करमा मानकी, चम्पा मानकी, गोमिया मानकी, सोमरा मानकी, लेंदा मानकी, उदय मानकी, मंगता मानकी, रैया मानकी, सामु मानकी, पोढ़ा मानकी और सनिका मानकी ।
- मरडबुरु** — बेलो मुण्डा को लोहरागढ़, सालू मुण्डा को हजारीगढ़, दुखु मुण्डा को पालुमगढ़, मैं मानकी बनाया गया । इसी तरह अन्य गढ़ों के मानकी पदों का भी चयन जनतांत्रिक पद्धति

से ही किया गया।

- सुवर्णरेखा — अपने बेटे के लिए कन्या न मिलने के कारण राजा सुतिया मुण्डा ने एक नया विधान बनाया। अपने मुण्डा समाज को किली-गोत्र में बाँट कर।
- सुवर्ण रेखा — राजा सुतिया मुण्डा ने अपने सभी मानकियों से गढ़ के अंदर जा कर एक-एक जीव या पौधे को अपनी पसंद से लाने के लिए कहा।
- मरडबुरुल — जिस मानकी ने जिसे चुनकर लाया उसका वही किली-गोत्र तय हो गया सदा-सदा के लिए। यही किली-गोत्र उन मानकियों का प्रतीक चिह्न हो गया। कुल 22 किली गोत्र बने। उस दिन 21 मानकियों के अतिरिक्त एक मंगरा मुण्डा को भी किली गोत्र दिया गया।
- सुवर्ण रेखा — इन मानकियों के किली-गोत्र हुए — बारला, तोपनो (देमता), होरो, केरकेट्टा (समद), कउवा, ढेचुवा, बाबा (घान), डुंगडुंग, जोजो, कण्डुलना, तिडु, संगा, लुगुन, बुड़, हेडेंए, नाग, कण्डीर, टुटी, सुरीन, हेमरोम, डांगवार और मुण्डू।
- मरडबुरुल — राजा सुतिया मुण्डा अपने नाम पर राजधानी बनाया — सुतियाम्बे गढ़। मुण्डाओं को इसी गढ़ से किली-गोत्र दिया गया था। ये कोम्पाट मुण्डा कहलाए। इन्हें कोंकोपाट मुण्डा भी कहा जाता है।
- सुवर्णरेखा — यहीं पहले से चली आती जनतांत्रिक विधि से राजा का चुनाव हुआ। इस चुनाव में नाग, असुर, सराक, मुण्डा, खड़िया, उराँव आदि सभी भाग लिए थे। नागराज के बाद सुतिया मुण्डा राजा चुना गया था।
- मरडबुरुल — सुतिया मुण्डा के राजा बनने से नागदेश का नाम हीरानागपुर के तर्ज पर सुतिया नागपुर पड़ा। इसे सुतिया नाग खण्ड भी कहा जाने लगा। क्योंकि इस देश में तब मुण्डा तथा नागों का राज स्थापित हुआ।
- सुवर्णरेखा — राजा सुतिया मुण्डा के राज में सुतियानागपुर में बड़ा ही आनन्द था, और शांति थी। नाग, असुर, सराक, मुण्डा, खड़िया, उराँव, आदि में मेल प्रेम देखते बनता था। इनके

- राज में न लड़ाई न संघर्ष न आपसी मन मुटाव हुआ। सर्वत्र खुशहाली थी। राज्य का विस्तार खूब हुआ।
- मरडबुरु** — राजा सुतिया मुण्डा के बाद पुनः सबके मत से पुराने जनतांत्रिक पद्धति से पहली बार महाराजा के चुनाव की घोषणा हुई। इसमें भी सबने भाग लिया, जितने सुतियानागखण्ड में रहते थे।
- सुवर्ण रेखा** — इस पहले महाराजा के चुनाव में सुतिया मुण्डा के बाद मदरा मुण्डा ही सबके एकमत से चुन लिए गए। क्योंकि महाराजा बनने के जितने शर्त थे उसे मदरा मुण्डा ने ही पूरा किया। बाकी जो थे वे उन शर्तों को पूरा न कर सके।
- मरडबुरु** — महाराजा मदरा मुण्डा बहुत ही लोक प्रिय और न्याय प्रिय शासक हुए। राज—काज चलाने में वे अपने पुरखे, राजा सुतिया मुण्डा से भी आगे निकल गए।
- सुवर्ण रेखा** — महाराजा मदरा मुण्डा ने नाग जाति के युद्धिष्ठिर दास (गोसाँई) को सर्वानुमति से दीवान बनाया था।
- मरडबुरु** — महाराजा मदरा मुण्डा अपनी परम्परा का पूर्ण पालन किया। महाराजा तो वह मात्र शासन करने के लिए था। शेष जीवन तो उनका भी आम आदमी की ही तरह था। मिट्टी तथा खपड़े के बने घर में वे भी रहते थे। महाराजा का कोई आडम्बर इनमें भी पूर्व राजाओं की तरह नहीं था।
- सुवर्ण रेखा** — महाराजा मदरा मुण्डा की फूल सी सुंदर महकती हुई, दमकते अंगारे सी एक बहन थी। नाम था उसका चिता। चिता भी दिन भर जंगलों—पहाड़ों में बकरियाँ चराते सबका मन मोहती रहती थी।
- मरडबुरु** — कहने के लिए राजकुमारी थी चिता। बकरियाँ — मेमनों के संग पूरे वन—पर्वत को चिता नापती रहती थी। उसकी गोद में हमेशा एक सुंदर सा चितकबरा मेमना, शिशु की भाँति शोभता रहता था।
- सुवर्ण रेखा** — उस पुष्ट चिकने चितकबरे मेमने पर एक चीता की नजर गड़ी हुई थी। एक अचानक मेमना, चीता को देख कर डर से मिमया उठा। और चीता की गोद से में ५८ करता उछल

कर भाग निकला।

- मरडबुरु - दुबका हुआ चीता एक ही झटपटे में मेमने का काम तमाम करने के दाव—पेंच लगा ही रहा था कि एक तीर उसे बिंध गया।
- सुवर्ण रेखा - घायल चीता चितकबरे मेमने को दबोच तो न पाया, क्योंकि मेमना पूरी शक्ति से भाग निकला तब वह मुण्डा कुड़ी चिता की ओर झटपटने ही वाला था कि एक नाग युवक लपक कर चीता की पीठ पर लटक गया।
- मरडबुरु - चीता और नाग युवक थोड़ी देर अपनी शक्ति दिखाते रहे। उठा—पटक के क्रम में नाग युवक ने अपनी कमर से तेज दउली खींचा और चीता का काम तमाम कर दिया।
- सुवर्ण रेखा - चिता सुंदरी को काठ मार गया। वह भचौंक होकर उस तेज शक्तिशाली नाग युवक को देखती भर रह गई। तभी मेमने को नाग युवक पकड़ कर चिता की गोद में डाल दिया।
- मरडबुरु - नाग युवक का हाथ मेमना देते समय उसके छटपटाने के कारण चिता के वक्ष प्रदेश के पर्वतों से छू गया। चिता की आँखे मुंद गई। उसके तन—बदन झांकृत हो उठे। दोनों एकटक देखते रहे। अपनी दृष्टि के डगर से एक दूसरे को अपने—अपने हृदय में समा लिये।
- सुवर्णरेखा - मुण्डा—कुड़ी, चिता सुंदरी, निर्मल, चंचल, उसकी गीत जैसी मधुर बोली, नृत्य की तरह चाल, हाथ छुड़ा कर नाग युवक के पैरों में प्रेम की बेड़ी पहना कर जाने लगी तो उसे टोका।
- दृश्य नौ— अंधकार से प्रकाश
(जंगल में दोनों बातें कर रहे हैं)**
- चिता - मेरे दुलारे मेमने और मेरे छोटे से प्राण को बचाने वाले बहादुर को मैं किस नाम से याद करूँगी।
- पाण्डुनाग - पाण्डुनाग कहतें हैं मुझे। और इस सोने सी चमकती, महकती शाल के स्वर्ण फूलों सी लदी सजी कुड़ी को मैं किस नाम से कभी पुकारूँगा?
- चिता - मुझे तो चिता न कहते हैं!
- पाण्डुनाग - बड़ा भयानक नाम है।

- चिता – किसका? कहने वाली का या सुनने वाले का?
 पाण्डुनाग – दोनों का न! (दोनों हँसते हैं)
- चिता – मेरे दुलारे मेमने को बचाकर तुमने कितना बड़ा उपकार किया है, उसे तुम क्या जानोगे? इस चितकबरे मेमने में ही तो मेरे प्राण रहते हैं। इसके बिना मैं नहीं न रह सकती हूँ।
- पाण्डुनाग – इतना अनुराग है इस पर। मुझे तो अब इस मेमने से ईर्ष्या हो रही है।
- चिता – सो भला क्यों?
- पाण्डुनाग – क्यों? उसे तो मैं भी नहीं जानता। मुझे तो लगता है जैसे तुम मेमने के बिना रह नहीं सकती, उसी तरह अब तो मैं भी मेमने की मालकिन के बिना नहीं रह सकूँगा।
- चिता – ये मेरे छोटे से प्राण तो अब तुम्हारे न हो गए। ये प्राण तो चीता के मुँह में समाये ही रहते। अगर अपने प्राण पर खेल कर तुम मुझे न बचाए होते। इसी से आज से ये प्राण मेरे नहीं रहे। तुम्हारे न हो गए। जाती हूँ। अंधेरा होने से पहले घर न पहुँचूँगी तो भाई—भाभी ढूँढ़ने निकलेंगे।
- पाण्डुनाग – फिर यह सोने सा सुख देने वाला सखुआ फूल सी कुड़ी को कहाँ देख पाऊँगा?
- चिता – इसी जंगल में न। और कहाँ जो सखुआ फूल तुम्हें मिलेगा! जंगल हमारा मिलन स्थल होगा। मेरी बकरियाँ और मेमने हमारे मिलन के साक्षी होंगे।
- पाण्डुनाग – एक बात कहाँ! मानो तो कहाँ!
- चिता – तुम्हारी बातों को अब उठा पाऊँगी! ऐसा तुमने कैसे सोच लिया? कह कर तो देखो!
- पाण्डुनाग – मुण्डा कुड़ियाँ मंत्रमुग्ध कर देने वाली मधुर गीत गाती हैं। क्या तुम मेरे लिए एक गीत गाओगी?
- चिता – तुम्हारे लिए भर नहीं! हमारे लिए गा सकती हूँ। यदि तुम बाँसुरी में साथ दो।
- पाण्डुनाग – अहो भाग्य मेरा कि तुम्हारा गीत मुझे सुनने को मिलेगा।
- चिता – क्यों नहीं! ‘सेनगे सुसुन, काजि गे दुरड, दूरी गे दुमड।’ ऐसा हमारे यहाँ यों ही नहीं कहते!

पाण्डुनाग — नागदेश की यही पहचान है — चलना ही नृत्य है, बोलना ही संगीत और वक्ष और नितंब ही माँदर है। तो सुना रही हो न.... मेरे कान तुम्हारे गीत सुनने के लिए तड़प रहे हैं।

चिता — मन हो तो नाचने—गाने में....

पाण्डुनाग — (बीच में) इससे अधिक मधुर क्षण और क्या हो सकता है मेरे लिए।

चिता — (मुण्डारी गीत गाती है और पाण्डुनाग कमर से बाँसुरी निकालकर बजाने लगता है)

अलड़ दिसुम रेलं जोनोम जना — हम दोनों ने अपने देश में जन्म पाया।

पुतम लेका होलं जुड़ी जना — हम दोनों की पण्डुक के समान जोड़ी हुई।

अलड़ गमयरेलं माता जना — हम दोनों अपने देश में बढ़े।

पारय लेका होलं माता जना — और हम दोनों कबूतर के समान साथी हुए।

पुतम लेका होलं जुड़ी जना — हम दोनों की जो पण्डुक के समान जोड़ी हुई।

मोदेर गतिड़ रेलं सुसुन करम — तो हम एक साथ नाचेंगे—गायेंगे।

पारय लेका होलं जोता जना — हम दोनों जो कबूतर के समान साथी बने।

अलड़ जी सोबेन मोदे जना — तो हम दोनों का हृदय एक हो गया।

मोदे रे गतिड़ रेलं सुसुन करम — हम दोनों एक साथ नाचेंगे—गायेंगे।

कारे गतिड़ रेलं बापा गेया — और कभी अलग नहीं होंगे।

अइड़ जी सोबेन मोदे जना — हम दोनों का मन एक हो गया है।

जिदन सुनुमलं आपा सुला — और जीवन पर्यन्त एक दूसरे का पालन-पोषण करेंगे।

पाण्डु नाग — ओह! मैं तो तुम्हारे गीत के स्वरभाव में उड़ा जा रहा था।

चिता — सचमुच! (ठहर कर) मैं भी तुम्हारी बाँसुरी की तान में गाई जा रही थी।

पाण्डु नाग — सच! लगा तुम्हारा मधुर संगीत सुनता रहूँ सुनता रहूँ सुनता रहूँ....

चिता — और घर न जाऊँ!

पाण्डु नाग — हमें बिछुड़ना पड़ेगा।

चिता — तुम्हें छोड़ कर अब जाने का मन.... (ठहर कर) एक ही दिन में तुमने मेरा हृदय निकाल लिया! संसार बदल दिया! (ठहर कर) पर जाना तो पड़ेगा न!

पाण्डु नाग — चलो तुम्हें तुम्हारी सीमा तक पहुँचा दूँ।

चिता — चलो, तनिक देर और तुम्हारा साथ तो मिल जाएगा। (और दोनों चलने लगते हैं)

- पाण्डु नाग – हमारा मिलन इतना भयंकर—सुन्दर होगा ऐसा मैंने सपने में भी नहीं सोचा था!
- चिता – थोड़ी देर पहले क्या होने जा रहा था और.....
- पाण्डु नाग – उसे स्मरण मत दिलाओ चिता! वह बड़ा भयंकर स्वप्न था।
- चिता – वही भयानक सपना ही तो हमें मिलाया पाण्डु। वह देखो मेरा सीमाना भी आ गया। अब तो तुम रात सपने में आओगे और....
- पाण्डु नाग – और दिन में हम जंगल में मिलेंगे।
- चिता – अच्छा! (दोनों अपने—अपने रास्ते जाते हैं)
- दृश्य दस — अंधकार से प्रकाश**
- मरडबुरु – पहले ही दिन से चिता और पाण्डु का प्रीत पर्वत चढ़ गया।
- स्वर्णरेखा – और पहाड़ के झरने की तरह बहकर पूरे वन प्रदेश की परिक्रमा करने लगा।
- मरडबुरु – और फिर जंगल, नदी, पहाड़, टोंगरी, गुफा, झरना आदि चिता और पाण्डु की प्रीत कथा जोड़ते चले गये। दो प्रेमी प्रेम में इतने छूब गये कि इन्हें लगा इस जंगल में सब दिन सरहुल की तरह शाल के फूल फूले रहेंगे।
- स्वर्णरेखा – अंततः इस जंगल प्रेम का शाल फूल, फल पकड़ ही लिया। पंख लगे शाल फल अब उड़ने के लिए तैयार हो गये। जंगल की शीतल छाया में पनपा चिता और पाण्डु का निर्मल प्रेम एक प्रश्न बन कर खड़ा हो गया।
- दृश्य ग्यारह — अंधकार से प्रकाश**
- (देवी गुड़ी के किनारे दोनों बातें कर रहे हैं)
- चिता – मुण्डा समाज के विधान बहुत निष्ठुर है पाण्डु। हमारा प्रीत वर्जित था। इसका हमें ज्ञान न रहा। हम अपने प्रेम में बिल्कुल बेसुध हो गये। हमें समाज नहीं न स्वीकार करेगा!
- पाण्डुनाग – और मैं तुम्हें छोड़ न सकूँगा।
- चिता – हमारे प्रेम की सजा हैं देश निकाला। हम बिठलाहा न (जाति बहिष्कृत) कर दिए जाएँगे। सरदार, पड़हा, मानकी, राजा कोई नहीं सुनेंगे। महाराजा भी तो उन्हीं का न सुनेंगे।

- पाण्डुनाम** — हम जाएँ तो कहाँ जाएँ। समाज हमें स्वीकार करेगा नहीं। और जंगल हमें जीने नहीं देगा। मुझे तो चिंता खाए जा रही हैं। यह हमारे प्रीत के फूल सी निशानी को कैसे बचाएँ। कहीं नाग और मुण्डा जातियों की समरसता महासंग्राम में न पलट जाए।
- चिता** — इससे पहले मुण्डा और संतालों के मध्य मुण्डा कुड़ी और संताल माघों कोड़ा को लेकर भयानक युद्ध हुआ था और संतालों को मुण्डाओं के इलाके से भागना पड़ा था। कहीं ऐसी ही घटना हो गई तो? इसका पाप कौन लेगा?
- पाण्डुनाग** — तब तो एक ही रास्ता हैं — अंधरइया पोखर से पार हो जाना।
- चिता** — और हमारे इस प्रीत को सिरमासिङ्ड के भरोसे?..... इसे..... नहीं..... मैं नहीं छोड़ सकती।
- पाण्डुनाम** — तब मुण्डा और नागों के भयानक युद्ध और विनाश के लिए तैयार हो जाओ। तुम इसके लिए भी तैयार नहीं होओगी। इसे सिरमासिङ्ड के भरोसे छोड़ने के लिए भी तैयार नहीं। तो कैसे होगा? इस महाविनाश को तो रोकना ही पड़ेगा न। महादेव की जैसी इच्छा अब।
- चिता** — मेरा कलेजा फट रहा हैं पाण्डु। इसे छोड़ने सोचने भर से।
- पाण्डुनाम** — मेरा तो कलेजा ही निकला जा रहा है। (ठहर कर) लोकहित के लिए स्वयं का बलिदान अनिवार्य होता हैं चिता।
- चिता** — हे सिरमासिङ्ड तुम्हीं राह दिखाओ। जैसे तुमने हमे प्रीत में मिलाया वैसे ही, जैसे भी बने बचाना सिरमासिङ्ड। हमारे प्रीत पुष्ट को।
- पाण्डुनाम** — हे महादेव। तुम्हारी इच्छा को हमने माना कि नहीं इसे तो मैं भी नहीं जानता। तुम्हारा दिया हृदय, प्रीत के किस पवन में उड़ा उसे भी मैं समझा न सका। अब तुम्हारा ही भरोसा। हमारे प्रीत के प्रतीक की रक्षा तुम्हारे हाथों सौंपे जा रहे हैं हम।
- चिता** — हम बुद्धिहीन हैं सिरमासिङ्ड। तुम्हीं हमारे प्रीत—प्रतीक की रक्षा करना और बचाना सिरमासिङ्ड।

दृश्य बारह – अंधकार से प्रकाश।

- मरडबुरु** – सुतियाम्बे की देवीगुड़ी में शिशु को जन्म देकर चिता और पाण्डु नाग अंधरिया पोखर चले आए। नये जन्म लिए बालक को पोखर के किनारे, कमल पत्तों के बिछावन और ओढ़ने में सुला कर सिरमासिड और नाग प्रिय महादेव, देवी—गुड़ी, देसाउली आदि का स्मरण कर उनके ही आसरे छोड़, उसी अंधरिया पोखर में समा गए, दोनों चिता और पाण्डु नाग। दो प्यार करने वाले प्राणी, लोक हित के लिए आत्मोत्सर्ग कर दिये।
- सुवर्ण रेखा** – अंधरिया पोखर के कमल फूल इन दोनों के अमर अनुराग के साक्षी बने। नाग—मुण्डा समाज को महाविनाश से बचाने के लिए अपने जीवन का दोनों ने बलिदान कर दिया। भयानक रक्तपात होते होते रह गया।
- मरडबुरु** – किसी को ज्ञात न हो सका। दो प्रेमी इसी अंधरिया पोखर के डगर से प्रीत लोक में आ गए। इसी धरती में छाया रूप में लौट आने के लिए।
- सुवर्ण रेखा** – इधर अंधरिया पोखर किनारे नवजात बालक अपने हाथ—पाँव हिला—हुला भी न पाया था कि एक विशाल नाग, अपना फण फैलाए शिशु सिर की ओर से छाया कर रहा था कि सुनसान स्थान होने के कारण उसकी रक्षा कर रहा था कि क्या पता, उसे डसने के लिए उसके हिलने—हुलने की प्रतीक्षा कर रहा था।
- मरडबुरु** – उधर सुतायाम्बे गढ़ और वन—पर्वत में महराजा मदरा मुण्डा, चिंतामणि (मदरा महारानी) दीवान युद्धिष्ठिर दास सभी अलग—अलग चिता की खोज में मारे—मारे फिर रहे थे। जंगल पहाड़, नदी—नाले, बांध—पोखर, कंदराओं—खोहों में।

दृश्य तेरह – अंधकार से प्रकाश

(पोखर के किनारे)

- युद्धिष्ठिर दास** – (पोखर किनारे नजरे घुमाते हुए – हाथ मुँह धोकर पानी पीते पुनः दृष्टि चारों ओर फेरता हैं) अरे बाप रे बाप! महादेव, महादेव! एतना विशाल नागदेव फण फैलाये क्या देख

रहा है? (गौर से देखकर) औंय बाप। नीचे कमल पत्तों में ढका नवजात शिशु। महादेव! महादेव! महाराज को बुलाना चाहिए। (बुलाने की मुद्रा में आते ही महाराजा मदरा मुण्डा आ पहुँचते हैं उनके पीछे दूसरी ओर से चिंतामणि – मदरा महारानी भी संयोग से आ जाती हैं।)

मदरा मुण्डा – क्या बात है दीवान साहब! अकबकाए हुए लग रहे हैं?
लीजिए महारानी भी आ गई।

युद्धिष्ठिर दास – महाराज! उधर देखिए! जीवन और मृत्यु का खेल।

चिंतामणि – वहाँ तो छोटा बच्चा है महाराज! इसके माँ-बाप गए कहाँ?
इसे छोड़ कर दीवान साहब!

युद्धिष्ठिर दास – पता नहीं महारानी। मैं तो चिंता बेटी को ढूँढते इस अंधरिया
पोखर के पास आया। मुँह धोकर पानी पीते देखता क्या हूँ
– यह जो सामने हैं।

चिंतामणि – लगता हैं, इस बच्चे के माँ-बाप के कहीं चले जाने के
कारण नागदेव, उसकी रक्षा कर रहे हैं। यहाँ तो नागों की
पूजा की जाती हैं न दीवान साहब।

मदरा मुण्डा – अब हम लोगों को देखकर नागदेव स्वयं ही चले जाएँगे।
(नाग पोखर में प्रवेश कर जाता हैं)

चिंतामणि – नाग देव पोखर में प्रवेश कर गए। मैं उठाती हूँ (दौड़ कर
शिशु को उठा कर देखने लगती है) कितना सुंदर
तेजोदीप्त बालक लग रहा है। किसका हो सकता है? इसके
माँ-बाप इसे छोड़ कर आखिर गए कहाँ? इसे मैं ले जाऊँ
महाराज?

मदरा मुण्डा – नहीं! यह हमारे बेटे मटुक राय से झगड़ा करेगा महारानी।

चिंतामणि – झगड़ा-तकरार नहीं होगा महाराज। हमारे बेटे मटुक राय
के खेलने का साथी हो जाएगा।

मदरा मुण्डा – यह किसी और की सम्पत्ति है महारानी। इसे हम कैसे ले
जाएँ? इसका निर्णय तो महारानी को स्वयं करना चाहिए।

चिंतामणि – अभी इस नवजात, तेजो दीप्त बालक का तो कोई नहीं है
न महाराज! यह हमारे यहाँ रहेगा। अगर ये किसी का है तो
हमारे यहाँ से आकर ले जाएगा। नहीं ले जाने पर हमारे बेटे

मटुक राय के साथ इसका भी पालन पोषण होगा।

मदरा मुण्डा — महारानी के फैसले से मैं अत्यंत आनंदित हुआ।

चिंतामणि — तो मैं इसे अभी लिए जा रही हूँ।

मदरा मुण्डा — जैसी आप की इच्छा! आपका निर्णय है तो मैं और क्या कह सकता हूँ। स्त्री जाति तो माँ का ही प्रतिरूप हैं।

चिंतामणि — आप बहुत उदार हैं महाराज! लगता हैं आप मेरी परीक्षा ले रहे थे।

मदरा मुण्डा — अरे हाँ! हमारी चिता बहन का कहीं पता चला? दीवान साहब! महारानी! किसी को कुछ पता चला। (कुछ सोचते हुए) मैं कुछ भूल रहा हूँ ऐसा मुझे लग रहा हैं महारानी! स्मरण ही नहीं हो पा रहा है।

चिंतामणि — हाँ (सोचकर) महाराज! आपने तो, आज सुबह ही, यही स्वप्न बतलाया था। नागदेव

मदरा मुण्डा — ठीक स्मरण दिलायी महारानी! बिल्कुल स्पष्ट, यही स्वप्न देखा जैसा। नागफण के नीचे बालक। और नागदेव मुझसे कह रहे थे — ले जा महाराज! इस बालक को। इसे पाल—पोस। यह बालक तुम्हारे नाम को प्रसिद्धि पर पहुँचाएगा। यह बड़ा प्रतापी, बलवान, विवेकी और लोकप्रिय महाराजा बनेगा इस सुतियानागपुर का।

चिंता मणि — बालक मिल गया। काश! इसकी माँ भी तो मिल जाती। हमारी दुलारी चिता ननंद क्या जाने कहाँ चली गई हैं?

मदरा मुण्डा — चिता की ही तो चिंता खाए जा रही हैं महारानी।

युद्धिष्ठिर दास — महाराज मैं सुतियान्वे में दिगवार से डुगडुगी पिटवा दूँगा। इस नवजात बालक.....

मदरा मुण्डा — नहीं दीवान साहब। यह भूल से भी न कीजिएगा। प्रतिष्ठा की बात है।

युद्धिष्ठिर दास — क्षमा हो महाराज। मैंने बालक के लिए डुगडुगी पिटवाने की बात की। चिता बेटी के लिए नहीं। वरना हम क्यों ढूँढने निकलते?

मदरा मुण्डा — आखिर चिता बहन गयी कहाँ? कितने दिनों से उसे भर आँख देखा तक नहीं।

चिंतामणि — इधर कुछ महीनों से चिता नन्द को चिंता में पड़ी देखती थी। जब से चीता बाघ, इनपर और उसके मेमने पर झपटा मारा हैं उस समय से वह डरी—सहमी, चुपचाप, गुमसुम सी रहने लगी है। उनकी बोली, मुक्त हँसी तो जाने कहाँ गुम हो गई उस दिन से। लगता है उसे डर समा गया है। कुछ कहने—पूछने पर दूर से ही हाँ—हूँ नहीं कह कर चुप हो जाती हैं। बस केवल बकरियों के पीछे और मेमने को गोद में लिए रहती बच्चे की तरह।

मदरा मुण्डा — कैसी भाभी हैं? भाभी होकर नन्द का ख्याल नहीं रख पाती। छोटी नन्द बेटी के बराबर होती है। इसी से कह रहा हूँ। माँ सिखाए बेटी, बाप सिखाए बेटा। बेटी जैसी नन्द के मन की बातों को समझ नहीं पाती। कैसी माँ जैसी भाभी हैं महारानी। कहीं उसके गोनोंग (कन्या मूल्य) के लिए तो चिंतित नहीं रहतीं!

युद्धिष्ठिर दास — क्षमा हो महाराज। अभी चिता के सुखमुँड की नहीं, उसे ढूँढने की चिंता करनी चाहिए।

चिंतामणि — गोनोंग सिर्फ हमारे यहाँ ही नहीं इस नाग देश में भी कन्या मूल्य लिया जाता है महाराज! मेरे माता—पिता ने भी आप लोगों से सुख मुँड लिया था।

दृश्य चौदह — अंधकार से प्रकाश

मरडबुरु — अंततः चिता और पाण्डुनाग का कहीं किसी को पता चला ही नहीं। अंधरिया पोखर, जो कभी कमल के फूलों से भरा रहता था वहाँ अब केवल दो ही फूल खिलते हैं।

सुवर्णरेखा — दो प्रेमी, दो फूल बनकर अंधरिया पोखर में समा गए। चिता और पाण्डु नाग की याद अनजानी ही रह गयी।

मरडबुरु — महाराजा मदरा मुण्डा अपनी बहन की याद में घुट—घुट कर असमय में ही बूढ़े हो गये। नागफण के तले पाए जाने के कारण उसका नाम फणि मुकुट राय रखा गया और उसका किली गोत्र दिया गया नाग।

सुवर्णरेखा — महाराजा मदरा मुण्डा के बेटे मटुक राय का किली गोत्र तो हंस था ही। मटुक राय बड़ा और फणि मुकुट राय छोटा बेटा हुआ महाराजा मदरा का।

मरडबुरु — फणिमुकुट राय के माता-पिता कभी नहीं आ सके। दोनों बेटे सहोदर भाई की भाँति गेंद-गोली आदि खेल खेला करते। कभी कभी फणिमुकुट राय की गोली मटुक राय की गोली को मार कर फोड़ देती। परन्तु दोनों भाई हार-जीत के लिए या गोलियों के फोड़ देने के कारण झगड़ा—तकरार कभी नहीं करते।

सुवर्णरेखा — मटुक राय और फणि मुकुट राय युद्धिष्ठिर दास से शिक्षा पाने लगे। दोनों युवावरथा को प्राप्त हुए तो एक दिन महाराजा मदरा मुण्डा अपने नाग, असुर, सराक, मुण्डा, पहान, मुखिया, प्रमुख, सरदार, मानकी, परगना, पड़हा राजा, उराँव, खड़िया आदि सभी को दरहा टाँड़ (मैदान) में बुलाया।

दृश्य पंद्रह — अंधकार से प्रकाश

(दरहा टाँड़ मैदान में सभी)

मदरा मुण्डा — मान्यवर नाग सरदार, पड़हा राजा, मानकी, प्रमुख, सरदार, मुखिया और समस्त सुतियाम्बे के नये महाराजा के चयन सभा में उपस्थित बंधुओ! जिस प्रकार सुतियानागपुर में सदा से सब के मतानुसार हम नये राजा का चयन करते आए हैं वैसे ही आज भी नये महाराजा का चयन हो और मुझे महाराजा के दायित्व से मुक्त किया जाए। मुझ से जो बन पड़ा सुतियाम्बे के लिए मैंने आप सभी के सहयोग से पूरा करने का प्रयत्न किया। आप सभी से निवेदन है कि नये महाराजा के चयन में पूर्ण सहयोग दें। दीवान साहब आगे का कार्यक्रम रखें।

युद्धिष्ठिर दास — सर्व प्रिय महाराजा साहब! और सभा में उपस्थित सभी गणों के पदाधिकारी! नये महाराजा के चयन के लिए आप सभी जिसे चाहते हैं उनका नाम रखें। यदि ये नाम एक से अधिक होंगे तो इस चयन की पद्धति में जो परीक्षा ली जाती है उसी भाँति ली जाएगी। सबसे पहले तीरंदाजी का, घुड़सवारी द्वारा पूरे सुतियाम्बे की परिक्रमा, भार उठाने, स्नान, वस्त्र धारण, भोजन ग्रहण और अंत में पंचायत में आए हुए मामलों का न्याय करना होगा। यदि आप चाहें तो और कुछ नयी परीक्षा ले सकते हैं।

नाग सरदार — मैं मटुक राय का नाम प्रस्तावित करता हूँ हमारे नये महाराजा के लिए।

पड़हा राजा — मैं फणि मुकुट राय का नाम नये महाराजा के लिए प्रस्तावित करता हूँ। (थोड़ी देर चुप रहने के पश्चात)

मदरा मुण्डा — अगर और कोई नाम प्रस्तावित करना चाहते हैं तो आप दे सकते हैं।

असुंर प्रधान — और नहीं। इन्हीं दोनों की परीक्षा ली जाए।

दृश्य सोलह — अंधकार से प्रकाश

मरडबुरु — महाराजा के चयन में जनतंत्र पद्धति से फणि मुकुट राय को विजयी घोषित किया गया।

सुवर्णरिखा — मटुक राय कम बहादुर और होशियार नहीं था। रंचमात्र के लिए वह परीक्षा में पिछड़ गया।

मरडबुरु — फणि मुकुट राय को नीले झण्डे के नीचे राज मुकुट पहना कर महाराजा घोषित किया गया।

सुवर्णरिखा — और मटुक राय को उसके गुणों को देखते हुए महाराजा फणि मुकुट राय का दीवान घोषित किया गया — हरे झण्डे के नीचे हँस मुकुट पहना कर।

दृश्य सत्रह — अंधकार से प्रकाश

(मदरा मुण्डा का शयन कक्ष)

चिंतामणि — महाराज! आप ने ठीक ही कहा था। यह बालक हमारे बेटे से झगड़ा करेगा! झगड़ा तो वैसा नहीं हुआ, परन्तु आज फणि मुकुट राय नहीं रहता तो हमारा बेटा मटुक राय निर्विरोध महाराजा चयनित कर लिया जाता। क्योंकि तब हमारे बेटे मटुक राय से टक्कर लेने के लिए कोई खड़ा न होता।

मदरा मुण्डा — महारानी! यह भूत की बात है। और अतीत की बातों को सुधारा नहीं जा सकता! हमारे दोनों ही बेटे हैं। बड़ा बेटा मटुक राय महाराजा न हो सका तो क्या हुआ! हमारा छोटा बेटा फणि मुकुट राय तो महाराजा बना। हमें प्रसन्न होना चाहिए कि हमने अपने पूर्वजों की तरह जनतंत्र का पालन किया! और माता-पिता का कर्तव्य भी।

चिंतामणि — महाराज! एक दिन हमारे दीवान साहब कह रहे थे — अगर किसी सोए हुए मानव के माथे की ओर नाग फण फैलाए खड़ा हो जाए तो उसे महाराजा बनने से कोई रोक नहीं सकता।

मदरा मुण्डा — वह तो सत्य हो ही गया महारानी! आज से यह संगुण, कहावत बन गयी समझो महारानी। इसे आने वाली पीढ़ी इसी रूप में स्वीकार करेगी।

दृश्य अठारह — अंधकार से प्रकाश

(सुतियाम्बे गढ़ का राज दरबार)

फणि मुकुट राय — सर्वमान्य महाराजा मदरा मुण्डा! सभा में उपस्थित सभी गणों के अधिकारी और सुतियाम्बे के सभी भाई और बहन — मैं नाग गोत्र, महाराजा मदरा मुण्डा का पुत्र, घोषणा करता हूँ कि नागराज और मुण्डाराज व्यवस्था का पालन करता रहूँगा। इसके लिए मैं अपने अनुभवी लोगों से राज संचालन के लिए मदरा पांजी बनवाऊँगा और इसका पालन पूरी निष्ठा से होगी। आज की तिथि से मेरा वंश नागवंश कहलाएगा और सभी नागवंशी अपने आने वाली पीढ़ी में भी मुण्डाओं को अपने दादा (बड़ा भाई) का सम्मान देते रहेंगे। यह सत्य है कि मेरे असली माँ—बाप का पता नहीं चला। लेकिन मुझे प्रतीत होता है कि मेरी काया में नाग और मुण्डा जाति का लहू प्रवाहित हो रहा है। मैं अपने पालक माता महारानी चिंतामणि और पिता महाराजा मदरा मुण्डा का न केवल जीवन भर ऋणी रहूँगा बल्कि मेरी आने वाली नागवंशी पीढ़ी भी मुण्डाओं के इस महान उपकार के लिए भविष्य में ऋणी रहेगी। मैं आप के पारम्परिक सहयोग को यथावत बनाए रखना चाहता हूँ। एक बार गगन भेदी उद्घोष से महारानी चिंतामणि और महाराजा मदरा मुण्डा का जयघोष करें।

दिगवार — महारानी चिंतामणि की

भीड़ — जय

दिगवार — महाराजा मदरा मुण्डा की

भीड़ — जय

(तीन बार जय घोष के साथ नाटक का पटाक्षेप)

❖ सत्यम् शुभम् सुन्दरम् ❖



30-11-2003

स्रोत

1. जगदीश त्रिगुणायत - मुण्डा लोक कथाएँ - राँची - 1968
2. जगदीश त्रिगुणायत - बाँसरी बज रही - पटना - 1957
3. सेम तोपनो - कुर्सीनामा : मुण्डाओं का नृजाति इतिहास - कलकत्ता - 1982
4. राय प्रद्युमन सिंह - नागवंश - (भाग एक-दो) खैरागढ़ - 1926-1951
5. वेणी राम महथा - नागवंशावली - कलकत्ता - 1876
6. घासी राम - नागवंशावली झूमर - राँची - हस्तलिखित
7. वरुण सिंह - नागवंशावली - पिठोरिया (राँची) पाण्डु लिपि
8. शास्त्र बन्द्र राय - मुण्डाज एण्ड देयर कंट्री - राँची - 1912
9. ब्रैडली बर्ट - छोटा नागपोर : ए लिटिल नोन प्रेविंस ऑफ द इम्पायर - लंदन - 1910
10. मानगाविंद बनर्जी - ऐन हिस्टोरिकल आउट लाइन ऑफ प्रिंटिंग छोटानागपुर - राँची - 1989
11. एच.एस. सक्सेना - सेफगाइस फोर सेडयुल कार्ट एण्ड ट्राइब्स - नई दिल्ली - 1981
12. पीटर शांति नवरंगी - छोटानागपुर का संक्षिप्त इतिहास - राँची - 1948
13. पीटर शांति नवरंगी - नागपुरिया सदानी बोली का व्याकरण - राँची - 1965
14. योगेन्द्र नाथ तिवारी - नागपुरी भाषा का संक्षिप्त परिचय - राँची - 1970
15. जय शंकर प्रसाद - जनमेजय का नाग यज्ञ - प्रसाद के संपूर्ण नाटक एवं एकांकी - इलाहाबाद - 1998
16. डॉ. बी.पी. केशरी - छोटानागपुर का इतिहास कुछ सूत्र कुछ संदर्भ - राँची - 1979
17. डॉ. गिरिधारी राम गौड़ू 'गिरिराज' - पीटर शांति नवरंगी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व-राँची-1990
18. डॉ. गिरिधारी राम गौड़ू 'गिरिराज' - झारखण्ड का अमृतपुत्र : मरड़ गोमके जयपाल सिंह - राँची - 2001
19. मनोहर हंस - मुण्डाओं का मौखिक इतिहास - मरडहदा (खूंटी) - पाण्डुलिपि
20. बड़ईक ईश्वरी प्रसाद सिंह - झारखण्ड (पत्रिका) - गुमला - 1937
21. डॉ. विमला चरण शर्मा - छोटानागपुर का भूगोल - नई दिल्ली - 1997
22. डॉ. राम कुमार तिवारी - झारखण्ड का भूगोल - नई दिल्ली - 2001
23. बी.एन. लूनिया - प्राचीन भारतीय संस्कृति - आगरा - 1977
24. रामधारी सिंह दिनकर - संस्कृति के चार अध्याय - इलाहाबाद - 1997
25. डॉ. बी.पी. केशरी - झारखण्ड के सदान - राँची - 1992
26. डॉ. बी.पी. केशरी - कलचरल झारखण्ड - राँची - 2003
27. डॉ. रामदयाल मुण्डा - आदिवासी अस्तित्व और झारखण्ड अस्तित्व के सवाल - नई दिल्ली - 2002
28. बलबीर दत्त (संपादक) राँची एक्सप्रेस - (झारखण्ड के सदान कौन - गिरिराज) - 28-29-30 अगस्त 2001
29. विमलश्वरी सिंह - नागवंश : मिथक, इतिहास और लोक साहित्य - नई दिल्ली - 2003
30. शांति प्रबल बाखला - कुडुख कथा खीरी या उरौव भाषियों का वृतांत - राँची - 1964

लेखक परिचय



नाम	- डॉ. गिरिधारी राम गौँझू 'गिरिराज'
जन्म	- ५ दिसम्बर १९४९
निवासी	- ग्राम - बेलवादाग, खूंटी, राँची, झारखण्ड।
पिता	- स्व. इन्द्रनाथ राम गौँझू
पता	- सरस्वती संसार, म.न. - ४०६, वसंत विहार, रोड नं. - ४, हरमू कॉलोनी, राँची, झारखण्ड।
शिक्षा	- एम.ए. (हिन्दी), बी.एड., एल.एल.बी., पी-एच.डी.
अध्यापन	- १. अध्यक्ष - हिन्दी विभाग - परमवीर अलबर्ट एक्का मेमोरियल कॉलेज, चैनपुर, राँची (अब गुमला) - १९७५-१९७८, २. व्याख्याता - हिन्दी तथा नागपुरी विभाग, गोस्सनर कॉलेज, राँची - १९७८-१९८२, ३. अध्यक्ष एवं रीडर - जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची कॉलेज, राँची एवं सह अध्यापन स्नातकोत्तर विभाग - १९८२-१९९८, ४. रीडर, जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची - १९९८-अबतक।
प्रकाशित कृतियाँ एवं पत्र-पत्रिका जिनमें रचनाएँ प्रकाशित हैं -	
१.	कोरी भइर पझरा - (नागपुरी पद्य संग्रह - प्र. संपादक) - १९८०,
२.	नागपुरी गद तइरान (नागपुरी गद्य संग्रह-प्र. संपादक) - १९८०,
३.	खुँखड़ी-रूगड़ा (नागपुरी कहानी संग्रह) संपादक १९८५,
४.	फिन भेंट आउर दूसर नगीत - डॉ. रामदयाल मुण्डा रचित हिन्दी काव्य का नागपुरी अनुवाद - १९८६,
५.	जागी जवानी चमकी बिजुरी - लाल रण विजय नाथ शाहदेव रचित नागपुर गीतों का संकलन - संपादन - १९८६,
६.	अखरा निंदाए गेलक - नागपुरी एकांकी नाटक - १९९०,
७.	पीटर शांति नवरंगी - व्यक्तित्व एवं कृतित्व, शोध प्रबंध - १९९०,
८.	ऊँ विश्वविद्यालय नमः - विस्तृत समीक्षा (डॉ. विस्वेश्वर प्रसाद केशरी की पुस्तक) - २००१,
९.	झारखण्ड का अमृत पुत्र : मरड गोमके जयपाल सिंह (हिन्दी श्रुति नाटक) - २००१,

10. मरड गोमके जयपाल सिंह (नागपुरी श्रुति नाटक) - 2003,
11. झारखण्ड के लोकनृत्य - 2004
12. नागपुरी (पत्रिका)-सह संपादक - 1982,
13. पझरा (पत्रिका)-संपादक - 1985,
14. नागपुरी कला संगम स्मारिका-सह संपादक (1985-89),
15. पत्रिकाएँ (जिनमें रचनाएँ छपी हैं) - आदिवासी, डहर, शंखनाद, संगम, संवाद, कृतसंकल्प, तितकी, कचनार, जोहार, आस्था, बन संकल्प, नारी संवाद, समष्टि संदेश, सेवा संकल्प, श्रद्धा, जनहुल, बेड़ो कॉलेज स्मारिका, गोस्सनर कॉलेज पत्रिका, राँची कॉलेज पत्रिका, वैश्य दर्पण, वर्तमान संदर्भ आदि।
16. दैनिक पत्र (जिनमें रचनाएँ छपी हैं) - राँची एक्सप्रेस, प्रभात खबर, आज, न्यू मेसेज, झारखण्ड टाइम्स, झारखण्ड जागरण, गुमला एक्सप्रेस, छोटानागपुर संदेश आदि।
17. आकाशवाणी राँची केन्द्र से, नाटक, कहानी, वार्ता, हास्य व्यंग्य, आलेख (नागपुरी-हिन्दी में) प्रसारित,
18. अनेक हिन्दी-नागपुरी पुस्तकों की समीक्षा,
19. सम्प्रति नागपुरी भाषा साहित्य संस्कृति, इतिहास एवं झारखण्डी विषयों पर चिंतन-मनन, लेखन, शोध, निर्देशन।



